भारतीय संस्कृति का संवाहक
इंडोनेशिया

मेरी विदेश यात्राएँ : चार

भारतीय संस्कृति का संवाहक
इंडोनेशिया

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2015 प्रकाशक

प्रकाशक • **प्रभात प्रकाशन**
4/19 आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2020
मूल्य • चार सौ रुपए
मुद्रक • आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Bharatiya Sanskriti Ka Samvahak INDONESIA
by Shri Ramesh Pokhriyal 'Nishank' ₹ 400.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2
e-mail: prabhatbooks@gmail.com ISBN 978-93-5322-624-4

इंडोनेशिया के उन करोड़ों लोगों को,
जिन्होंने सदियों के बाद भी भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण
और जीवंत रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दो शब्द

बात वर्ष 2010 की है। मेरे मुख्यमंत्रित्वकाल में हरिद्वार में 'महाकुंभ' का आयोजन किया जा रहा था। कई देशों के लोग पतित-पावनी गंगा में स्नान हेतु योग, आस्था और अध्यात्म की राजधानी हरिद्वार में जमा हो रहे थे। मुझे मेरे सलाहकार डॉ. राजेश नैथानी द्वारा बताया गया कि इंडोनेशिया के राजदूत मिलने का समय माँग रहे हैं। मुलाकात का कोई एजेंडा नहीं था। पूछने पर पता चला कि वे 'महाकुंभ' के सफल आयोजन हेतु इंडोनेशिया राष्ट्र की ओर से मुझे शुभकामनाएँ देना चाहते हैं। विश्व की सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्यावाले देश की 'कुंभ' के प्रति इतनी आस्था होगी, यह मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। मैं उनसे मिला और मिलकर उनके भीतर एक गहरी आत्मीयता के भाव के दर्शन किए। उनकी विश्व के इस सबसे बड़े आयोजन के प्रति गहरी आस्था देखकर मैं हतप्रभ ही नहीं, बल्कि अत्यंत प्रभावित था।

मैंने उन्हें उत्तराखंड राज्य की ओर से गंगाजल भेंट किया और उन्होंने अत्यंत सम्मान से अपने देश के लिए उसे ग्रहण किया। सच कहूँ, इंडोनेशिया की विशिष्ट संस्कृति और उसके भारत के निकट संबंधों का साक्षात्कार मुझे उस भेंट के दौरान ही हो गया था। उसके पश्चात् इस देश को और नजदीक से जानने की उत्सुकता जाग्रत् हुई। हजारों साल बाद भी भारतीय संस्कृति का जीवंत रूप देखना है तो इंडोनेशिया जाना चाहिए। मैंने अपनी कुछ पुस्तकें और गंगाजल भेंट कर जब इंडोनेशिया के राजदूत से विदा ली, तो लगा, किसी आत्मीय से विदा ले रहा हूँ।

नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर और विशिष्ट संस्कृतिवाले इंडोनेशिया ने मुझे हमेशा से अपनी ओर आकर्षित किया है। मैं इस देश के विषय में अधिक-से-अधिक जानने का इच्छुक रहा हूँ। इंडोनेशिया को देखने-समझने की इच्छा लंबे समय से मन में थी। इसका मुख्य कारण यह था कि इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति के गहरे प्रभाव को मैं स्वयं देखना चाहता था।

मन में यह जिज्ञासा भी थी कि किस प्रकार एक मुस्लिम बहुल राष्ट्र ने हिंदू धर्म और संस्कृति से अपने को जोड़े रखने में सफलता पाई है ? न केवल इंडोनेशिया ने अपने को इस अमर सनातन संस्कृति से जोड़ा है, बल्कि इसे समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, विशेषकर एक ऐसे समय में, जब विश्व में कट्टरवाद, आतंकवाद, असमानता, अविश्वास, भय एवं असुरक्षा का वातावरण बना हुआ है, ऐसे समय में हम मात्र स्वार्थसिद्धि में लगकर मानवता के मूल्यों को भूल रहे हैं। धर्म, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र और जाति की परिधि में अपने को समेटकर हम लालच में पड़कर नैतिकता को छोड़ पतन की तरफ जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सारी मानव जाति भौतिकवाद की अंधी दौड़ में मानवीय मूल्यों को भूल बैठी है। ऐसे में इंडोनेशिया ने न केवल भारतीय संस्कृति को सहेजकर रखा है, बल्कि उसे संरक्षित, संवर्धित करने में सफलता पाई है।

मेरा यह परम सौभाग्य है कि कुछ माह पूर्व जापान और थाईलैंड में विश्वविद्यालयों के आमंत्रण पर मैं वहाँ गया था। दोनों देशों ने मुझे भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया था। मैं जापान और थाईलैंड की यात्रा के साथ इंडोनेशिया की यात्रा करना चाहता था, शायद इसलिए, क्योंकि इन तीनों राष्ट्रों में भारतीय संस्कृति का खासा प्रभाव देखने को मिलता है, या यूँ कहना चाहिए कि इन देशों में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का जीवंत रूप देखने को मिलता है। हमारी संस्कृति, हमारे आदर्श, हमारे मानवीय मूल्य, हमारी सभ्यता, आज की वैश्विक चुनौतियों से मजबूती से निपटने का रास्ता प्रशस्त करती है।

भारतीय संस्कृति से करीब से जुड़े ये तीनों देश एशिया प्रशांत क्षेत्र

में विकास और शांति के महत्त्वपूर्ण स्तंभ माने जाते हैं। शायद यही कारण था कि मेरी इंडोनेशिया जाने की इच्छा लंबे समय से थी। मुझ जैसे लोगों की कठिनाई यह है कि सार्वजनिक जीवन में रहने के कारण अपना कार्यक्रम मुश्किल से अपने हाथ में होता है। पार्टी के शीर्ष पदाधिकारियों की देहरादून में बैठक प्रस्तावित रहने के कारण मुझे थाईलैंड का प्रवास दो दिन में ही समेटकर वापस आना पड़ा। इस कारण सिंगापुर, इंडोनेशिया का दौरा टल गया।

यह शायद संयोग ही था कि इसी बीच भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के अध्यक्ष प्रो. लोकेश चंद्राजी से उनके दिल्ली स्थित आवास पर मुलाकात हुई। प्रो. लोकेश चंद्राजी की विद्वत्ता, प्रखरता और गहन अध्ययन, अध्यात्म, इतिहास, सांस्कृतिक विषयों पर उनकी असाधारण पकड़ का मैं हमेशा से कायल रहा हूँ। मेरा लंबे समय से उनसे मिलने का मन था। मैंने महसूस किया कि उनसे मिलकर, बात करके एक नई ऊर्जा का संचार होता है।

चर्चा के दौरान उन्होंने सुझाव दिया कि क्यों न मैं योगयकार्ता में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभाग करूँ। तय हुआ कि भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए मैं योगयकार्ता में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोरजी की इंडोनेशिया यात्रा की 90वीं वर्षगाँठ पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिभाग करूँगा।

इस प्रस्तावित सेमिनार में मुझे उद्घाटन सत्र का भाषण देना था, जिसका विषय था, 'वैश्विक चुनौतियों से मिलकर निपटेंगे भारत-इंडोनेशिया।' उक्त विषय पर मुझसे व्याख्यान देने और तदुपरांत प्रश्नोत्तर सत्र के लिए आग्रह किया गया। इस कार्यक्रम में मेरे साथ शांतिनिकेतन, (विश्वभारती विश्वविद्यालय) और जर्मनी के शिक्षाविद् शामिल थे। गुरुदेव रवींद्रनाथजी ने वर्ष 1927 में जावा, इंडोनेशिया की यात्रा की थी। इस ऐतिहासिक यात्रा में अपने परम मित्र श्री देवनतारा के साथ गुरुदेव ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा की। मुझे बताया गया था कि प्रथम राष्ट्रपति श्री सुकर्णो, श्री देवनतारा और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की अच्छी घनिष्ठता थी। गुरुदेव और श्री देवनतारा के बीच दो समानताएँ देखने को मिलती हैं। दोनों

ही प्रतिष्ठित परिवारों से थे और दोनों यूरोपीय रंग-ढंग से न केवल भलीभाँति परिचित थे, बल्कि उसकी अच्छी समझ रखते थे। दोनों प्रखरता, विद्वत्ता, विनम्रता और प्रतिष्ठा से परिपूर्ण थे और आराम से वैभव तथा विलासितापूर्ण जीवन जी सकते थे, परंतु फिर भी दोनों ने अपनी पूरी ताकत पिछड़े, उपेक्षित, गरीब लोगों के कल्याण के लिए झोंक दी। इसके लिए उन्होंने शैक्षणिक उन्नयन का मार्ग चुना। कहीं-न-कहीं दोनों के मन में अंतिम छोर के व्यक्ति को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने की ललक व छटपटाहट छिपी थी। मुझे इस यात्रा से इन दोनों महापुरुषों के जीवन की अनेक घटनाओं के विषय में पता चला, जो हम सबके लिए प्रेरणादायक हैं। किस प्रकार बुद्धिजीवी अपने आसपास के परिवेश में सार्थक परिवर्तन ला सकते हैं, यह हमें गुरुदेव और श्री देवनतारा के ऋजीवन से सीखने को मिलता है।

भारत और इंडोनेशिया कई मामलों में विलक्षण हैं। एक ओर भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। 125 करोड़ से अधिक जनसंख्यावाला भारतीय गणतंत्र अनेकता में एकता को चरितार्थ करता, विभिन्न धर्म, मजहब, भाषाएँ, विविध परंपराएँ लिये विश्व की प्राचीनतम सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, तो दूसरी तरफ विश्व में सर्वाधिक मुस्लिम आबादीवाला इंडोनेशिया भी विविध धर्म, भाषाओं, परंपराओं और रीति-रिवाजों का देश है, जहाँ हम दोनों देश विश्व की लगभग 25 प्रतिशत मानवता का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं हमारी संस्कृति साझी है। यह कहना उचित रहेगा कि हमारी जीवन-शैली समान आधारशिला पर आधारित है। सर्वोच्च मानवीय मूल्यों की पैरवी करती हमारी साझी विरासत पूरे विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। भारत और इंडोनेशिया का प्रत्येक नागरिक इससे गौरवान्वित होता होगा, ऐसा मेरा मानना है।

जैव-विविधता के मामले में इंडोनेशिया बेजोड़ है। अद्भुत जैव-विविधता से भरपूर हजारों सुंदर द्वीपों, मनमोहक और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण इंडोनेशिया सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध होने के साथ-साथ विश्व के श्रेष्ठ पर्यटक केंद्रों में शुमार है। चाहे एक करोड़ से अधिक जनसंख्यावाला जकार्ता हो, जहाँ पर विविध धर्मों, आस्था, संस्कृतियों, जीवन-शैलियों का

दर्शन होता है या फिर बाली के विश्व के सुंदरतम समुद्र तट हों अथवा वोनबर्न एवं प्रम्बानन के सुंदर मंदिर हों अथवा सुमात्रा की अद्‍भुत समुद्रीय जैव-विविधता हो या फिर योगयकार्ता में रामलीला का विश्व प्रसिद्ध मंचन हो, आपके पास इंडोनेशिया जाने के सैकड़ों कारण हैं। इंडोनेशिया के विषय में कहा जाता है कि अगर इंडोनेशिया घूमने में पूरा जीवन भी लगा दिया जाए तो भी आप संपूर्ण इंडोनेशिया शायद ही देख पाएँ। यह देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा कि इंडोनेशिया अपने आप में हजारों मंदिरों का देश है। यहाँ का हर मंदिर अपनी कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है तथा हर मंदिर का अपना स्वयं का इतिहास है।

योगयकार्ता के प्रवास के दौरान कई लोगों ने मुझे सुझाव दिया कि मुझे इंडोनेशिया पर लिखना चाहिए, विशेषकर इंडोनेशिया दूतावास में संस्कृति, शिक्षा कॉन्सुल डॉ. इवान प्रोनोटो, विश्वभारती विश्वविद्यालय शांतिनिकेतन की निदेशक डॉ. सवजुली सेन और सर्जनवीयता विश्वविद्यालय की वाइस रेक्टर डॉ. यूलिया से इस विषय पर गहन चर्चा हुई। भारत से हजारों मील दूर 16 सितंबर, 2017 की रात्रि को जब हमने 9वीं शताब्दी के प्रम्बानन मंदिर के प्रांगण में बैठकर भगवान् श्रीराम के जीवन का सजीव चित्रण देखा, तो मैंने निश्चय किया कि इस श्रेष्ठ देश के महान् लोगों की अजर-अमर संस्कृति को लोगों के सम्मुख लाने का प्रयास करूँगा।

यह संस्कृति युगों से हमें जोड़े हुए है और आगे भी जोड़े रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इसलिए यह आवश्यक है कि 'पीपुल्स टू पीपुल्स कॉण्टेक्ट' के लिए हम एक-दूसरे को समझें। इसी प्रयास के रूप में आज यह पुस्तक आपके हाथों में है। मैं इंडोनेशिया की इस ऐतिहासिक यात्रा में, जहाँ विदेश मंत्रालय, भारत सरकार की भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् का आभारी हूँ, वहीं इंडोनेशिया के दूतावास का हार्दिक आभारी हूँ। दूतावास के सांस्कृतिक शैक्षिक प्रभारी डॉ. इवान प्रानोतो ने मेरे घर आकर जिस अंदाज में, मुझे आमंत्रित किया तो मुझे उनकी संस्कृति का प्रथम साक्षात्कार वहीं पर हो गया था। सर्जनवीयता विश्वविद्यालय का पूरा आयोजन अद्वितीय था।

संपूर्ण आयोजन में प्रेम, नम्रता और आतिथ्य भाव का अद्भुत संगम देखने को मिला और इस बात की चर्चा मैंने अपने व्याख्यान के दौरान भी की। अपनी कृतज्ञता को मैं आयोजकों तक कितना पहुँचा पाया, यह वही जानते होंगे, परंतु इस पुस्तक के माध्यम से मैं समूची टीम को पुनः साधुवाद देता हूँ।

इस सेमिनार का आयोजन इंडोनेशिया सरकार का संस्कृति शिक्षा विभाग, इंडोनेशिया दूतावास, भारत सरकार का विदेश मंत्रालय और तमान सिस्वा सर्जनवीयता विश्वविद्यालय मिलकर कर रहे थे। मैं सभी आयोजकों को बेहतर परस्पर समन्वय के लिए हार्दिक बधाई देना चाहूँगा। मैंने महसूस किया, गुरुदेव की 90वीं वर्षगाँठ मनाने का और इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य हमारे दोनों राष्ट्रों को परस्पर निकट लाना है। आयोजक अपने इस उद्देश्य में सफल रहे।

इस पुस्तक में जहाँ मैंने इंडोनेशिया-भारत की प्रगाढ़ मित्रता, सामरिक साझेदारी का उल्लेख किया है, वहीं इंडोनेशिया के भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक पक्ष को सुधी पाठकों के समक्ष रखा है। मैंने इंडोनेशिया की संस्कृति, शिक्षा, परंपराओं, इतिहास और इस देश की विकास की कहानी को पाठकों से साझा किया है। मैंने यह बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार इंडोनेशिया ने सदियों पुरानी अपनी संस्कृति को जीवित रखा है। मुझे लगता है कि जीवित ही नहीं, बल्कि उस संस्कृति को पुष्पित-पल्लवित करने में इंडोनेशिया के लोगों ने सफलता पाई है। आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में इंडोनेशिया की सफलता का मूलमंत्र विविधता में एकतावाली संस्कृति में समाहित है। मैंने इस पुस्तक के माध्यम से इस देश के लोगों की विनम्रता, उनका पुरुषार्थ, समरसता, परस्पर प्रेम, एकता में अनेकता और आपसी सौहार्द जैसे मानवीय गुणों को पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास किया है, साथ ही बदलते विश्व परिदृश्य में भारत-इंडोनेशिया की सामरिक मित्रता, बढ़ते व्यापारिक रिश्तों के साथ-साथ एशिया में इंडोनेशिया-भारत की बढ़ती भूमिका और दक्षिण-पूर्व प्रशांत क्षेत्र में विश्व शांति की स्थापना में दोनों देशों की साझी नीतियों और उनके योगदान की चर्चा की है।

मेरा मानना है कि भारत और इंडोनेशिया के बीच सरकारी सहयोग बढ़ाने के साथ-साथ लोगों में आपसी संपर्क बढ़ाने की आवश्यकता है। हमें समझने की आवश्यकता है कि हम दोनों देश विश्व के बड़े लोकतांत्रिक देश होने के साथ विश्व के दो बड़े धर्मों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस्लाम और हिंदू धर्म के सबसे बड़े देश होने के साथ-साथ हम साझे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समर्पित हैं। यह हमारी मजबूती है कि संपूर्ण वैश्विक जनसंख्या का एक-चौथाई से ज्यादा भाग इन दोनों राष्ट्रों में निवास करता है। अगर समूचे विश्व में भारतीय संस्कृति के प्रभाव की बात करें तो त्रिनिदाद, टोबेगो, फीजी, सेशल्स, मॉरीशस, भारत, म्याँमार, भूटान, नेपाल, थाईलैंड, बँगलादेश, गीनिया, वेस्टइंडीज, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, कंबोडिया आदि राष्ट्र भारतीय संस्कृति से कहीं-न-कहीं प्रेरणा ग्रहण करते हैं तथा उसके मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं।

मैंने यह भी देखा है कि इंडोनेशिया के संबंध में भारत के लोगों को संपूर्ण जानकारी नहीं हैं। लोग इंडोनेशिया की समृद्ध संस्कृति से पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं। यह इसलिए कि एक-दूसरे देशों के लोगों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान नहीं के बराबर है। इस संबंध में साहित्य का भी अभाव है, विशेषकर भारतीय भाषाओं और हिंदी में साहित्य न के बराबर है। हमारे लोगों ने थोड़ा-बहुत इंडोनेशिया के बाली द्वीप के विषय में सुना है। वह जानकारी भी वहाँ के पर्यटन तक सीमित है। हमारा संबंध इससे कहीं अधिक निकट और प्रगाढ़ है। मेरा मानना है कि हम लोगों को प्रत्येक भारतीय और इंडोनेशियावासी को आपस में अपनी साझा संस्कृति की कहानी बतानी चाहिए। इसी प्रयास से लोगों के (People to people contact) बीच संवाद स्थापित होगा। भारतीय लोगों के लिए इंडोनेशिया केवल बाली और पर्यटन तक ही सीमित न रहे।

इस पुस्तक से जहाँ पाठकों को इंडोनेशिया के संबंध में संपूर्ण जानकारी हिंदी में उपलब्ध हो सकेगी, मेरा यह विश्वास है कि मेरी इस कृति से दोनों देशों के लोगों को एक-दूसरे के निकट आने में मदद मिलेगी। मेरी कोशिश

रहेगी कि इंडोनेशिया की भाषा तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी इसका अनुवाद हो।

मेरे इस प्रयास से भारत–इंडोनेशिया के लोगों को और नजदीक लाने में अगर तनिक भी मदद मिलेगी, तो मैं अपना यह प्रयास सार्थक समझूँगा।

—रमेश पोखरियाल 'निशंक'

अनुक्रम

दो शब्द 7

1. इंडोनेशिया की अविस्मरणीय यात्रा 17

इंडोनेशिया :
भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक परिचय

2. इंडोनेशिया : एक परिचय—
भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन 43
3. इंडोनेशिया का इतिहास 64
4. इंडोनेशिया में शिक्षा 74
4. इंडोनेशिया के धर्म 84
5. गुरुदेव की इंडोनेशिया यात्रा :
सर्जनवीयता और विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना 97
7. इंडोनेशिया : विश्व पर्यटन के फलक पर 120
8. भारत और इंडोनेशिया : सामरिक साझेदारी में बदलती मित्रता 139
9. इंडोनेशिया : धर्म इस्लाम, संस्कृति रामायण 169
10. इंडोनेशिया में व्याख्यान 191
11. इंडोनेशिया में व्याख्यान 198

इंडोनेशिया की अविस्मरणीय यात्रा

सिंगापुर से उड़कर दो घंटे बाद सिंगापुर एयरलाइंस के जहाज ने जैसे ही इंडोनेशिया के योगयकार्ता की धरती को छुआ, जहाज में बैठे युवाओं ने तालियाँ बजाकर अपनी प्रसन्नता का इजहार किया। संभवत: ये युवा अपनी छुट्टियाँ मनाने संस्कृति और परंपरा के शहर यूरोप से आए थे। उनके उत्साह को देखकर यह प्रसन्नता हुई कि हमारे युवाओं में संस्कृति, इतिहास, पुरानी सभ्यता के प्रति इतना प्रेम है कि वे हजारों मीलों से योगयकार्ता पहुँचे। यह सब इसलिए ज्यादा अच्छा लगता है, क्योंकि आज की सामाजिक व्यवस्था में पूरी दुनिया भौतिकवाद के पीछे भाग रही है। ऐसे में इन बच्चों की रुचि पुरातन मानवीय सभ्यता और परंपराओं को जानने में है।

एयरपोर्ट पर इंडोनेशिया की एयरलाइंस के काफी जहाज खड़े थे, जिन पर 'गरुड़' लिखा था। विदेशों में जहाँ भी आपको अपने देश से जुड़ी, अपनी

इंडोनेशिया की सरकारी हवाई सेवा 'गरुड़' इंडोनेशिया

संस्कृति से जुड़ा कुछ दिखता है तो आप अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं और दिल तथा मन–मस्तिष्क में प्रसन्नता का संचार होता है। हवाई अड्डे पर विश्वविद्यालय की ओर से इस सम्मेलन के आगंतुकों के लिए एक विशेष स्वागत काउंटर की व्यवस्था की गई थी। काउंटर पर हमारा विधिवत् स्वागत किया गया और हमारे सामान को बेल्ट से लाकर गाड़ियों में पहुँचाया गया। हवाई अड्डे में हमारे प्रायोजकों द्वारा पूछा गया कि क्या हम आगे जकार्ता एवं बाली जाएँगे?

अकसर इंडोनेशिया आनेवाले सभी लोग बाली और जकार्ता जाते ही हैं, पर हम समयाभाव के कारण नहीं जा सके, हालाँकि मेरी बाली, जकार्ता जाने की प्रबल इच्छा थी। जैसे ही हवाई अड्डे से बाहर आए, गेट पर विश्वविद्यालय की प्रो. वाइस चांसलर डॉ. यूलिया स्वागत के लिए खड़ी थीं। उनके साथ विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी तथा सम्मेलन आयोजक दल के अन्य सदस्य मौजूद थे। हमारे साथ प्रतिनिधिमंडल में शांतिनिकेतन

हवाई अड्डे पर परंपरागत स्वागत

वॉटीक स्टोर शॉपिंग सेंटर के भीतर

विश्वविद्यालय की प्रोफेसर इस कार्यक्रम हेतु आई थी। सभी लोगों का परंपरागत स्वागत किया गया। एयरपोर्ट के गेट से ही यह निर्णय लिया गया कि रास्ते में पड़नेवाले शॉपिंग सेंटर में जाया जाए। हालाँकि मुझे कुछ खरीदने में दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी सबके साथ हम शॉपिंग सेंटर के लिए रवाना हुए। वहाँ पर सबकी दिलचस्पी वॉटीक कमीजों में थी। मैंने वॉटीक के विषय में सुना था, ये इतनी महत्त्वपूर्ण हैं, इसका मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था। मुझे बताया गया, 2 अक्तूबर को वॉटीक दिवस मनाया जाता है। परंपरागत वॉटीक अपनी सजावट, चमक और अपनी समृद्ध विरासत के लिए विश्वप्रसिद्ध है। चाहे आप इंडोनेशियन हों, पर्यटक हों, या फिर प्रवासी हों, आप वॉटीक के माध्यम से अपने को इंडोनेशियाई रंग में ढाल सकते हैं। वॉटीक शर्ट इतनी लोकप्रिय थी कि 2 अक्तूबर वर्ष 2009 में इंडोनेशिया की वॉटीक कमीजों को मानवता की विरासत सम्मान से नवाजा गया। वॉटीक शर्ट आधी बाँह और पूरी बाँह की कमीजें हैं, जो सर्दी-गरमी दोनों मौसमों में पहनी जा सकती हैं। सरकार भी इन कपड़ों को पहनने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करती है। ये उत्पाद 100 प्रतिशत कॉटन से बने होते हैं और इसमें एक ही पॉकेट होती है।

सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि सैकड़ों डिजाइनवाली ये कमीजें

अत्यंत सस्ते दामों में उपलब्ध थीं। सभी ने कमीजें खरीदीं और रास्ते में इंडोनेशिया के भोजन के लिए सब लोग एशियन भोजन के रेस्तराँ में दोपहर भोज के लिए रुके। इंडोनेशिया के खाने में मांस और समुद्री उत्पाद की भरमार होती है। सबसे रंगीन, मसालेदार और विविध प्रकार के भोज्य पदार्थों के लिए मशहूर इंडोनेशिया के भोजन में चाव (रुचि) का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कोकोनट मिल्क, तेल का ज्यादा-से-ज्यादा उपयोग एवं आलू-टमाटर, मछली सेलरी, लीक, शेलेट्स, हरी सब्जियाँ, उबले आलू, सोया बीफ एवं अंडे का यहाँ के भोजन में बहुतायत में प्रयोग होता है।

हमें शाकाहारी भोजन तो मिल गया, परंतु उसमें विकल्प गिने-चुने थे। हमेशा की तरह ब्रेड, सलाद, राइस और ग्रीन करी के साथ भोजन पूरा हुआ। पापड़, मसाले और अचार जहाँ खाने का जायका बढ़ाते हैं, वहीं खाने की बहुत सी चीजें हमारे भारतीय खाने से मिलती-जुलती थीं। भोजन के उपरांत चाय पीकर हम होटल की तरफ चल पड़े। मेरे साथ गाड़ी में मेरे सलाहकार के अतिरिक्त प्रोफेसर यूलिया भी थीं। एक घंटे बाद लगभग तीन बजे हम

सर्जनवीयता विश्वविद्यालय में व्याख्यान

होटल पहुँचे, जहाँ हमारा दोबारा परंपरागत रूप से स्वागत हुआ।

रास्ते में प्रोफेसर यूलिया विश्वविद्यालय के बारे में बता रही थीं। यह जानकर अच्छा लग रहा था कि वे एक उत्साही युवा छात्रा की तरह अपने विश्वविद्यालय की सारी खूबियाँ गिना रही थीं।

रास्ते में हम लोगों ने उनके विश्वविद्यालय के भवनों को भी देखा, जो कि शांत व प्रेरक विश्वविद्यालय परिसर का भान स्वत: करा रहे थे। प्रोफेसर यूलिया ने कहा कि हम लोगों को बाली अवश्य जाना चाहिए था, क्योंकि वहाँ की सुंदरता, संस्कृति और वहाँ का वैभव अद्बितीय है। उन्होंने बताया कि देनपसार हम जहाज से जा सकते हैं। देनपसार बाली की राजधानी है और सबसे बड़ा शहर होने के कारण यहाँ काफी रौनक रहती है। विभिन्न संस्कृतियों के समागमवाला यह शहर बाली का मुख्य द्वार और मंदिर, संग्रहालयों, महलों और उद्यानों का शहर है। देनपसार शहर ग्राम्य और शहरी जीवन की झलक प्रस्तुत करता है। उन्होंने वहाँ के दर्शनीय स्थलों की चर्चा भी की। बादुग राजा बाली राष्ट्रीय संग्रहालय, पुरा जगतनाथ पुरा, सेंट जोसफ चर्च और एलन पापुतान इस शहर के मुख्य दर्शनीय स्थल हैं। शहर में एक ओर आप जहाँ सारे सरकारी महकमों को देख सकते हैं तो दूसरी ओर मॉल और आधुनिक स्टोर हैं।

परंपरागत मंदिरों के बीच बाली के दक्षिण में स्थित देनपसार पुरा बलानजोंग मंदिरों की छटा देखते ही बनती है। शहर के संग्रहालयों में आप बाली की जीवन शैली के जीवंत दर्शन कर सकते हैं। देनपसार की जनसंख्या दस लाख के आसपास है। सत्तर प्रतिशत हिंदुओं के साथ यहाँ चौबीस प्रतिशत मुस्लिम, सात प्रतिशत ईसाई और दो प्रतिशत बौद्ध हैं।

सारेगन में सनूर बीच विश्वप्रसिद्ध है। कूटा में आपको परंपरागत खाने से लेकर अलग-अलग कपड़े, हस्तशिल्प का सामान और आधुनिक मॉल इत्यादि मिल जाएँगे। यहाँ के बाली हस्तशिल्प और वॉटीक कपड़े के लिए यह स्थान प्रसिद्ध है।

इसी बीच मुझे उत्तराखंड के प्रवासी समूह का फोन आया और वे इस

बात की जिद करने लगे कि आपको जकार्ता हर हाल में आना है। उनके द्वारा जकार्ता में मेरे सम्मान में रात्रि भोज का आयोजन किया गया था। बातों-बातों में जकार्ता शहर की काफी तारीफ सुनने को मिली।

मुझे बताया गया कि इंडोनेशिया का सबसे बड़ा शहर जकार्ता, एक आधुनिक शहर होने के साथ-साथ पारंपरिक शहर भी है। यहाँ पर आपको बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं के बीच मस्जिदें, डच उपनिवेशवादी भवन और परंपरागत दुकानें दिखाई देंगी। जावा द्वीप के उत्तर-पश्चिम तट पर स्थित इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता शहर का पूरा क्षेत्र 'विशेष राजधानी जकार्ता क्षेत्र' कहलाता है। इंडोनेशिया की संस्कृति और कला व आर्थिकी का केंद्र यह शहर उच्च जीवन स्तर और बेहतर सुविधाओं के लिए जाना जाता है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि जकार्ता आर्थिक औद्योगिक क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यहाँ क्वालालांपुर, बीजिंग और बैंकॉक की अपेक्षा ज्यादा विकास दर देखी गई है।

जकार्ता के विशेष राजधानी क्षेत्र में पुराना कोटा टुउवा नाम से परंपरागत ऐतिहासिक शहर है और यहाँ पर चीनी आबादी अधिक देखने को मिलती है। यहाँ पर जावा, माले, चीनी, अरबी, हिंदी और यूरोपियन संस्कृतियों का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। कुल मिलाकर जकार्ता विभिन्न संस्कृतियों का संगम है, जिसे अवश्य देखा जाना चाहिए। इसी बीच अंग्रेजी कला विभाग में मेरा व्याख्यान भी था, हमने व्याख्यान को एक घंटे तक सीमित कर प्रश्नोत्तर सत्र के लिए समय रखा।

मैंने अपने व्याख्यान में हिमालय, गंगा, पर्यावरण, भारतीय संस्कृति और सामाजिक जीवन के कई आयामों को विस्तार से विद्यार्थियों के सम्मुख रखा। मैंने सनातन धर्म की उत्पत्ति और रामायण-महाभारत का संदर्भ देते हुए उसे इंडोनेशिया और भारत के संबंधों से जोड़ा। मुझसे विश्व में इस्लामिक कट्टरता, रोहिंग्या रिफ्यूजी, धार्मिक उन्माद व युवाओं की भूमिका पर कई सवाल पूछे गए और मैंने सबको संतुष्ट करने का प्रयास किया।

अगली सुबह विश्वविद्यालय प्रबंधन की ओर से हम सभी जनों का

स्वागत किया गया। अपने संक्षिप्त धन्यवाद में मैंने कहा कि आज हम उस मोड़ पर खड़े हैं, जहाँ से मिलकर हम वैश्विक पटल पर निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि मेरी भावनाओं से सब विद्वत्जन न केवल सहमत थे, बल्कि उनके द्वारा यह आवश्यकता भी महसूस की गई कि विभिन्न स्तरों पर कदम उठाए जाने चाहिए।

उसके पश्चात् पूरा विश्वविद्यालय घुमाकर प्रो. यूलिया मुझे उस स्थान पर ले गई, जहाँ श्री देवनतारा का आवास था। हम सभी लोगों ने देवनतारा की प्रतिमा के नीचे खड़े होकर तसवीरें खिंचवाईं। वर्षों से यह परंपरा मानी जाती है कि सभी लोग इस स्थान पर तसवीरें खिंचाते हैं।

इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय में मुझे उस स्थान पर ले जाया गया, जहाँ पर गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और श्री देवनतारा की तसवीरें थीं। इन दोनों महानुभावों का अपने-अपने देश की आजादी की लड़ाई और सामाजिक चेतना में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। शाम को हम सबसे मिलकर होटल आ गए।

श्री देवनतारा की मूर्ति के साथ चित्र

कार्यक्रम में अपने अभिभाषण में मैंने इस बात पर जोर दिया कि वैश्विक चुनौतियों से निपटने हेतु हमें अपने साझा सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा बताए गए

मार्ग पर चलना होगा। मैंने इस बात पर जोर दिया कि आज विश्व अनैतिकता, अशिक्षा, गरीबी, भुखमरी, सामाजिक–आर्थिक असमानता, आपसी विद्वेष, नफरत तथा भौतिकवादी सुख की तरफ भाग रहा है और संसाधनों का दुरुपयोग कर रहा है। ऐसी स्थिति में भारतीय सांस्कृतिक मूल्य हमें जीवन की सच्ची राह दिखाते हैं।

मैंने अपने भाषण में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर व श्री देवनतारा के भारतीय और इंडोनेशिया की स्वतंत्रता यात्रा का स्मरण करते हुए दोनों महानुभावों के शिक्षा क्षेत्र में योगदान का स्मरण किया। मुझे बेहद प्रसन्नता थी कि इंडोनेशिया

महानिदेशक, संस्कृति के साथ प्रो. एंडी के कार्यलय में

सरकार एवं भारत सरकार द्वारा गुरुदेव की यात्रा की 90वीं वर्षगाँठ पर इतने शानदार कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मैंने यह भी सुझाव दिया कि हमारे उत्तराखंड के रामगढ़ में भी एक संयुक्त रूप से वृहद् सेमिनार का आयोजन हो, जिसमें सर्जनवीयता विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, भारत सरकार तथा इंडोनेशिया की सरकार मिलकर सार्थक कार्य करें।

विश्वविद्यालय के अध्यक्ष एंडी स्वासों ने अपने प्रबोधन में गुरुदेव

रवींद्रनाथ टैगोर तथा देवनतारा की मित्रता के विषय में जानकारी दी और उनके भीतर की राष्ट्रभक्ति को उजागर किया। उन्होंने कहा कि ये दोनों लोग प्रतिष्ठित परिवारों से थे। इनके पास धन, वैभव, शोहरत, नाम व सबकुछ था। ये अपना जीवन सुख और वैभव से बिता सकते थे, फिर भी उनके भीतर राष्ट्र की स्वाधीनता, पिछड़े, गरीब, अशिक्षित देशवासियों के कल्याण की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। राष्ट्र और समाज के प्रति छटपटाहट इन महापुरुषों के नाम को इतिहास के पन्नों पर अंकित कर गई।

प्रो. एंडी के भाषण के ठीक बाद संस्कृति और शिक्षा विभाग के महानिदेशक श्री फरीद कुसुमसूर्या ने अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से जहाँ हम गुरुदेव रवींद्रनाथजी और देवनतारा के योगदान के बारे में जान पाएँगे, वहीं इन आयोजनों से भारत और इंडोनेशिया को नजदीक लाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने बताया कि इस प्रकार सरकार सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु प्रयास कर रही है। इस प्रसंग में उन्होंने अपने मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पुस्तकों का उल्लेख किया। श्री फरीद ने भारत से आए शिष्टमंडल का स्वागत करते हुए इस बात पर बल दिया कि भविष्य में ऐसे सेमिनारों का अधिक-से-अधिक आयोजन किया जाना चाहिए। उन्होंने यह आश्वासन भी दिया कि उनकी सरकार इस तरह के द्विपक्षीय कार्यक्रमों के लिए अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी।

इससे पूर्व महानिदेशक, संस्कृति ने सरकार की तरफ से सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। विश्वविद्यालय परिवार की ओर से वाइस चांसलर ने सभी का स्वागत करते हुए इस सेमिनार को ऐतिहासिक बताया। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में मंत्रीजी को आना था, परंतु अंतिम क्षणों में अपरिहार्य कारणों से उनका कार्यक्रम परिवर्तित हो गया।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और श्री देवनतारा की मित्रता की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इन दोनों की दूरदृष्टि का परिणाम है कि आज सर्जनवीयता और शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय इंडोनेशिया और भारत में अपनी उत्कृष्ट

शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए जाने जाते हैं।

मैंने यह भी बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार दुनिया के एक-चौथाई लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भारतीय दर्शन, संस्कृति, धर्म, मूल्यों से जुड़े हुए हैं। मैंने कहा कि अगर देखा जाए तो भारत, नेपाल, बर्मा, थाईलैंड, भूटान, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, जापान, मॉरीशस, सेशेल्स, मालदीव, दक्षिण अफ्रीका, फीजी, त्रिनिदाद, टोबेगो, लाओस तथा कंबोडिया आदि

देश सांस्कृतिक मूल्यों के सूत्र में बँधे हुए हैं। यूरोप और अमेरिका के कई देश हमारी सांस्कृतिक धरोहर से, योग एवं अध्यात्म से प्रेरित हैं।

उत्तराखंड हिमालय के रामगढ़ में, जहाँ गुरुदेव ने 'गीतांजलि' की रचना की थी, वहाँ पर भी इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए। शांतिनिकेतन और सर्जनवीयता के रूप में दो श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान खोलने के लिए मैंने गुरुदेव और श्री देवनतारा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मैंने इस बात पर बल दिया कि आज के वैश्विक परिवेश में भारत और इंडोनेशिया को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। जहाँ इंडोनेशिया मुस्लिमों का सबसे बड़ा देश है, वहीं भारत में विश्व के सबसे ज्यादा हिंदू रहते हैं और दूसरे स्थान पर मुसलमान रहते हैं, इसलिए हमारी वैश्विक शांति स्थापित करने में बड़ी भूमिका है।

गोष्ठी में प्रतिभाग करते हुए

इस अवसर पर मुझे विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान भी प्रदान किया गया। यह सम्मान मुझे मेरे द्वारा पर्यावरण और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु दिया गया। मैं इस पुस्तक के माध्यम से पूरी टीम को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस धरती, पर्यावरण, हिमालय और माँ गंगा के प्रति मेरी छटपटाहट को महसूस किया।

विश्वविद्यालय में प्रस्तुति

इंडोनेशिया में बोरोबुदुर बहुत प्रसिद्ध जगह है। प्रात: 6:00 बजे हम विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ मंदिर पहुँचे। बोरोबुदुर विहार इंडोनेशिया के मध्य जावा प्रांत के मगेलांग नगर में आठवीं शताब्दी के मध्य बना महायान बौद्ध विहार है। आज भी यह दुनिया के सबसे बड़े बौद्ध विहार के रूप में प्रतिष्ठित है। छह वर्गाकार चबूतरों पर बना हुआ यह विहार ऊपर से वृत्ताकार है और विश्व के महानतम बौद्ध मंदिरों में से एक है।

बोरोबुदुर मंदिर

शैलेंद्र राजवंश द्वारा निर्मित यह बोरोबुदुर मंदिर बौद्ध जवाई स्थापत्य कला का न केवल जीता-जागता वैभवपूर्ण नमूना है, बल्कि हिंदू धर्म, जिसमें पूर्वजों की पूजा की जाती है एवं बौद्ध अवधारणा के मिश्रित रूप का प्रतीक है। बौद्ध दर्शन के तीन प्रतीकात्मक स्तरों की व्याख्या करता यह विहार उस समय में बौद्ध मंदिर, विहार और शिक्षा केंद्र का हिस्सा लगता है।

भारत के पूर्व उप-प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणीजी ने जब विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया था तो उस समय उन्होंने इंडोनेशिया पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव के विषय में बताया था। मुझे यह भी पता चला है कि बाली में घटोत्कच की मूर्ति स्थापित की गई है। मुझे यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि इंडोनेशिया में घटोत्कच इतना लोकप्रिय है। मुझे लगता है कि भारत में सब घटोत्कच को मात्र भीम और हिडिंबा के पुत्र के रूप में याद करते हैं, परंतु घटोत्कच की वीरता, शौर्य, पराक्रम, मातृ-पितृ भक्ति और कर्तव्यपरायणता को बहुत कम लोग जानते हैं, लेकिन इंडोनेशिया में घटोत्कच की पूजा की जाती है।

बोरोबुदुर मंदिर का आध्यात्मिक महत्त्व

स्मारक के तीन भाग प्रतीकात्मक रूप से तीन लोकों को निरूपित करते हैं। ये तीन लोक क्रमश: काम धातु (इच्छा की दुनिया), रूप धातु (रूपों की दुनिया) एवं अरूप ध्यान (निराकार ध्यान) हैं। ऐसा माना जाता है कि

बोरोबुदुर मंदिर

साधारण मनुष्य अपनी मोहमाया में रहता है। अपनी इच्छाओं के लिए समर्पित होता है। उसका हर कार्य भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए समर्पित रहता है। इसके पश्चात् द्वितीय स्तर पर वे लोग होते हैं, जो अपने अंदर की इच्छाओं पर विजय पा लेते हैं। ये लोग प्रथम स्तर छोड़कर द्वितीय स्तर पर चले जाते हैं। ये रूपों को देख तो सकते हैं, परंतु उनका अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण होता है।

अंत में मनुष्य पूर्ण ज्ञान या बुद्धत्व को प्राप्त होता है। इस स्तर को रूपरहित निर्वाण भी कह सकते हैं। इस स्तर पर मानव अपने मूल विशुद्ध स्तर को प्राप्त कर लेता है, जहाँ वह अपने को पूर्ण शून्य (अस्तित्वहीन) मानता है।

हमें बताया गया कि इस स्थान पर सामूहिक पूजा होती थी। यह भी विश्वास प्रकट किया जाता है कि यहाँ पर शिक्षा भी दी जाती थी। यह मंदिर सामूहिक पूजा, सामूहिक भ्रमण तथा सभी ज्ञान एवं अध्यात्म के जिज्ञासुओं के लिए मार्गदर्शन करता हुआ बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान को प्रतीकात्मक रूप में परिकल्पित करता है। बोरोबुदुर का मंदिर कामधातु के आधार पर निरूपित किया गया है। रूप धातु को पाँच वर्गाकार मंजिलों और अरूप को तीन

सांस्कृतिक समृद्धि की झलक

वृत्ताकार मंजिलों तथा विशाल शिखर स्तूप के रूप में निरूपित किया गया है। इन तीन स्तरों के स्थापत्य गुणों में लाक्षणिक अंतर है। उदाहरण के लिए, रूप धातु में मिलनेवाले वर्ग त्याग एवं अध्यात्म की सीढ़ियाँ तय करते हैं।

विश्व में अपनी किस्म का यह मंदिर विश्व के सबसे ऊँचे बौद्ध विहारों में आता है। छह बराबर चबूतरों पर बना यह विहार विश्व के बड़े विहारों में से एक है। इसके निर्माण के बाद न जाने कितने भूकंप आए होंगे। आँधी, तूफान, मौसम की मार झेलता यह बौद्ध विहार आज भी अपने पूरे वैभव के साथ समूचे विश्व को विस्मित कर रहा है। हमें बताया गया कि इस विहार में 2600 के करीब प्रस्तर शिलाएँ और 504 बौद्ध प्रतिमाएँ हैं। प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और गौरवशाली वैभव को अपने में समेटे यह विहार अपने केंद्र की 72 बौद्ध प्रतिमाओं से संरक्षित है।

इसके निर्माण का श्रेय शैलेंद्र राजवंश को जाता है। संपूर्ण विहार जावा की बौद्ध स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है। गाइड द्वारा बताया गया कि उस जमाने में पूर्वजों की पूजा और बौद्ध निर्वाण अवधारणा का बोलबाला था। इन मूर्तियों में मुझे कहीं-न-कहीं भारतीय गुप्त वंश के समय की स्थापत्य

कला का प्रभाव देखने को मिला।

विशालकालय स्तूप के रूप में निर्मित मंडलाकार आकृति किसी स्मारक के रूप में दिखाई देती है। वस्तुत: यह विहार शिक्षा का केंद्र भी रहा होगा एवं साधना, अध्यात्म तथा पूजा के लिए प्रयोग में लाया जाता रहा है। इस स्मारक के चारों ओर बौद्ध ब्रह्मांडिकी के तीन प्रतीकात्मक स्तर बने हुए हैं। 1460 शिलालेखों के माध्यम से दर्शनार्थियों का मागदर्शन होता रहता है।

बोरोबुदुर के मंदिर को 'चंडी बोरोबुदुर' भी कहा जाता है। 'चंडी' शब्द जहाँ भारत में माँ भगवती के लिए प्रयोग में लाया जाता है, वहीं इंडोनेशिया में 'चंडी' शब्द प्राचीन मंदिरों से जुड़ा हुआ है। जावा की भाषा में चंडी प्राचीन बनावट और निर्माण से जुड़ी रचनाओं के लिए प्रयुक्त होता है। गाइड से पूछने पर ज्ञात हुआ कि 'बोरोबुदुर' शब्द का सही अर्थ किसी को मालूम नहीं है, हालाँकि गाइड ने बताया कि कुछ पुरातत्त्ववेत्ता 'बुदुर' शब्द को भू-धरा शब्द से बना मानते हैं, इसका अर्थ स्थानीय भाषा में 'पहाड़' होता है। संस्कृत एवं हिंदी में भी भूधर को 'पहाड़' कहा जाता है। कुछ लोग इसे 'बियरा बेदुहूर' शब्द का अपभ्रंश उच्चारण मानते हैं, जिसका मतलब एक उच्च स्थान है। प्रतिष्ठित अंग्रेज इतिहासकार थॉमस रैफल ने वर्ष 1814 में इस बुद्ध विहार का नाम 'बोरोबुदुर' रखा था।

अपनी पुस्तक 'हिस्टरी ऑफ जावा' (जावा का इतिहास) में उन्होंने लिखा है कि वर्ष 1365 में मजापहित राजदरबारी एवं बौद्ध विद्वान् मधु प्रपंचा द्वारा लिखे गए ताड़पत्र के अनुसार, पवित्र बौद्ध पूजा स्थल नगरकरेतागमा को 'बुदुर' कहा जाता है। मुझे बताया गया कि बोरोबुदुर के संबंध में दो शिलालेख प्राप्त हुए हैं। इस कायुयवुगांन शिलालेख के माध्यम से पता चला है कि राजा समरतुंग की पत्नी प्रमोदवद्धिनी ने सांसारिक इच्छाओं पर विजय पा चुके लोगों के लिए धार्मिक भवन का उद्घाटन किया। त्रिवतेपुसन शिलालेख में लिखा गया है कि भूमि समभार नामक कमूलान का रखरखाव सुनिश्चित करने के लिए कररहित भूमि का प्रावधान किया गया था।

बोरोबुदुर, पावोन, मंदुत का रहस्य

बोरोबुदुर बौद्ध मंदिर, योगयकार्ता नगर से लगभग 40 किलोमीटर दूर और सुरकर्ता नगर से 86 किलोमीटर दूर स्थित है। यह दो जुड़वाँ ज्वालामुखियों, सुंदोरो—सुम्बिंग और मेर्बाबु-मेरापी एवं दो नदियों—प्रोगो और एलो के बीच एक ऊँचे क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र को 'केदू का मैदान' भी कहा जाता है। स्थानीय मिथकों एवं दंतकथाओं के अनुसार केदू का मैदान जावा के पवित्र स्थलों में से एक है। इस क्षेत्र की उच्च कृषि उर्वरता के कारण इसे 'दि गार्डन ऑफ जावा' अर्थात् 'जावा का बगीचा' भी कहा जाता है। 20वीं सदी में मरम्मत कार्य के दौरान यह पाया गया था कि इस क्षेत्र के तीनों बौद्ध मंदिर बोरोबुदुर, पावोन और मंदुत एक सीधी रेखा में स्थित हैं। ऐसा माना जाता है कि तीनों मंदिर किसी धार्मिक कारण से एक सीध में बनाए गए थे।

विश्व के अनेक स्थानों पर ऐसे पिरामिड पाए गए हैं, जो एक सीधी रेखा में स्थित हैं और यह माना जाता है कि ये पिरामिड धरती के मनुष्यों ने नहीं बनाए थे, अपितु दूसरे ग्रहों से धरती पर आए परग्रही इनसानों ने बनाए थे।

झील में तैरता पुष्प कमल का बोरोबुदुर

स्मारक बोरोबुदुर मंदिर का निर्माण समुद्र तल से 265 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक झील में खड़ी 49 फीट ऊँची चट्टान पर किया गया था। इस प्राचीन झील का अस्तित्व संबंधी विषय 20वीं सदी के आरंभ में पुरातत्त्वविदों के बीच गहन चर्चा का विषय रहा।

1931 ई. में हिंदू और बौद्ध वास्तुकला के डच विद्वान् डब्ल्यू.ओ.जे. नियूवेन कैंप द्वारा विकसित सिद्धांत के अनुसार केदू मैदान प्राचीन काल में एक झील हुआ करता था और बोरोबुदुर अपने निर्माण के दौरान इसी झील में कमल पुष्प के समान तैरता था। इसके निर्माणकाल का समय मंदिर में उत्कीर्णित उच्चावाचों और 8वीं तथा 9वीं सदी के दौरान सामान्य रूप से प्रयुक्त शाही पत्रों के अभिलेखों की तुलना द्वारा अनुमानित किया जाता है। बोरोबुदुर संभवत: 800 ई. के लगभग स्थापित हुआ, यह मध्य जावा में शैलेंद्र

राजवंश के शिखर काल 760 ई. से 830 ई. से मेल खाता है, इस समय यह श्री विजय राजवंश के प्रभाव में था। इसके निर्माण का अनुमानित समय 75 वर्ष है और निर्माण कार्य का 825 ई. के लगभग समरतुंग के कार्यकाल में पूर्ण होना अनुमानित है।

जावा में हिंदू और बौद्ध शासकों के काल के संबंध में भ्रम की स्थिति बनी हुई है। शैलेंद्र राजवंश को बौद्ध धर्म का कट्टर अनुयायी माना जाता है, जबकि सोजोमेर्टो से प्राप्त प्रस्तर शिलालेखों के अनुसार वे हिंदू थे। उनके काल में 'केदू मैदान' के निकट स्थित मैदानों और पहाड़ों में हिंदू मंदिरों का निर्माण इसलिए संभव था, क्योंकि संजय के उत्तराधिकारी राकाई पिकातान ने बौद्ध अनुयायियों को इस तरह के मंदिरों के निर्माण की अनुमति प्रदान कर दी थी। 778 ई. के कलसन राजपत्र के अनुसार पिकातान ने बौद्धों के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करने के लिए बौद्ध समुदाय को 'मलसन' नामक गाँव दे दिया था।

कुछ पुरातत्त्वविदों का मत है कि एक हिंदू राजा द्वारा बौद्ध स्मारकों की स्थापना में सहायता करना इस बात का प्रमाण है कि जावा में कभी भी बड़ा धार्मिक टकराव नहीं था। यद्यपि, इस समय वहाँ पर दो विरोधी राजवंश राज कर रहे थे, जिनमें से शैलेंद्र राजवंश बौद्ध धर्म का अनुयायी था और संजय राजवंश शैव धर्म का। इन दोनों राजवंशों में आगे चलकर रातु बोको महालय को लेकर 856 ई. में युद्ध हुआ। भ्रम की स्थिति प्रम्बानन परिसर के लारा जोंग्गरंग मंदिर के बारे में भी मौजूद है, जिसे संजय राजवंश के बोरोबुदुर के प्रत्युत्तर में शैलेंद्र राजवंश के विजेता रकाई पिकातान ने स्थापित करवाया। अन्य मतों के अनुसार, वहाँ पर शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व का वातावरण था। यहाँ लारा-जोंग्गरंग शैलेंद्र राजवंश की राजकुमारी होकर भी संजय राजवंश में रानी बनकर आई और शिवमंदिर के निर्माण में भागीदार रही।

गुमनामी के अँधेरे में गुम बोरोबुदुर

928 ई. से 1006 के बीच मेरापी पहाड़ में शृंखलाबद्ध ज्वालामुखियों

के फूट पड़ने के कारण राजा मपु सिनदोक ने माताराम राजवंश (इसे संजय राजवंश भी कहते हैं) की राजधानी को पूर्वी जावा में स्थानांतरित कर दिया। इस कारण बोरोबुदुर का क्षेत्र निर्जन हो गया और यह मंदिर कई सदियों तक ज्वालामुखीय राख तथा जंगल के बीच छिपा रहा। इस स्मारक का अस्पष्ट उल्लेख मध्यकाल में 1365 ई. के लगभग मधु प्रपंचा की पुस्तक 'नगरकरेतागमा' में मिलता है, जो कि मजापहित काल में लिखी गई। इसमें बुदुर में विहार होने का उल्लेख है। मनुष्यों की दृष्टि से ओझल हो जाने के बावजूद यह स्मारक लोककथाओं में जीवित रहा और इसके साथ कई दंतकथाएँ जुड़ गईं।

14वीं सदी में जावा में हिंदू राजवंश का पतन हो गया, जिसके कारण जावाई लोगों को इस्लाम धर्म स्वीकार करना पड़ा। इस कारण 14वीं शताब्दी में इस द्वीप पर समस्त निर्माण कार्य बंद हो गए। अधिकतर लोग मुसलमान बन चुके थे तथा बचे हुए बौद्ध जान बचाकर बाली द्वीप तथा भारत आदि देशों की ओर भाग गए थे। इसलिए बोरोबुदुर की सुध लेनेवाला भी कोई नहीं रहा। इसी बीच जावा द्वीप पर कई राजनीतिक उतार-चढ़ाव आए और सत्ताओं के परिवर्तन होते रहे।

18वीं सदी के दो प्राचीन बाबाद (जावाई वृत्तांत) में इस स्मारक के साथ जुड़ी हुई असफलताओं की कथा का उल्लेख मिलता है। बाबाद तनाह जावी (अर्थात् जावा का इतिहास) के अनुसार 1709 ई. में माताराम साम्राज्य के राजा पकुबुवोनो प्रथम के खिलाफ विद्रोह करना मासडाना के लिए घातक सिद्ध हुआ। इसमें लिखा है कि रेडी बोरोबुदुर पहाड़ी की घेराबंदी की गई। इसमें विद्रोहियों की पराजय हुई तथा राजा ने उन्हें मौत की सजा सुनाई। बाबाद माताराम (माताराम साम्राज्य का इतिहास) में बोरोबुदुर बौद्ध स्मारक को 1757 ई. योगयकार्ता सल्तनत के युवराज मोंचोनागोरो के दुर्भाग्य से जोड़ा गया है। इसके अनुसार स्मारक में प्रवेश निषेध होने पर भी वे एक छिद्रित स्तूप के भीतर छिप गए। अपने महल में वापस आने के बाद वे बीमार हो गए और अगले दिन उनका निधन हो गया। सोक्मोने नामक एक लेखक ने 1976 ई. में लौकिक

मत का उल्लेख करते हुए लिखा है कि जब 15वीं सदी में जावा के लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया तो इस मंदिर को उजाड़ना आरंभ कर दिया गया।

अंग्रेजों द्वारा बोरोबुदुर स्मारक की खोज

1811-16 की अवधि में जावा द्वीप ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन रहा। जावा के ब्रिटिश प्रशासक लेफ्टिनेंट गवर्नर जनरल थॉमस स्टैमफोर्ड रैफल्स ने जावा के इतिहास में गहरी रुचि ली। उसने जावा द्वीप का दौरा किया तथा द्वीप पर उपलब्ध प्राचीन वस्तुओं को आधार बनाकर एवं स्थानीय निवासियों से चर्चा करके जावा का इतिहास तैयार किया। उसके कार्यकाल में जावा द्वीप पर कई प्राचीन स्मारकों को खोज निकाला गया। 1814 ई. में सेमारंग के निरीक्षण दौरे के पश्चात् बुमिसेगोरो गाँव के निकट के जंगल में एक बड़े स्मारक के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। वह स्वयं इसकी खोज करने में असमर्थ था। अत: उसने एच.सी. कॉर्नेलियस तथा उसके 200 साथियों की मदद से यहाँ फैले जंगल के पेड़ों को काट डाला तथा दूर-दूर तक फैली घास को जलाकर मैदान की तरह साफ कर दिया। बोरोबुदुर स्मारक ज्वालामुखीय राख के नीचे दबा हुआ था, उसे भी खोदकर बाहर निकाला गया। स्मारक के ढहने के खतरे को देखते हुए उन्होंने खुदाई का काम बहुत अधिक नहीं किया, इस प्रकार रैफल्स को इस स्मारक के पुनरुद्धार का श्रेय प्राप्त है।

डच ईस्ट इंडीज सरकार द्वारा संरक्षण

1816 ई. में ब्रिटिश प्रशासक लेफ्टिनेंट गवर्नर जनरल थॉमस स्टैमफोर्ड रैफल्स को जावा छोड़ना पड़ा और जावा द्वीप पर नीदरलैंड की डच ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार हो गया। इसके बाद जावा को ईस्ट इंडीज कॉलोनी कहा जाने लगा। केदु के डच प्रशासक हार्टमान ने कॉर्नेलियस के कार्य को आगे बढ़ाया और 1835 ई. में पूरे परिसर को भूमि से बाहर निकाल लिया। बोरोबुदुर के पुनरुत्थान में उसने व्यक्तिगत दिलचस्पी ली। उसने इस बारे में कोई लेखन कार्य नहीं किया, किंतु दंतकथाओं को आधार बनाकर

स्मारक स्थल की खुदाई को जारी रखा तथा मुख्य स्तूप में बौद्ध की बड़ी मूर्ति को खोज निकाला। 1842 ई. में हार्टमैन ने मुख्य गुंबद का अन्वेषण किया, हालाँकि उसके द्वारा खोजा गया कार्य अज्ञात है।

जावा की डच ईस्ट इंडीज सरकार ने डच अभियंता एफ.सी. विल्सन तथा जे.एफ.जी. ब्रुमुंड को स्मारक के अध्ययन का कार्य सौंपा। विल्सन ने इस स्मारक की प्रस्तर शिलाओं में उत्कीर्ण मूर्तियों के सैकड़ों रेखाचित्र बनाए तथा ब्रुमुंड ने राइटअप तैयार किए। ब्रुमुंड का कार्य 1859 ई. में पूरा हुआ। डच सरकार विल्सन के रेखाचित्रों को साथ जोड़कर ब्रुमुंड के कार्य पर आधारित लेख प्रकाशित करना चाहती थी, लेकिन ब्रुमुंड ने सहयोग नहीं किया। सरकार ने बाद में एक अन्य शोधार्थी सी. लीमान्स को यह कार्य सौंपा। उसने विल्सन के स्रोतों और ब्रुमुंड के कार्य पर आधारित निबंध लिपिबद्ध किए। ई. 1873 में बोरोबुदुर का निबंधात्मक अध्ययन अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हुआ और उसके एक वर्ष बाद इसका फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया गया। स्मारक का प्रथम चित्र 1873 में डच-फ्लेमिश लक्षणकार इसिडोर वैन किंस्बेर्गन ने लिया।

धीरे-धीरे इस स्थान की चर्चा होने लगी और यह विश्व भर के शोधार्थियों के आकर्षण का केंद्र बन गया। 1882 ई. में सांस्कृतिक कलाकृतियों के मुख्य निरीक्षक ने स्मारक की कमजोर स्थिति के कारण प्रस्तर शिलाओं पर उत्कीर्ण मूर्तियों को किसी अन्य स्थान पर संग्रहालय में स्थानांतरित करने का आग्रह किया। इसके परिणामस्वरूप सरकार ने पुरातत्त्वविद् ग्रोयन वेल्ड्ट को स्थान का अन्वेषण करने और परिसर की वास्तविक स्थिति ज्ञात करने के लिए नियुक्त किया। उसने अपने प्रतिवेदन में कहा कि यह डर अनुचित है, इसलिए इसे इसी स्थिति में बनाए रखा जाए।

जब इस स्मारक की प्रसिद्धि होने लगी तो देशी-विदेशी लोगों ने बोरोबुदुर की शिल्प सामग्री को स्मृति चिह्न के रूप में चुराना आरंभ कर दिया और इसकी मूर्तियों तथा कलात्मक पत्थरों को लूट लिया। इनमें से कुछ भाग तो औपनिवेशिक सरकार की सहमति से लूटे गए। 1886 ई. में श्यामदेह के राज

चुलालोंगकॉर्न ने जावा की यात्रा की और बोरोबुदुर से कुछ मूर्तियाँ अपने देश में ले जाने का आग्रह किया। उसे मूर्तियों के आठ छकड़े भरकर ले जाने की अनुमति मिल गई। इस सामग्री में विभिन्न स्तंभों से उतारे गए तीस मूर्ति शिलापट्ट, पाँच बुद्ध प्रतिमाएँ, दो सिंह की मूर्तियाँ, कुछ सीढ़ियों और दरवाजों के कला अनुकल्प तथा एक द्वारपाल प्रतिमा सम्मिलित थीं। इनमें से कुछ प्रमुख कलाकृतियाँ, जैसे शेर, द्वारपाल, काल, मकार और विशाल जल स्थल (नाले) आदि बैंकॉक राष्ट्रीय संग्रहालय के जावा कला कक्ष में प्रदर्शित किए गए हैं।

इंडोनेशिया में 'मध्य मात्ययोगा' नामक नाटिका का मुख्य पात्र घटोत्कच है। इंडोनेशिया में घटोत्कच का नाम 'जबांग टेतुको' माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि उनका बलशाली शरीर स्टील का बना हुआ था। इस नाटिका के माध्यम से घटोत्कच की महाभारत के युद्ध में वीरता; विशेषकर अपने भाई अभिमन्यु से बराबरी की जाती है।

हमारे पास बोरोबुदुर से वापस हवाई अड्डे आने के लिए काफी समय था। मैं चाह रहा था कि समय का सदुपयोग हो। तय हुआ कि हम भोजन के लिए ऐसे रेस्तराँ में रुकेंगे, जहाँ पर मशरूम की खेती भी होती हो। इस दौरान वहाँ पर मशरूम के विशेषज्ञों को भी बुला लिया गया। मशरूम में मेरी हमेशा से ही रुचि रही है। वह इसलिए कि यह एक पौष्टिक शाकाहारी आहार है, पर सर्वाधिक इसलिए कि मैं मशरूम उत्पादन को उत्तराखंड या यूँ कहिए कि समूचे हिमालय क्षेत्र के रोजगार के माध्यम के रूप में देखता हूँ। मैंने महसूस किया कि ऐसे अवसरों पर ज्ञानवर्द्धन भी होता है। मुझे बताया गया कि इंडोनेशिया मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण देश है। देश में विभिन्न प्रजातियों की मशरूम उपलब्ध है, परंतु लकड़ी पर उगी ओरास्टर प्रजाति की मशरूम की अपनी महत्ता है। इस मशरूम में प्रोटीन, फास्फोरस, लौह, थाइमीन, राइबोफ्लेबिन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि इसके लिए ज्यादा स्थान की आवश्यकता नहीं होती और लोग साइड बिजनेस के तौर पर इसका उत्पादन कर सकते हैं।

इंडोनेशिया में मशरूम का उत्पादन पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़ा है।

मुझे लगता है कि ऐसा शायद इसलिए हुआ है कि इसकी खेती करना बहुत ही आसान है। इसके अतिरिक्त, बदलते विश्व परिवेश में लोग अपने स्वास्थ्य हेतु ज्यादा चिंतित हैं। बड़ी संख्या में लोग शाकाहारी बन रहे हैं। ऐसे में मशरूम प्रोटीनयुक्त भोजन का बेहतर विकल्प प्रस्तुत करती है। मुझे लगा, इंडोनेशिया में भी भारत की तरह ही खुंब उत्पादन की असीम संभावना है, परंतु समुचित रणनीति के अभाव में किसानों व खरीदारों और अनुसंधानकर्ताओं के बीच ठीक से समन्वय का अभाव दिखा। मुझे बताया गया कि 40 हजार टन से ज्यादा मशरूम का उत्पादन इंडोनेशिया में होता है। इंडोनेशिया में मशरूम को 'जमूर' भी कहा जाता है। 'जेजूमरन' के नाम से प्रसिद्ध यह रेस्तराँ शाकाहारी भोजन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के मशरूम-आधारित व्यंजन उपलब्ध हैं। यहाँ बड़ी संख्या में लोग रेस्तराँ में इन व्यंजनों का लुत्फ उठाने के लिए आते हैं।

मुझे मशरूम की खेती देखकर और मशरूम पर आधारित रेस्तराँ जाकर अत्यंत खुशी हुई। इसी थीम पर हम उत्तराखंड में भी एक रेस्तराँ खोल सकते हैं। हिमालय में खुंब उत्पादन की असीम संभावनाएँ हैं। विशेषकर औषधीय गुणवाली मशरूम की प्रजातियों की खेती की प्रचुर संभावना है।

योगयकार्ता से 4:00 बजे हमें सिंगापुर एयरलाइंस द्वारा सिंगापुर आना था। अत: प्रो. धूलिया ने ट्रैफिक जाम के डर से हमें समय से पहले चलने को कह दिया था। योगयकार्ता हवाई अड्डे पर हम दो घंटे पहले ही पहुँच गए। यह हवाई अड्डा छोटा था, परंतु अनेक अंतरराष्ट्रीय विमान यहाँ पर उतर रहे थे। सिंगापुर एयरलाइंस के लॉउंज में एक मजेदार घटना घटी, जिसे मैं आजीवन नहीं भुला सकता। शाकाहारी भोजन के साथ मुझे रोटी नहीं मिली, पता चला कि वहाँ पर रोटी नहीं बनती। एक भारतीय परिवार ने परेशानी को भाँप लिया। पुणे की यह महिला घर से खाना बनाकर लाई थी, उसने जबरदस्ती मुझे रोटी खिलाई। मेरे लाख मना करने पर भी वे दंपती मुझे खिलाकर ही माने। घर से इतनी दूर भारतीय दंपती की सहृदयता देखकर अत्यंत प्रभावित हुआ। रात को हम 9:00 बजे सिंगापुर एयरलाइंस द्वारा सिंगापुर के हवाई अड्डे पहुँच गए।

भारत की दिल्ली उड़ान के लिए तीन-चार घंटे का समय था। सिंगापुर हवाई अड्डा निस्संदेह दुनिया के श्रेष्ठ हवाई अड्डों में से एक है। हवाई अड्डे पर शॉपिंग के लिए विश्वस्तरीय स्टोर उपलब्ध हैं। मैंने भी समय का सदुपयोग कर खरीदारी की। मुझे बताया गया कि चांगी हवाई अड्डा सिंगापुर पिछले पाँच वर्षों से विश्व के सर्वश्रेष्ठ एयरपोर्ट के रूप में नामित किया गया है। स्काट्रेक्स अवार्ड लगातार पाँच बार सिंगापुर हवाई अड्डे को मिल चुका है।

मुझे बताया गया कि इस अवार्ड का निर्णय हवाई अड्डा सेवा, सुरक्षा, आव्रजन, उपभोक्ता सेवा, प्रस्थान, अंतरण आदि सेवाओं पर आधारित है। दुनिया के इस सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डे से 50 हजार के करीब लोग प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं और यह इस छोटे से देश में रोजगार का अत्यंत महत्त्वपूर्ण केंद्र है। 55 लाख की जनसंख्या के देश में लगभग एक प्रतिशत जनता इस हवाई अड्डे से जुड़ी है, यह अपने आप में बड़ी बात है।

सिंगापुर से विदा लेकर हम दिल्ली के लिए रवाना हुए। सुबह-सुबह दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर प्रोटोकॉल मुझे लेने के लिए पहुँचा था। सामान की प्रतीक्षा किए बगैर मैं घरेलू उड़ान से देहरादून प्रस्थान कर गया, जहाँ पर स्थानीय कार्यकर्ता और स्टाफ मेरी प्रतीक्षा में थे। किसी भी दृष्टि से पहाड़ों के बीच छोटा सा देहरादून का एयरपोर्ट किसी भी सूरत में चांगी एयरपोर्ट से कम नहीं लगता है। एयरपोर्ट से निकलते ही पूर्व निर्धारित कार्यक्रम हेतु निकल गया। फोन पर यात्रा की तसवीरें देखते हुए लगा कि हवाई यात्राओं ने दुनिया कितनी छोटी बना दी। एक दिन पूर्व तो मैं इंडोनेशिया में था और आज अपने गृहक्षेत्र में।

व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद प्रो. यूलिया को फोन करना नहीं भूला, जिनके सौजन्य से हमारी यह यात्रा अविस्मरणीय बन गई। जहाँ व्यक्तिगत जीवन में मुझे काफी कुछ सीखने को मिला, वहीं इंडोनेशिया के प्रति मेरी धारणा में परिवर्तन आया। भारत से हजारों मील जुड़ा यह मुस्लिम राष्ट्र हमारे दिल के इतने करीब है, यह मैंने इस यात्रा में ही सीखा।

□

इंडोनेशिया :
भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक परिचय

इंडोनेशिया : एक परिचय– भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन

इंडोनेशिया दुनिया का एक खूबसूरत तथा बहुत बड़ा द्वीप समूह है। पर्वतीय द्वीप आपस में एक कड़ी के रूप में जुड़े हुए हैं। यहाँ पर कई सक्रिय ज्वालामुखी भी व्याप्त हैं, जो कि खतरे के क्षेत्र से बाहर हैं और जिन्हें भू-वैज्ञानिकों द्वारा 'शांतिपूर्ण अग्नि के चक्र' कहा जाता है। इंडोनेशिया में कई प्रचंड ज्वालामुखीय विस्फोट भी दर्ज किए जाते रहे हैं, फिर भी वहाँ के निवासी सुलगते हुए ज्वालामुखियों के नजदीक रहते आ रहे है, क्योंकि उनसे निकलने वाली राख धरती को समृद्ध तथा उपजाऊ बनाती है, जो कि खेती के लिए बहुत ही लाभदायक है। इस द्वीप समूह की विशेषता यह है कि यह

इंडोनेशिया : खूबसूरत थरा द्वीप समूह

द्वीप समूह मानसूनी वर्षा से तरावटपूर्ण रहता है, यहाँ के इलाके के आसपास गर्माहट होने की वजह से वातावरण में गुनगुनी नमी बनी रहती है। कुल मिलाकर पर्यटकों के लिए यह देश स्वर्ग है।

यहाँ साफ-सुथरी झीलें, दलदलयुक्त तटीय वृक्षावली तथा धरती के कुछ सबसे चमत्कारिक वर्षा वन भी हैं। दुनिया का सबसे बड़ा पुष्प 'रपफलेशिया' भी यहाँ पर ही खिलता है। यह नारंगी रंग का चमकदार फूल एक मीटर या उससे भी बड़ा हो सकता है तथा इस पुष्प से एक अरुचिकर दुर्गंध निकलती है, जो कि कीड़े-मकौड़ों को आकर्षित करती है। एक ओर समुद्रों से घिरे होने के कारण यहाँ की समुद्रीय जैव-विविधता उल्लेखनीय है, जबकि बहुत सारे दुर्लभ जानवर जैसे बाघ व गैंडे जंगलों में स्वच्छंद घूमते हुए देखे जा सकते हैं। यहाँ मूल्यवान लकड़ियाँ, जैसे टीका व आबनूस (काली लकड़ी) के वृक्षों को काटकर जानवरों के प्राकृतिक निवास को नष्ट करने का सिलसिला भी दशकों से चल रहा है।

इंडोनेशिया की आर्थिकी कृषि, वानिकी तथा मत्स्य व्यवसाय पर आधारित है। यहाँ का मत्स्य उद्योग दुनिया के बड़े उद्योगों में से एक है। यह उद्योग बहुतायत में समुद्री मछली, एनचोविस व टना नामक बड़ी मछली के साथ ही मोती, शंख सीपियाँ तथा अन्य कई प्रकार के समुद्री उत्पाद को प्रोन्नत करता है। इंडोनेशिया मसालों, जैसे काली मिर्च, लौंग, जायफल इत्यादि का बड़ी मात्रा में उत्पादन करता है, जिसके कारण यह देश व्यापारियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, यहाँ पर आज भी उपरोक्त सभी पैदावार होती हैं। यहाँ अन्य उत्पाद जैसे रबड़, कॉफी, ताँबा तथा पेट्रोलियम भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। इस देश की खानों से ताँबा, मिनरल तथा कोयले का उत्पादन होता है। आरक्षित तेल का सदुपयोग यहाँ पर 1960 से किया जा रहा है तथा इससे होनेवाली आमदनी से देश की आर्थिकी सुदृढ़ होती है।

इंडोनेशिया का भूगोल

इंडोनेशिया एक विशाल द्वीपसमूह देश है, जहाँ पूर्व से पश्चिम के बीच

की दूरी 5,120 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण की दूरी 1,760 किलोमीटर है। इसमें 13,667 द्वीप शामिल हैं (कुछ स्रोत 18,000 कहते हैं)। इनमें से केवल 6,000 द्वीपों में ही लोग रहते हैं। यहाँ पाँच मुख्य द्वीप (सुमात्रा, जावा, कालीमंतन, सुलावेसी और इरियन जया), दो प्रमुख द्वीपसमूह (नुसा तेंगरा और मालुकु द्वीप समूह) और साठ छोटे द्वीपसमूह हैं। दो द्वीपों को अन्य देशों के साथ साझा किया जाता है; कालीमंतन (औपनिवेशिक काल में ज्ञात बोर्नियो, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा द्वीप) मलेशिया और ब्रुनेई के साथ साझा किया जाता है और इरियन द्वीप जया पापुआ न्यू गिनी के साथ साझा करता है। इंडोनेशिया का कुल भूमि क्षेत्र 1,919,317 वर्ग किलोमीटर है। इंडोनेशिया के कुल क्षेत्र में शामिल एक और 93,000 वर्ग किलोमीटर द्वीप समुद्र (स्ट्रेट्स, बे और पानी के अन्य निकाय) हैं। इसके अतिरिक्त आसपास के समुद्री क्षेत्र इंडोनेशिया के आमतौर पर मान्यताप्राप्त क्षेत्र (भूमि और समुद्र) लगभग 5 मिलियन वर्ग किलोमीटर तक विस्तृत है। हालाँकि सरकार एक विशेष आर्थिक क्षेत्र का भी दावा करती है, जिसका कुल 7.9 मिलियन वर्ग किलोमीटर तक विस्तार है।

भूगोलवेत्ताओं ने परंपरागत रूप से ग्रेटर सुंद द्वीपों में सुमात्रा, जावा और मदुरा, कालीमंतन (पूर्व में बोर्नियो) तथा सुलावेसी (पूर्व में सेलेबस) को समूहीकृत किया है। सुलावेसी को छोड़कर ये द्वीप सुंदर शेल्फ पर स्थित हैं। सुंद और सहूल शेल्फ में समुद्र की गहराई औसत 200 मीटर या उससे कम है। इन दो के बीच सुलावेसी, नुसा तेंगारा (जिसे कम सुंदा द्वीप भी कहा जाता है) और मालुकु द्वीप समूह (या मोलुक्का), जो एक दूसरा द्वीप समूह बनाते हैं, जहाँ कुछ स्थानों पर आसपास के समुद्र गहराई से 4,500 मीटर तक पहुँचते हैं।

टेक्टोनिक रूप से यह क्षेत्र, विशेष रूप से जावा, अत्यधिक अस्थिर है, यद्यपि ज्वालामुखीय राख के उपजाऊ मिट्टी के परिणामस्वरूप, यह कुछ क्षेत्रों में कृषि की स्थिति को अप्रत्याशित रूप से अधिक उत्पादकता प्रदान करता है। देश में कई पहाड़ हैं और कुल 400 ज्वालामुखी हैं, जिनमें

से लगभग 100 सक्रिय हैं। अकेले 1972 और 1991 के बीच, जेंटिनिन ज्वालामुखीय विस्फोट दर्ज किए गए, ज्यादातर जावा पर स्थित हैं। आधुनिक समय में सबसे हिंसक ज्वालामुखी विस्फोट इंडोनिशया में हुआ था। 1815 में सुंबावा के उत्तरी तट पर गुनांग तंबोरा में एक ज्वालामुखी, नुसा तेंगारा बारात प्रांत ने 92,000 लोगों का दावा किया और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में 'गरमी के बिना वर्ष' बनाया। 1883 में जावा और सुमात्रा के बीच, सुंदर स्ट्रेट में ज्वारीय लहर से 36,000 लोगों की मृत्यु हो गई। विस्फोट की आवाज तुर्की और जापान के रूप में दूर तक रिकॉर्ड की गई थी। उस विस्फोट के बाद लगभग एक शताब्दी तक, क्राकाटो 1970 के दशक के अंत तक शांत रहा।

समुद्र तल से 3,000 से 3,800 मीटर के बीच के पर्वत सुमात्रा, जावा, बाली, लंबोक, सुलावेसी और सेराम के द्वीपों पर पाए जा सकते हैं। देश के सबसे ऊँचे पहाड़, जिनकी ऊँचाई 4,700 और 5,000 मीटर के बीच है, जयविजा पर्वत और इरियन जया मु सुदिरमन पर्वत में स्थित हैं। सर्वोच्च चोटी पुंकक जया, जो 5,039 मीटर तक पहुँचती है, सुदिरमन पहाड़ी में स्थित है।

नुसा तेंगारा के पूर्व में बाली से इरियन जया की ओर फैले द्वीपों के दो

ज्वालामुखीय विस्फोटों का देश

हिस्से हैं। जावा, बाली और फ्लोरस के माध्यम से सुमात्रा से फैले पहाड़ों और ज्वालामुखी की श्रृंखला की निरंतरता है। नुसा तेंगारा का बाहरी क्षेत्र सुमात्रा के पश्चिम में द्वीपों की श्रृंखला का भूगर्भीय विस्तार है, जिसमें नियास, मंटवाई और इंगगानो शामिल हैं। यह श्रृंखला सुंबा और तिमोर के ऊबड़ पहाड़ी द्वीपों में नुसा तेंगारा में पुनरुत्थान करती है। मालुकु द्वीप समूह (या मोलुकास) इंडोनेशियाई द्वीपों के सबसे जटिल भूगर्भीय रूप में हैं। वे द्वीपसमूह के पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित हैं, जो फिलीपींस से उत्तर में हैं, पूर्व में इरियन जया और दक्षिण में नुसा तेंगारा स्थित हैं। इनमें से सबसे बड़े द्वीपों में हलमोहरा, सेराम और बुरु शामिल हैं, जिनमें से सभी बहुत गहरे समुद्र से बाहर निकलते हैं। समुद्र से उच्च पहाड़ों के इस अचानक राहत पैटर्न का अर्थ है कि बहुत कम स्तर के तटीय मैदान हैं।

भूगोलकारों का मानना है कि न्यू गिनी द्वीप, जिसमें इरियन जया भी एक हिस्सा है, एक बार ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप का हिस्सा रहा होगा, ब्रेकअप और टेक्टोनिक एक्शन के कारण द्वीपों का विच्छेद हुआ।

इंडोनेशिया सामरिक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण देश है। प्रशांत और हिंद महासागर के बीच सामरिक रूप से स्थित इंडोनेशिया 18,000 से अधिक द्वीपों के कारण बड़ी शक्ति है। उनमें से सुमात्रा, जावा, कालीमंतन के बड़े द्वीप (जिसमें बोनियो द्वीप के दो-तिहाई हिस्से शामिल हैं), सुलावेसी और इरियन जया में काफी ऊँची पहाड़ियाँ हैं, कुछ चोटियाँ 12,000 फीट तक ऊँची हैं।

पूर्व में इरियन जया पर उच्चतम ऊँचाई 16,000 फीट से अधिक है, जिसमें उच्चतम बिंदु पंचक जया 16502 फीट (5,030 मीटर) पर है। इंडोनेशिया की सबसे ऊँची चोटी, माउंट तंबोरा (8,930 फीट, 2,722 मीटर), एक सक्रिय स्ट्रेटोवोल्कोनो है, जिसका 1815 का विस्फोट इतिहास में सबसे बड़ी व विध्वंसक आपदाओं में दर्ज किया गया था। लगभग 71,000 लोगों की मृत्यु इस विस्फोट के कारण हुई। विस्फोट की ध्वनि सुमात्रा द्वीप के पश्चिम में लगभग 1,200 मील (2,000 कि.मी.) की दूरी तक सुनी गई

थी तथा बोनियो, सुलावेसी, जावा और मालुकु के द्वीपों पर राख गिरने जैसी घटनाएँ दर्ज की गई थीं। रिंग ऑफ फायर के साथ स्थित इंडोनेशिया में इसकी सीमाओं के भीतर लगभग 400 ज्वालामुखी हैं, कम-से-कम 90 अभी भी सक्रिय हैं। सबसे सक्रिय ज्वालामुखी केलट (1000 ईसवी से 30 गुना से अधिक बार उग आया है) और जावा द्वीप पर मेरापी (जो 1000 ईसवी से 80 गुना अधिक उग आया है) हैं।

दो महाद्वीपीय प्लेटों सहित कई टेक्टोनिक प्लेटों के बीच इसके स्थान के कारण यूरेशियन प्लेट (सुंडा शेल्फ) और ऑस्ट्रेलियाई प्लेट (सहुल शेल्फ) और दो समुद्री प्लेटें फिलीपीन सागर प्लेट और प्रशांत प्लेट; अभी भी भूगर्भीय प्रक्रियाओं से गुजर रही हैं। इंडोनेशिया में प्राकृतिक आपदाएँ आम हैं। सबसे उल्लेखनीय हिंद महासागर में आया भीषण भूकंप था, जिसने दिसंबर, 2004 की सुनामी को जन्म दिया और इंडोनेशिया के द्वीपसमूह के भीतर कई द्वीपों को तबाह कर दिया। पहाड़ी परिदृश्य के अलावा, अधिकांश द्वीप मोटे उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों में शामिल हैं, जो तटीय मैदानों को रास्ता देते हैं। इंडोनेशिया की महत्त्वपूर्ण नदियों में बरिटो, दिगुल, हरि, कम्पर, कपुआस, कायन और मुसी शामिल हैं; साथ ही बिखरी हुईं अंतर्देशीय झील भी हैं, जो आकार में अपेक्षाकृत छोटी हैं।

सामाजिक जीवन

इन द्वीप समूहों पर सबसे पहले रहनेवाले लोग संभवत: मेनलैंड मलेशिया से आए थे। लगभग 700 ईसवी में द्वीप में मसालों की प्रचुरता और महत्त्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों की स्थिति को देखते हुए यहाँ कई अन्य राष्ट्रों के नाविकों का ध्यानाकर्षण हुआ। भारतीय सौदागरों और उनके साथ आए भिक्षुकों ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया तथा अरब के व्यवसायी अपने साथ इस्लाम धर्म को लेकर आए।

1500 और 1600 ई. के दौरान पुर्तगालियों तथा ब्रिटिश लोगों के मध्य द्वीप समूह पर अपना वर्चस्व कायम करने के लिए जंग भी लड़ी गई, परंतु

केवल डच ही 1798 में अपना अधिकार जमाने में कामयाब रहे थे। डचों के अपने नियमों के कारण, वहाँ पर एकता की समझ विकसित हुई तथा बाद में वहाँ पर आजादी की लड़ाई भी लड़ी गई, 1949 में इंडोनेशिया को गणतंत्र घोषित कर दिया गया। आजादी के समय तक वहाँ की फौज एक ताकतवर राजनीतिक सेना बन चुकी थी। उसने 1965 से 1975 तक कम्युनिस्टों की एक बगावत को कुचलकर पूर्वी तिमोर पर कब्जा कर लिया था। उस समय के इतिहास पर दो नेताओं ने प्रभाव छोड़ा था। आजाद राष्ट्र के प्रथम राष्ट्रपति ने पहचान का एक सच्चा अहसास दिलाया। जनरल सुहार्तो द्वारा एक सैन्य तख्तापलट की अगुआई की गई, जिसने वृहद् राजनीतिक तथा धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहित करने का काम किया।

सरकार द्वारा खाद्य उत्पादन, उद्योग तथा स्वास्थ्य सुरक्षा को बढ़ावा देने के बावजूद बढ़ती हुई जनसंख्या में निर्धनता अधिक है, जो कि द्वीप में एक गंभीर समस्या का रूप ले रही है। इंडोनेशिया के अधिक लोग कृषक हैं तथा कुछ फसलों को काटने तथा जलाने का कार्य करते हैं। इंडोनेशिया का जीवन पौराणिक परंपराओं से भरा हुआ है, जो कि बौद्ध, हिंदू तथा लोक स्रोतों द्वारा प्रयुक्त की जाती आ रही है, जबकि वहाँ पर अधिकतर जनसंख्या मुस्लिमों की है।

इंडोनेशिया में हिंदू एक बहु-प्रजातीय समाज है, जिसमें कि भिन्न-भिन्न इंडोनेशियन प्रजातियों का भी समावेश है, जैसे कि बैलनजी, जावनीज, भारतीय तथा अन्य प्रजातियाँ, इंडोनेशिया में हिंदुओं की बड़ी संख्या ज्वालामुखीय द्वीप बाली में निवास करती है तथा उनमें से भी कुछ इंडोनेशिया के अन्य स्थानों में पलायन कर गए।

बड़े शहरों में इंडोनेशियाई भारतीय अल्पसंख्यक हिंदुओं की एक बड़ी संख्या है, जो कि वहीं पर व्यवस्थित रूप से प्रवास करती है। इंडोनेशिया के कई मूलवासी, जो कि ऑस्ट्रोनेशियन मूल में परिवर्तित तथा पैतृक और प्राकृतिक पूजा-पद्धति में विश्वास करते हैं, वे भी हिंदुत्व के करीब आ गए, उन्हें भी हिंदुओं की श्रेणी में रखा जा सकता है, जैसे कि दयाकस,

कहारिनजन, कारो, परमालिम, सूडानीज, सुंडा विवितान, हिंदू दयाक और कहारिनगन समूह केंद्रीय कालीमंतन पर केंद्रित हैं।

रामायण बैले (इंडोनेशिया सेनद्रतरी रामायण) एक मानस दर्शन तथा प्रस्तुतीकरण है, जो कि मूलरूप से संस्कृत में वाल्मीकि द्वारा लिखी गई रामायण गाथा से ही लिया गया है, जिसे बहुत ही उच्चकोटि की नृत्य कला शैली में प्रस्तुत किया जाता है। रामायण बैले का प्रस्तुतीकरण, संगीत, नृत्य, नाटक, विशेषकर इसे बिना संवाद के केवल हाव-भाव द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

मूलरूप से भारत में प्रारंभ रामायण, दक्षिण-पूर्व एशियन राष्ट्रों (जो कि ऐतिहासिक दृष्टि से धार्मिक सभ्यताओं से जुड़े थे) के लिए एक कलात्मक प्रेरणा का स्रोत बन चुकी है। रामायण बैले या नृत्य-नाटक को एशिया में कई परंपराओं में देखा जा सकता है, जिसे 'सेनद्रतरी' नाम दिया गया है।

भारत की तरह ही इंडोनेशिया का सामाजिक जीवन भी विविधताओं से भरा हुआ है। समरसता, समभाव और परस्पर सम्मान की बुनियाद पर टिका यहाँ का समाज अन्य देशों की अपेक्षा अत्यंत सहनशील है। देश में बहुसंख्यक मुस्लिम रहते हैं, अत: वहाँ स्वाभाविक रूप से अन्य एशियाई देशों की अपेक्षा मस्जिदों की संख्या भी अधिक है। मुस्लिम बहुसंख्यक देश होने के बावजूद यहाँ पर अन्य धर्म के लोगों के लिए पूरी स्वतंत्रता है। यहाँ पर लोगों को अपनी आस्था के अनुसार धार्मिक आचरण की पूर्ण स्वतंत्रता है। अन्य मुस्लिम देशों की अपेक्षा यहाँ पर धर्म को व्यक्तिगत मामला माना जाता है। इंडोनेशिया के ज्यादातर लोग मिलनसार हैं और सबसे उनका मित्रवत् व्यवहार रहता है।

पारिवारिक जीवन

इंडोनेशिया में परिवार को महत्ता दी जाती है, पिता को परिवार के मुखिया के रूप में स्थान दिया जाता है। पारिवारिक कार्यक्रमों में सभी सदस्यों की सहभागिता होती है, मुझे लगता है कि यह भारतीय संस्कृति का ही प्रभाव है।

रात को यह कोशिश रहती है कि पूरा परिवार साथ बैठकर भोजन करे। लोग एक–दूसरे के परिवारों में जाते हैं, आपसी उत्सवों का बड़ा महत्त्व है तथा यहाँ पारिवारिक मित्रों, रिश्तेदारों से मेल–जोल को काफी महत्त्व दिया जाता है। भारत की तरह इंडोनेशिया में परिवार व वंश को महत्त्व दिया जाता है। पूरे देश में तीन सौ से अधिक जातियाँ या समूह हैं। परंपरागत, पारिवारिक बंधनों में बँधे इंडोनेशिया के लोगों का भोजन भी स्थानीय, चीनी मध्य–पूर्व, भारतीय और पश्चिमी रंग से प्रभावित है। लोग अपने रोजमर्रा का सामान लेने के लिए बाजार जाते हैं। भारत की तरह मुस्लिम अतिथियों के लिए अलग भोजन की व्यवस्था होती है। पुराने समय में इंडोनेशिया में कई कबीले थे, जिनके मुखिया होते थे, ये मुखिया अपने–अपने क्षेत्रों के राजा होते थे। योगयकार्ता का विशेष क्षेत्र आज भी वहाँ के सुल्तान के अधीन है, जो कि वहाँ का प्रशासक है।

इंडोनेशिया की एक कहावत है कि 'माँ के चरणों में स्वर्ग है।' प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में माँ का बड़ा स्थान है।

घरों में पुरुषों को ज्यादा काम दिया जाता है। सफाई, रिपेयर, कृषि और बागबानी पुरुषों की जिम्मेदारी होती है, जबकि महिलाएँ गृहिणी के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को निभाती हैं।

भारत की तर्ज पर बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान माता–पिता रखते हैं, पश्चिमी देशों की तरह कॉलेज विद्यार्थियों को अपना खर्च निकालने हेतु प्रयास नहीं करना पड़ता। मुझे बताया गया कि बड़ों के सम्मान के तौर पर उनसे आँखें मिलाना अच्छा नहीं माना जाता है, इंडोनेशिया में आतिथ्य–सत्कार पर काफी ध्यान दिया जाता है।

परिवार तीन प्रकार के होते हैं। बड़े शहरों में माँ–बाप अपने बच्चों के साथ रहते हैं। यहाँ पर माता–पिता दोनों कार्य करते हैं, इन परिवारों को 'न्यूक्लीयर फैमिली' कहा जाता है। कुछ स्थानों पर परिवार दादा–दादी या नाना–नानी के साथ रहते हैं। देश के ग्रामीण इलाकों में लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं, इसमें माता–पिता, रिश्तेदार, चाचा–चाची, दादा–दादी सभी इकट्ठे रहते हैं। अधिकतर लोग, छोटे–मोटे व्यापार और मछली पकड़ने का कार्य

करते हैं। बड़े शहरों में भारत की ही तरह लोग छोटे परिवारों में रहते हैं। इंडोनेशिया की भाषा व्यवस्था पर प्रोफेसर यूलिया कहती हैं कि यह अत्यंत जटिल है, शायद इसलिए कि इस देश में 700 के करीब भाषाएँ बोली जाती हैं और 1100 से अधिक बोलियाँ प्रचलित हैं। इतनी अधिक विविधता के होते हुए भी यहाँ अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। इन भाषाओं का शब्दकोश व वाक्य निर्माण एक-सा है, जिसके कारण लोग एक-दूसरे को समझ सकते हैं। बड़ा देश होने के कारण एक ही भाषा में विविधता के दर्शन होते हैं।

शहरों में जनसंख्या का घनत्व काफी अधिक है, प्रतिवर्ग कि.मी. 5.6 हजार लोग निवास करते हैं, ग्रामीण इलाकों में लोग कृषि, दुधारू जानवर एवं मछली पकड़कर अपना जीवनयापन करते हैं। रबर, कॉफी, धान तथा मुरगी पालन यहाँ की ग्रामीण आर्थिकी के मुख्य स्तंभ हैं। यहाँ पर भारत की ही तरह लोग विभिन्न त्योहारों पर उत्सव मनाते हैं। उपवास एवं शादी के परंपरागत कार्यक्रमों के बीच यहाँ का रहन-सहन क्षेत्र के हिसाब से है। जहाँ लोग बड़े शहरों में बहुमंजिला इमारतों में रहते हैं, वहीं गाँवों में लोग बाँस के बने लॉन्ग हाउस या मस्जिद के आसपास छोटे-छोटे घर बनाकर रहते हैं। इतनी अधिक विविधता, इतने अधिक द्वीपों तथा विभिन्न रीति-रिवाजों के बावजूद यह देश एकता के सूत्र में बँधा है। इंडोनेशिया में एक तरफ समुद्री तट है तो दूसरी तरफ मैदानी क्षेत्र और कहीं-कहीं हिम आच्छादित पर्वतमालाएँ भी हैं। यह देश भारत की तरह ही है। इस सबके पीछे यहाँ की राष्ट्रभाषा बहासा (भाषा का विकृत रूप) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। बहासा ने पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधकर रखा हुआ है।

इंडोनेशिया की संस्कृति

यह जगजाहिर है कि विश्व में अनेक संस्कृतियों का विकास हुआ और समय के साथ-साथ ये विलीन भी हो गईं। ऐसे में देखा जाए तो विश्व की प्राचीनतम और सर्वश्रेष्ठ संस्कृति के रूप में भारतीय संस्कृति ने स्वयं को स्थापित किया है। आज की दुनिया लौकिकता, भोगवाद और अधिभौतिकता

की तरफ तेजी से भाग रही है, दूसरी ओर भारतीय संस्कृति, अध्यात्मवाद, आत्मतत्त्व, सहिष्णुता, अहिंसा, सदाचार की आधारशिला पर टिकी हुई है। हमारे सांस्कृतिक और जीवन मूल्यों में समस्त विश्व को अपना परिवार मानने की भावना अंतर्निहित है, यही वजह है कि आज संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति हजारों-हजार साल बाद भी अपने मूलस्वरूप में रहकर अक्षुण्ण बनी हुई है। हजारों साल पहले यही संस्कृति इंडोनेशिया की धरती पर आई थी। स्वच्छंदता और स्वार्थांधता से पृथक् हमारी इस साझी संस्कृति में सभी के साथ बिना किसी पक्षपात के न्याय, उदारता, परहित और त्याग जैसे चारित्रिक गुणों के आधार पर आदर्श जीवन जीने और विश्व मानव को एकता के सूत्र में बाँधने का सामर्थ्य है। सबसे बड़ी बात यह है कि भारतीय संस्कृति की मान्यताएँ व परंपराएँ अंधविश्वास न होकर ठोस वैज्ञानिक आधार पर प्रतिस्थापित हैं। युगों पूर्व हम वह सब करते थे, जो आज का आधुनिक विज्ञान हमें करने को कहता है।

भारत और इंडोनेशिया की साझी संस्कृति पुरुषार्थ, लगन, लक्ष्य, परिश्रम के बल पर मानवीय मूल्यों का सृजन करती है। चाहे व्यक्ति हो, संस्था हो, सभी में हमारी संस्कृति, उत्साह, हर्ष, उल्लास, सरसता, आनंद और उमंग का संचार करती है।

यही विशेषता और विचारधारा का दर्शन उसे विश्व की अन्य संस्कृतियों से भिन्न, अद्‌भुत और विलक्षण बनाते हैं। यही संस्कृति हजारों वर्ष के बाद भी इंडोनेशिया में अपने पूर्ण जीवंत रूप में देखने को मिलती है। सत्यम् शिवम् सुंदरम्, सत्यमेव जयते, वसुधैव कुटुंबकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसे सद्-विचारों पर टिकी हमारी साझी संस्कृति पृथ्वी को अपनी माता और आकाश को पिता के रूप में पूजती है। हमारी यह संस्कृति व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को वैचारिक, धार्मिक, मानसिक और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ कर सुखमय, सुंदर, आदर्श और प्रगतिशील जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करती है। मुझे लगता है कि इंडोनेशिया में धर्मनिरपेक्षता की सफलता में वहाँ की संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

हमारी साझी संस्कृति में पुरुषार्थ को महत्त्व दिया गया है। चारों पुरुषार्थ

पारंपरिक विवाह की झलक

के साथ जीवन संपन्न होता है, ये हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म का अर्थ उन दैनिक क्रियाओं से है, जो हमारी मान्यताओं से संबंध रखती हैं। मानव जीवन के लिए क्या करना चाहिए और उसके लिए क्या वर्जित है, यह कर्म कहलाता है। मनुष्य के सामाजिक व नैतिक कर्मों को धर्म के अंदर माना गया है। काम का अर्थ जीवन की कामनाओं से है। काम को पुरुषार्थ की नींव कहा जाता है, इसके बगैर सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। मोक्ष समस्त चित्तवृत्तियों और इंद्रियों को अपने वश में कर लेने का आधार है।

विविधता से परिपूर्ण इंडोनेशिया की संस्कृति हर प्राणी के प्रति उदारता का व्यवहार करने का संदेश देती है। भारतीय संस्कृति हर प्राणी को ईश्वर का रूप समझकर उसकी पूजा, सत्कार और सम्मान का संदेश देती है। भारतीय संस्कृति के अनुसार 'तीर्थानाम हृदय तीर्थ शुचीना, हृदयम शुचि', अर्थात् सब तीर्थों में हृदय अर्थात् अंतरात्मा परम तीर्थ है, सब पवित्रताओं में अंतरात्मा की पवित्रता श्रेष्ठ है।

विविधता से परिपूर्ण इंडोनेशिया : परंपरागत वेशभूषा

हमारी तरह इंडोनेशिया की संस्कृति में दान देना अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य माना गया है। दान का अगर शाब्दिक अर्थ देखें तो अपना अधिकार समाप्त कर दूसरे का अधिकार या स्वामित्व स्थापित कर देना; दान है, वेदों में देवताओं को आमंत्रित कर उन्हें बिना किसी बदले की भावना के दान दिया जाता है। द्रव्य दान, स्वर्ण दान, वस्त्र दान, कन्या दान, भूदान तथा अन्नदान आदि कई प्रकार के दान देकर पुण्य प्राप्त किया जाता है।

इंडोनेशियन संस्कृति एक ऐसी सत्ता पर विश्वास करती है, जो सर्वशक्तिमान है। ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास करना हमारे राष्ट्र, समाज और प्राणी के लिए कवच की भाँति होता है। दंड के भय से मनुष्य पाप कर्म से सदैव सुरक्षित रहता है।

इंडोनेशियन संस्कृति में यह मान्यता है कि मानव शरीर नाशवान है। मानव योनि को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, यह माना जाता है कि आत्मा शरीर की मृत्यु के पश्चात् उसे छोड़कर दूसरा शरीर धारण करती है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति में पौराणिक मान्यता है कि पृथ्वी लोक के अतिरिक्त कर्मों के आधार पर अगले जीवन की प्राप्ति होती है, यह व्यक्ति के जीवन में एक ऐसी अदृश्य प्रेरणा है, जो मानव को सत्कर्मों के पथ पर अग्रसर करती है।

इंडोनेशिया की संस्कृति अध्यात्मवाद से प्रेरित है। अध्यात्म इसका प्राण है, कर्म करना और कर्म को चैतन्य के साथ समविष्ट करना इसका मूलाधार है। इंडोनेशियन संस्कृति त्याग, विरक्ति और उदारता को महत्त्व देती है। धन लोलुपता एवं विलासिता से सदैव दूर रहने की सलाह देती है। हमारी यह संस्कृति अखिल ब्रह्मांड के समस्त प्राणियों को भगवान् का अंश मानती है। इंडोनेशियन संस्कृति के अनुसार शरीर नश्वर है और हमारा कर्मों के आधार पर आवागमन लगा रहता है, ऐसी स्थिति में यह माना जाता है कि सब जीवों में भगवान् आत्म रूप से प्रतिष्ठित होता है।

इंडोनेशियन कर्तव्यपरायणता भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि 'कर्म ही पूजा है'। यहाँ पर कर्म की व्याख्या पूजा के रूप में की गई है।

इंडोनेशिया भी हमसे प्रेरित दिखता है। भारतीय संस्कृति में समन्वय की प्रवृत्ति है, उदार एवं सहिष्णु होने के साथ-साथ यह संस्कृति ग्रहणशील है। भारत ने बाहर से आए शक, हूण, कुषाण और यूनानियों को गले लगाया और न केवल गले लगाया, बल्कि उनके साथ घुल-मिल भी गया। इंडोनेशिया में भी कमोबेश यही स्थिति थी, एक समय था, जब समूचे इंडोनेशिया में हिंदू और बौद्ध धर्मावलंबी रहते थे। 14वीं तथा 15वीं शताब्दी में मुस्लिम व्यापारियों के प्रभाव में लोगों ने मुस्लिम धर्म ग्रहण किया। उसी प्रकार 16वीं व 17वीं शताब्दी के आसपास यूरोपीय मिशनरियों द्वारा एवं उपनिवेशवादी शक्तियों के प्रभाव में ईसाई धर्म ने अपने पाँव पसार लिये और उसका परिणाम यह हुआ कि आज ईसाई धर्म दूसरा सबसे बड़ा धर्म है।

संस्कृति में सहिष्णुता और लचीलापन

सहिष्णुता इंडोनेशिया संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। दूसरों की तरह भारतीय संस्कृति ने अत्यंत कट्टरता से परहेज किया है, शायद यही कारण रहा है कि भारतीय संस्कृति में पूजा-पद्धति, रीति-रिवाज को लेकर कोई बंधन नहीं था। इसका परिणाम यह रहा कि लोगों ने परिस्थितियों के हिसाब से अपने आप को ढाल लिया।

रहन-सहन, खानपान

हमारी तरह इंडोनेशिया की संस्कृति ने अन्न को पवित्र माना है। साफ कपड़े पहनकर स्वच्छ मन-चित्त से ईश्वर को भोग लगाकर कृतज्ञता प्रकट कर खाने की आदत हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा है। कपड़ों में रंगों का अपना अलग महत्त्व है। पूजा या विवाह उत्सवों में लाल रंग के परिधानों का विशेष महत्त्व है, शुभ कार्यों में चटक रंग के कपड़ों का प्रयोग होता है। बुटीक के मनभावन डिजाइन इसी कड़ी का हिस्सा हैं।

प्रकृति प्रेम

प्रकृति के प्रति भारतीय संस्कृति सदैव से उदार रही है। भारतीय संस्कृति का अभ्युदय सघन वनों की हरीतिमा के वातावरण में हुआ। हम वृक्षों की पूजा करते हैं, कई प्रकार के वृक्षों व पत्तों का पूजा में विशेष स्थान है। इंडोनेशिया की संस्कृति में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम, अनुराग और आदर का भाव निहित है। एक ओर जहाँ बैल, हाथी, शेर, चूहा, मंदिर आदि को भगवान् की सवारी का रूप दिया गया है, वहीं दूसरी ओर साँप, कछुए, कुत्ते, गाय को पूजनीय माना जाता है।

त्याग और परोपकार

इंडोनेशिया की संस्कृति में भारत की तरह त्याग और परोपकार का बड़ा महत्त्व है। मंदिरों और मठों में यह संदेश दिया गया है कि अनुचित मार्ग पर चलना, अनुचित कामना, वासना और इच्छा हर व्यक्ति के लिए वर्जित है। ऐसी मान्यता है कि इससे मनुष्य सांसारिक मोहमाया के बंधन में बँध जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार परोपकार ही मानव जीवन का आधार है। अपनी कुंठाओं और दमित इच्छाओं का परित्याग कर हमें परोपकार करना चाहिए।

अनेकता में एकता

इंडोनेशिया विविधता से भरा हुआ देश है तथा यहाँ की संस्कृति ने देश

परंपरागत वेशभूषा में दंपती

को एकता के सूत्र में बाँध रखा है। यहाँ की संस्कृति हमें आत्मा के आधार की बात सिखाती है। लोग एक-दूसरे के संग परस्पर प्रेम, सौहार्द, सहानुभूति और मातृभाव से जुड़े हैं। विविध प्रांत, जाति, धर्म, परंपरा, बोली-भाषा होने के बावजूद इंडोनेशिया एक होने की अनूठी मिसाल देता है, अनेकता में एकतावाला संदेश देता है। भिन्न-भिन्न भाषाओं, परंपराओं और धर्मों के अनुयायी समभाव व परस्पर प्रेम के माध्यम से वैभवशाली इंडोनेशिया हेतु प्रयासरत हैं।

इंडोनेशिया की अर्थव्यवस्था

पिछले कुछ दशकों से इंडोनेशिया गणराज्य दक्षिण-पूर्व एशिया और ओशनिया में स्थित एक महत्त्वपूर्ण अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। देश की जमीनी सीमा पापुआ, न्यूगिनी, पूर्वी तिमोर और मलेशिया के साथ मिलती है। अन्य पड़ोसी देशों में सिंगापुर, फिलीपींस, ऑस्ट्रेलिया और भारत का अंडमान एवं निकोबार द्वीप क्षेत्र शामिल है। भारत की तरह ही इंडोनेशिया भी एक विकासशील देश है। यहाँ की मुद्रा रुपया है। यहाँ की सरकार भी गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी एवं सामाजिक और आर्थिक असमानता जैसी चुनौतियों का सामना करते देश को प्रगति के पथ पर ले जाने हेतु कृत संकल्प है।

हालाँकि व्यापक सुधारों के दृष्टिगत इसके बेहतर होने की व्यापक संभावना है। यहाँ का मानव विकास सूचकांक 108वें स्थान पर है। 17 अगस्त, 1945 को नीदरलैंड से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस देश में एक मिश्रित अर्थव्यवस्था विकसित हुई। दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में इंडोनेशिया के अनुमानित सकल घरेलू उत्पाद का मुख्य हिस्सा लगभग 46 प्रतिशत उद्योग से, फिर 37 प्रतिशत सेवा से और 17 प्रतिशत कृषि से आता है। विश्व के शीर्ष 30 निर्यातक देशों में शामिल इंडोनेशिया अपने विविध संसाधनों से एशिया की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में शामिल है। इंडोनेशिया से तेल, गैस, प्लाईवुड, रबड़, कोयला, मशीनरी उपकरण, रसायन, ईंधन, समुद्रीय उत्पाद एवं खाद्य पदार्थ निर्यात किए जाते हैं। देश की अर्थव्यवस्था के समक्ष उथल-पुथल से भरा इतिहास है। इंडोनेशिया की आर्थिकी के समक्ष उत्पन्न अवरोधों के विषय में सोचते हुए मुझे लगा कि वहाँ भी भ्रष्टाचार, प्राकृतिक आपदाएँ, सुनामी लहरों की विनाशलीला, लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया से उत्पन्न चुनौतियाँ, बढ़ती जनसंख्या का आधारभूत संरचना पर बोझ एवं वैश्विक मंदी आदि शामिल हैं, लेकिन प्रसन्नता का विषय है कि इंडोनेशिया इन चुनौतियों से निपटने के लिए कारगर कदम सही दिशा में उठा

मिश्रित अर्थव्यवस्था से नई चुनौतियों का मुकाबला

रहा है। भले ही आज अमेरिका एवं चीन विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं का नेतृत्व कर रहे हों, पर आनेवाले दशक में विश्व परिदृश्य तेजी से बदल सकता है। भारत, ब्राजील और इंडोनेशिया सरीखे देश विकसित देशों को टक्कर देते नजर आएँगे। विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में शुमार इंडोनेशिया की अर्थव्यवस्था 1074 बिलियन डॉलर है।

यहाँ की विकास दर पाँच के आसपास है। इंडोनेशिया के लगभग 20 प्रतिशत लोग इंटरनेट का प्रयोग करते हैं, जो कि दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है और यहाँ की एकल राष्ट्रीय आय 2.929 ट्रिलियन डॉलर है। मेरा मानना है कि जी-20 देशों में शुमार इंडोनेशिया देश की अर्थव्यवस्था के लिए व्यापक संभावना है। यह इसलिए, क्योंकि व्यापक प्राकृतिक संसाधनों के साथ इस देश में एक तेजी से बढ़ता मध्यम आय वर्ग है। यह वर्ग एक ओर आपको एक बड़ा उपभोक्ता आधार देता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु कुशल मानव संसाधन उपलब्ध कराता है। आज आसियान और जी-20 देशों में इंडोनेशिया प्रमुख भूमिका निभाता है।

भविष्य की संभावनाएँ

आसियान देशों में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में इंडोनेशिया की आर्थिक गति वर्ष 2012 में 06 प्रतिशत की विकास दर से बढ़ती हुई आगे बढ़ी। इंडोनेशिया की विकास दर लगभग 05 प्रतिशत है। पिछले 10 वर्षों में एक करोड़ से अधिक जनसंख्या को गरीबी रेखा से बाहर निकाला गया है, जो कि मौजूदा परिस्थितियों में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इंडोनेशिया की आर्थिकी का मुख्य आधार कमोडिटीज का निर्यात रहा है, परंतु कमोडिटीज के वैश्विक स्तर पर गिरते स्तर को देखते हुए इंडोनेशिया ने उद्योग, पर्यटन और सेवा के क्षेत्र में अन्य उद्योगों को बढ़ावा दिया है, जिसका सार्थक परिणाम निकलकर सामने आने लगा है। आज इंडोनेशिया सेवा क्षेत्र एवं पर्यटन क्षेत्र में एक आदर्श गंतव्य के रूप में स्थापित हो रहा है।

मेरी विश्वविद्यालय में अनेक बुद्धिजीवी लोगों से मुलाकात हुई, जिससे

इंडोनेशिया : उद्योगों की बढ़ती भूमिका

मुझे ज्ञात हुआ कि सरकार के प्रयासों से विश्व की 18वीं बड़ी इंडोनेशियन अर्थव्यवस्था वर्ष 2030 तक विश्व की 6 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शुमार होने के लिए कृतसंकल्प है। जैसा कि मैंने पूर्व में कहा है कि इंडोनेशिया की आर्थिकी का सबसे उज्ज्वल पक्ष यह है कि भारत की ही तरह यह भी बड़ा उपभोक्ता आधारवाला देश है। देश की अत्यधिक खपत के दृष्टिगत विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए यह देश अत्यंत महत्त्वपूर्ण और आकर्षक बाजार है। फिर आसियान का क्षेत्रीय नेटवर्क भी अधिक अवसर उपलब्ध कराता है।

इंडोनेशिया की आर्थिकी का मुख्य आधार कृषि उद्योग और सेवा क्षेत्र रहा है। अगर हम पिछले पाँच दशकों का आकलन करें तो वर्ष 1965 में कृषि क्षेत्र 51 प्रतिशत के साथ शीर्ष पर था, जबकि अब यह क्षेत्र घटकर केवल 14 प्रतिशत रह गया है। अगर हम इसकी भारत से तुलना करते हैं तो देखते हैं कि हमारे कृषि क्षेत्र का योगदान भी पिछले वर्षों में सीमित हुआ है। वर्ष 1965 से उद्योग क्षेत्र का योगदान 13 प्रतिशत था, जो अब लगभग 50 प्रतिशत तक पहुँच चुका है। सेवा क्षेत्र 35–36 प्रतिशत के आसपास स्थिर है, हालाँकि 1995–96 के दौरान इस क्षेत्र ने बढ़ोतरी दर्ज की थी। विश्व बैंक के मानकों के अनुसार वर्ष 2009 में 14 प्रतिशत से थोड़ी अधिक जनसंख्या गरीबी की रेखा के ऊपर थी, जबकि आज यह प्रतिशत 11 के करीब है। पिछले पाँच-छह सालों में देश के विदेशी मुद्रा भंडार में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। 66.1 बिलियन यूएस डॉलर से यह राशि आज 127 बिलियन यूएस डॉलर हो

बैंक ऑफ इंडोनेशिया : आर्थिक प्रगति के बढ़ते कदम

गई है। भारत में आर्थिक सुधार हेतु कमोबेश ऐसे कदम उठाए गए हैं।

वर्ष 2014 अक्तूबर में राष्ट्रपति जो.के. विडोडो ने नई ऊर्जा, नए राजनीतिक मंतव्य और नई नीतियों के साथ इंडोनेशिया की बागडोर सँभाली है। उनके कुशल नेतृत्व द्वारा देश के सभी राज्यों को सशक्त करने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार द्वारा मध्यम विकास योजना 2015-20 के माध्यम से विकास को गति दी जा रही है। देश में ईंधन पर दी जाने वाली रियायत को खत्म कर सरकार ने आर्थिक सुधारों के प्रति अपनी गंभीरता का परिचय दिया है।

मुझे कई बार इस बात का अहसास होता है कि कई मायनों में भारत और इंडोनेशिया की आर्थिक चुनौतियाँ एक समान-सी हैं और उन चुनौतियों से लड़ने के लिए हमारे पास अवसर भी समान हैं। एक बड़ा बाजार, एक बड़ा प्राकृतिक संसाधन युक्त देश, विविधता में एकतावाला सांस्कृतिक एकता के परिप्रेक्ष्य में समृद्ध राष्ट्र, बड़ा क्षेत्रीय नेटवर्क एवं राजनीतिक स्थिरता के कारण हमारा भविष्य उज्ज्वल है। दोनों देश जनतांत्रिक विविधता में एकता, कई भाषाएँ, बोलियाँ, धर्म, संप्रदाय, बेरोजगारी, गरीबी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के उन्नयन जैसी मूलभूत समस्याओं से जूझ रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो

चुनौतियाँ तो काफी हैं, लेकिन उनसे निपटने हेतु संसाधनों की नितांत कमी है। यहाँ पर यह कहना भी उपयुक्त होगा कि दोनों देशों के समक्ष अपार संभावनाएँ भी हैं। संसाधनों को संभावनाओं में बदलना असंभव तो नहीं, किंतु मुश्किल अवश्य है, इन मुश्किलों को आसान करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति परम आवश्यक है। भारत-इंडोनेशिया के मौजूदा नेतृत्व से न केवल दोनों देशों की जनता को, बल्कि पूरे विश्व को बड़ी उम्मीदें हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि ढाँचागत अवस्थापना की कमी पूरी करने के लिए अगले पाँच वर्षों में इंडोनेशिया को 500 बिलियन डॉलर के निवेश की आवश्यकता है, इस क्रम में निजी क्षेत्र को निरंतर मजबूत किए जाने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य सर्वे के अनुसार, स्वास्थ्य क्षेत्र में बड़े निवेश की आवश्यकता है। देश के लगभग एक-तिहाई बच्चे समुचित विकास की समस्या से जूझ रहे हैं। देश को 8-9 प्रतिशत की विकास दर से आगे बढ़ाने हेतु व्यापक कर सुधार करने होंगे और जी.डी.पी. कर अनुपात भी ठीक करना होगा।

□

इंडोनेशिया का इतिहास

इंडोनेशिया का इतिहास अत्यंत समृद्ध है। अगर हम जावा मैन के जीवाश्म को आधार मानें, तो इंडोनेशिया का इतिहास 15 से 18 लाख वर्ष के पुरातन युग को इंगित करता है। वर्ष 1891 में होमो इरेक्ट्स की जो खोज हुई, वह होमिनिड की विलुप्त प्रजाति मानी जाती है, जिसके जीवाश्म 70,000 वर्ष पूर्व तक पाए गए थे। कहा जाता है कि वे विलुप्त हो गए और उनके विलुप्त होने का कारण केवल उनकी सुस्त प्रकृति थी। फ्लोरस द्वीप के 'Hobbits' कम होमो फ्लोरोसेंसिस का सटीक टैक्सोनोमिक प्लेसमेंट अभी भी बहस का हिस्सा बना हुआ है। वैज्ञानिक अभी भी अपने-अपने मतों पर कायम हैं। हाँ, यह जरूर लगता है कि फ्लोरस मैन 10,000 साल पहले विलुप्त हो गए थे।

1000 ईसा पूर्व वियतनाम और दक्षिणी चीन में पैदा हुई दोंगसन संस्कृति इंडोनेशिया में फैली हुई मानी जाती है, जिसमें चावल की बढ़ती तकनीकें, पति कौशल, भैंसद बलिदान, अनुष्ठान, काँस्य कास्टिंग, मेगालिथ बनाने की परंपरा और इकत बुनाई विधियों को लाया जा रहा है। इनमें से कुछ प्रथाएँ सुमात्रा के बटाक क्षेत्रों, सुलावेसी में ताना तोराजा, कालीमंतन के कुछ हिस्सों और नुसा तेंगारा में आज भी जीवित हैं। 700 ईसा पूर्व तक इंडोनेशिया के स्थायी गाँवों के साथ बिखरे जीवन के स्पष्ट संकेत मिले हैं। ये प्रारंभिक इंडोनेशियाई एनिमिस्ट थे, जो मानते थे कि सभी वस्तुओं में जीवन शक्ति या आत्मा है। उनका मत था कि मेरे पूर्वजों की आत्माओं को सम्मानित किया जाना चाहिए था, क्योंकि वे अभी भी जीवित रहने और प्राकृतिक घटनाओं

बेजोड़ स्थापत्य कला का देश : इंडोनेशिया

को प्रभावित करने में मदद कर सकते हैं, जबकि दुष्ट आत्माओं को प्रसाद और समारोहों के साथ शांत किया जाना चाहिए। चूँकि लोगों को पुनर्जन्म में विश्वास था, इसलिए अगली दुनिया में उपयोग के लिए हथियारों और बरतनों को कब्रिस्तान में छोड़ दिया गया था। सुलावेसी का 'ताना तोराजा' इसी विश्वास की परिणति है।

पहली शताब्दी तक छोटे साम्राज्य, छोटे सरदारों के अधीन गाँवों के संग्रह से थोड़ा अधिक, जावा में विकसित हुए। द्वीप का लगातार गरम तापमान, भरपूर बारिश और ज्वालामुखीय मिट्टी चावल की खेती के लिए आदर्श थी। इससे यह समझा जा सकता है कि क्यों जावा में रहनेवाले लोगों ने अन्य द्वीपों की तुलना में एक से अधिक सामंती समाज विकसित किया, वैसे भी शुष्क क्षेत्र चावल की खेती के लिए उपयुक्त है, इसी क्रम में यह बताने की नितांत आवश्यकता है कि इंडोनेशिया में हिंदू-बौद्ध धर्म किस रास्ते से कहाँ-कहाँ होते हुए कैसे पहुँचे, यह निश्चित नहीं है। एक सिद्धांत से पता चलता है कि विकासशील अदालतों ने आध्यात्मिकता और अनुष्ठान पर सलाह देने के लिए भारत से ब्राह्मण पुजारियों को आमंत्रित किया, ये ब्राह्मण

पुजारी संभवत: दक्षिण भारत के क्षेत्र से यहाँ आए होंगे। उड़ीसा से इंडोनेशिया का पुरातन संबंध संभवत: इस बात को इंगित करता है कि इसी क्षेत्र से समुद्री मार्ग से लोग इंडोनेशिया आए होंगे। डी.एन.ए. अध्ययनों के मुताबिक ताइवान से आनेवाले 4,000 साल पहले अधिकांश आधुनिक इंडोनेशियाई लोगों के पूर्वज इन द्वीपसमूहों में पहुँचे।

अगर हम इंडोनेशिया के प्रारंभिक काल पर दृष्टिपात करें तो यह मालूम होता है कि प्रारंभिक इंडोनेशिया में भारत के व्यापारियों का प्रभाव हिंदू साम्राज्य जावा और सुमात्रा पर 300 ईसा पूर्व के रूप में उभरा। प्रारंभिक शताब्दी तक, बौद्ध शासकों ने भी उन द्वीपों के क्षेत्रों को नियंत्रित किया। अंतरराष्ट्रीय पुरातात्त्विक टीमों के प्रयोगों में कठिनाई के कारण इन शुरुआती साम्राज्यों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। इतने पुराने समय के साक्ष्य जुटाने अपने आप में बड़ी चुनौती है। 7वीं शताब्दी के दौरान श्रीविजया के

उपनिवेशवादी युग

हिंदू-बौद्ध साम्राज्य ने सुमात्रा में अपना प्रभुत्व कायम किया। अपनी दक्षिण-पूर्व एशिया में अधिकांश व्यापार को नियंत्रित करने में सक्षम यह पहली प्रमुख इंडोनेशियाई वाणिज्यिक समुद्री शक्ति थी। अरब, फारस और भारत के व्यापारियों ने चीन और स्थानीय उत्पादों के सामान के बदले, श्रीविजया के तटीय शहरों में अपने सामान को बेचना आरंभ किया। 7वीं सदी से चला यह व्यापार सदियों तक चलता रहा। मैं यहाँ पाठकों को बताना चाहता हूँ कि इस दौरान अत्यंत वैभवशाली साम्राज्य की स्थापना हुई।

8वीं और 10वीं सदी के मध्य जावा में बौद्ध 'शैलेंद्र वंश' और हिंदू 'मातरम वंश' का विकास हुआ, जबकि श्रीविजय की संपत्ति के व्यापार के कारण वृद्धि हुई, जावा के साम्राज्यों, जैसे मातरम (जब जो सोलो के क्षेत्र में) की समृद्धि का कारण मानव श्रम था और कृषि समाज के रूप में विकास था। इन साम्राज्यों ने भारतीय प्रभावों को अवशोषित कर दिया और बोरोबुदुर में बौद्ध स्मारक प्रबंधन के हिंदू मंदिरों जैसी शानदार संरचनाओं को छोड़ दिया। ये संरचनाएँ आज के युग में भी सबको दाँतों तले अंगुली दबाने पर मजबूर कर देती हैं।

मन में प्रश्न उठता है कि कैसे इतने पुरातन युग में 10वीं शताब्दी के अंत में, मातरम साम्राज्य रहस्यमय तरीके से अस्वीकार कर दिया गया। सत्ता का केंद्र मध्य से पूर्वी जावा में स्थानांतरित हो गया और यह एक ऐसा समय था, जब हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म को समेकित किया गया था और जावा की संस्कृति की छाप देखने को मिलने लगी। इसके पश्चात् मजापहित साम्राज्य इंडोनेशिया में 1294 से सन् 1500 तक चला, साम्राज्य के 1294 के उदय तक साम्राज्यों की एक श्रृंखला चल रही थी, जो 1350 से 1389 तक हयाम वरुक के शासनकाल में प्रमुखता से बढ़ी। इसके क्षेत्रीय विस्तार का शानदार श्रेय सैन्य कमांडर गजह मदा को दिया जा सकता है, जिसने राज्य पर नियंत्रण का दावा किया। द्वीपसमूह का अधिकांश हिस्सा छोटे साम्राज्यों पर आधारित था। 1389 में हैयम वरुक की मृत्यु के बाद साम्राज्य में लगातार गिरावट आई।

इंडोनेशिया में इस्लाम

इंडोनेशिया में पाए गए पहले इस्लामी शिलालेख 11वीं शताब्दी के हैं, जो इस बात का संकेत देते हैं कि मजापहित राज्य में मुसलमान हो सकते हैं। इस्लाम वास्तव में पहले उत्तरी सुमात्रा में था, जहाँ अरब व्यापारी 13वीं शताब्दी तक बस गए थे। 15वीं और 16वीं सदी से, इंडोनेशियाई शासकों ने इस्लाम को राज्य धर्म बना दिया। हालाँकि यह इंडोनेशिया के अधिकांश हिस्सों में होनेवाले हाइब्रिड धर्म की उत्पत्ति करने के लिए हिंदू धर्म और एनिमिस के मौजूदा मिश्रण पर अतिरंजित था। 15वीं शताब्दी तक मेलका का व्यापार साम्राज्य (मलय प्रायद्वीप पर) अपनी शक्ति की ऊँचाई तक पहुँच रहा था, जिसने इस्लाम धर्म को गले लगा लिया था। इसके प्रभाव ने द्वीपसमूह के माध्यम से इस्लाम के विस्तार को मजबूत किया।

1500 के दशक के आरंभ से मजापहित साम्राज्य के पतन के समय

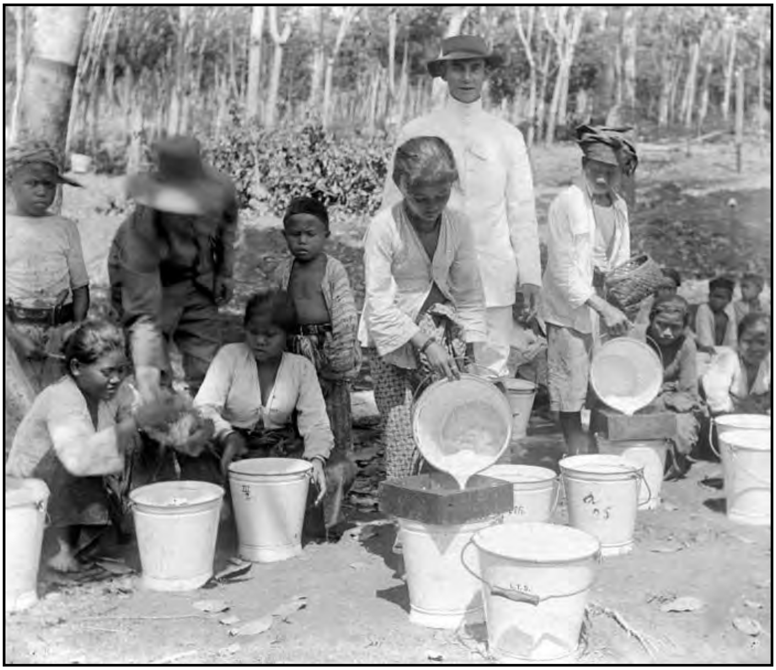

उपनिवेशवादी युग के मजदूर

तक, इसके कई उपग्रह साम्राज्यों ने स्वयं को स्वतंत्र इस्लामी राज्य घोषित कर दिया था। उनकी अधिकांश संपत्ति मसाले के व्यापार से अर्जित हुई। इस्लाम द्वीपसमूह के व्यापार मार्गों का अवलोकन करने पर यह बात सामने आती है कि आवागमन के रास्तों पर बसे शहरों में इस्लाम तेजी से फैला। गरीब लोगों की सहायता कर और विवाह संबंध से इस्लाम को लोकप्रिय बनाने में मदद मिली। 16वीं शताब्दी के अंत तक, सुलावेसी पर एक नई समुद्री शक्ति उभरी।

औपनिवेशिक इंडोनेशियन, पुर्तगाली ने सोलहवीं शताब्दी में इंडोनेशिया के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण कर लिया, लेकिन 1602 में शुरू होनेवाले मसाले के व्यापार पर अधिक धनवान डचों ने, उद्योगपतियों ने अपना प्रभाव जमाना प्रारंभ किया। पुर्तगाल पूर्वी तिमोर तक ही सीमित था। राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता ने 20वीं शताब्दी की शुरुआत में, राष्ट्रवाद डच ईस्ट इंडीज का रूप ले लिया। 1942 के मार्च में जापानियों ने इंडोनेशिया पर कब्जा कर लिया। शुरुआत में मुक्तिदाताओं के रूप में स्वागत किया गया, जापानी क्रूर और दमनकारी थे, इंडोनेशिया में राष्ट्रवादी भावनाओं को उत्प्रेरित करते थे।

जापानी शासन

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक जापानी साम्राज्य ने डच ईस्ट इंडीज पर कब्जा कर लिया और यह कब्जा 1945 सितंबर तक चलता रहा। इंडोनेशिया के इतिहास में यह समय अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा। यूरोपीय परिदृश्य भी तेजी से बदल रहा था। जर्मन लोगों ने डच साम्राज्य पर कब्जा कर लिया था। इस कारण जापानी सेना ने आसानी से डच ईस्ट इंडीज पर कब्जा कर लिया। इंडोनेशिया के लोगों ने भी जमकर जापानी सेना की सहायता की और डच सेना को खदेड़ने में सफलता पाई। डच साम्राज्य के लिए यह पहली चुनौती थी। इस दौरान अच्छी बात यह थी कि डच लोगों के विपरीत जापानियों ने इंडोनेशिया देश के नागरिकों को शिक्षा, सैन्य प्रशिक्षण एवं राजनीतिक प्रशिक्षण दिया, जिससे उनके अंदर राष्ट्रवाद की भावना का जन्म हुआ।

जापान की हार के बाद, डच ने अपनी सबसे मूल्यवान कॉलोनी में लौटने की कोशिश की। इंडोनेशिया के लोगों ने 1949 में यू.एन. सहायता के साथ पूर्ण स्वतंत्रता हासिल करने के लिए चार साल का स्वतंत्रता युद्ध शुरू किया। इंडोनेशिया के पहले दो राष्ट्रपतियों, सुकर्णो (आर 1945-1967) और सुहार्तो (आर 1967-1998) स्वाधीन थे, जिन्होंने सत्ता में रहने के लिए सेना पर भरोसा किया था। 2000 से, हालाँकि इंडोनेशिया के राष्ट्रपति को उचित रूप से स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के माध्यम से चुना गया। इंडोनेशिया के स्वाधीनता आंदोलन में इंडोनेशिया की 'वहासा' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अपने प्रवास के दौरान मैंने यह पाया कि इस भाषा की इंडोनेशिया को एक सूत्र में पिरोने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

इंडोनेशियाई मलय के लिए 20वीं शताब्दी का नाम है। इस बात पर निर्भर करते हुए कि आप एक भाषा को कैसे परिभाषित करते हैं और आप इसकी संख्याओं को किस प्रकार गिनते हैं, आज मलय-इंडोनेशियाई दुनिया की भाषाओं के बीच छठे या सातवें स्थान पर है। बोली-भाषा भिन्नताओं के साथ यह इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और ब्रुनेई के राज्यों में 200 मिलियन से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। यह पूर्वी तिमोर में थाईलैंड के दक्षिणी प्रांतों में और हिंद महासागर में ऑस्ट्रेलिया के कोकोस केलिंग द्वीप समूह के मलय लोगों में भी एक महत्त्वपूर्ण स्थानीय भाषा है। यह दक्षिणी फिलीपींस के सुलू क्षेत्र के कुछ हिस्सों में समझी जाती है और इसका निशान श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका और अन्य स्थानों में मलय वंश के लोगों में पाया जाता है।

1928 में इंडोनेशियाई राष्ट्रवादी आंदोलन ने इसे भविष्य के राष्ट्र की राष्ट्रीय भाषा के रूप में चुना। इसका नाम 'बहासा इंडोनेशिया' में बदल दिया गया था, शाब्दिक रूप से 'इंडोनेशिया की भाषा (बहासा)।' हम अंग्रेजी में 'इंडोनेशियाई' भाषा कहते हैं, इसे 'बहासा' कहना सही नहीं है।

यहाँ पर मैं अपने पाठकों को स्पष्ट कराना चाहता हूँ कि इंडोनेशियाई भाषा अंग्रेजी से भी दूरस्थ रूप से संबंधित नहीं है, न ही यह न्यूगिनी, ऑस्ट्रेलिया

की आदिवासी भाषाओं या चीन की चीनी-तिब्बती भाषाओं और महाद्वीपीय दक्षिण-पूर्व एशिया की अंतर्देशीय भाषाओं से संबंधित है। इंडोनेशियाई, ऑस्ट्रियाई भाषा परिवार से संबंधित है, जो कि दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशांत द्वीपों में फैली हुई है। इस परिवार की अन्य भाषाओं में मालागासी (अफ्रीका के तट से मेडागास्कर पर बोली जाती है), जावानीज (सम्मानित भाषण स्तर की असाधारण रूप से विस्तृत प्रणाली के लिए प्रसिद्ध), बालिनीज (बाली के सुंदर हिंदू द्वीप की भाषा), तागालोग या फिलिपिनो (फिलीपींस की राष्ट्रीय भाषा) और माओरी (न्यूजीलैंड के स्वदेशी पॉलिनेशियन लोगों की भाषा)। कुछ इंडोनेशियाई शब्दों को अंग्रेजी शब्दकोश से लिया गया है, उनमें से आम शब्द गोंग, ओरंगौतंग और सरंग, जबकि कम आम शब्द धान, सागो और कापोक हैं। वाक्यांश 'टू रन अमोक' का अर्थ इंडोनेशियाई क्रिया अमुक (लोगों को अंधाधुंध मारनेवाले नियंत्रण से बाहर निकालने के लिए) से आता है। मुझे विभिन्न भाषाओं के एक-दूसरे में व्यापक प्रयोग देखकर निश्चित रूप से प्रसन्नता होती है। आखिर भाषा अभिव्यक्ति के संबंध में है और जिस प्रकार भी स्पष्टता से अभिव्यक्ति हो पाए, वही भाषा की सफलता है। चीनी के विपरीत, इंडोनेशियाई एक टोनल भाषा नहीं है। जहाँ तक उच्चारण जाता है, इंडोनेशियाई, हालाँकि आसान से दूर है, अंग्रेजी वक्ताओं के लिए यह भाषा अपेक्षाकृत सरल है। इसे कभी-कभी 'Agglutinative' के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसका अर्थ है कि इसमें उपसर्ग और प्रत्यय की एक जटिल श्रृंखला है, जो मूल शब्दों से जुड़ी होती है। इंडोनेशियाई भाषा की ये सारी विशेषताएँ प्रोफेसर यूलिया ने बताईं। मुझे लगा, इस दृष्टि से इंडोनेशियाई संस्कृत भाषा के काफी निकट है, जहाँ पर प्रत्यय, उपसर्ग आदि लगाकर एक ही शब्द का अलग-अलग अर्थों में प्रयोग किया जा सकता है।

इंडोनेशिया में राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद की भावना से अभिप्राय अपने राष्ट्र के प्रति वफादारी, उसकी संस्कृति, उसके इतिहास के प्रति समर्पण और उसके सामाजिक एवं आर्थिक,

सांस्कृतिक विकास से जुड़ी हुई उसकी अपेक्षाओं के लिए कार्य करने से है। जापान का इंडोनेशिया के लोगों के भीतर राष्ट्रवाद की भावना जाग्रत् करने का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

विश्व के कई देशों की तरह बीसवीं सदी के मध्य में इंडोनेशिया में राष्ट्रवाद की एक लहर देखी गई। संयोग से वर्ष 1925 में त्रिवर्षीय वोकेशनल शिक्षा का प्रचार-प्रसार एवं 1840 में 20 लाख विद्यार्थियों के सेकेंडरी स्कूल में पंजीकरण ने साक्षरता को तो बढ़ाया ही, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने में भी सफलता पाई। इंडोनेशिया संभ्रांत वर्ग के लोगों को शिक्षा से जोड़कर भारत की तरह लिपिक वर्ग के लिए तैयार करने की कवायद की।

जब जापानियों ने 1945 में आत्मसमर्पण कर दिया, तो ईस्ट इंडीज के राष्ट्रवादियों ने डचों की औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकने के अवसर का भरपूर लाभ उठाया और इंडोनेशिया के स्वतंत्र राज्य की घोषणा की। कम्युनिज्म इस्लाम राष्ट्रवादियों ने सुकर्णो और मोहम्मद हट्टा के नेतृत्व में

सशस्त्र संघर्ष का साक्षी इंडोनेशिया

संघर्ष किया। स्कूल-शिक्षा और थियोसोफिस्ट के पुत्र सुकर्णो देश के लोगों की विचारधारा से भिज्ञ थे। मोहम्मद हट्टा केंद्र और निर्वासन झेल चुके सुकर्णो ने मोहम्मद हट्टा के सहयोग से अपने संघर्ष को बढ़ाया, दोनों ने जापानियों के साथ सहयोग किया और जापानी समर्थित इंडोनेशियाई सेना को व्यवस्थित करने में मदद की। जापानी हथियार से लैस, राष्ट्रवादियों ने डच के खिलाफ एक सशस्त्र संघर्ष किया, जिसने ईस्ट इंडीज को पुन: प्राप्त करने के लिए शक्तिशाली आंदोलन छेड़ा। डच सैन्य बलों ने जावा और सुमात्रा में काफी प्रतिवाद किया, जिसकी संयुक्त राष्ट्र में भयंकर आलोचना हुई और अंतत: संयुक्त राज्य अमेरिका ने वार्त्तालाप समाधान के लिए दबाव डाला।

आखिरकार अगस्त 1949 में 'द हेग' में डच प्रधानमंत्री विल्म ड्रीस की अध्यक्षता में 120 प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ। राष्ट्रवादी प्रतिनधियों का कुशलतापूर्वक नेतृत्व मोहम्मद हट्टा ने किया था। 2 नवंबर को विचार-विमर्श के दस हफ्तों बाद, सम्मेलन एक समझौते पर पहुँचा, जिसने डच संप्रभुता को संयुक्त राज्य में स्थानांतरित कर दिया, नीदरलैंड की रानी जूनियाना के साथ एक नई नीदरलैंड-इंडोनेशियाई संघ के शीर्ष के रूप में सुकर्णो इंडोनेशियाई राष्ट्रपति चुने गए। 27 दिसंबर, 1949 को आजादी के औपचारिक रूप से मनाए जाने से पहले डच ने हजारों राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया था। 2 लाख वर्ग किलोमीटर भूमि के द्वीपसमूह पर 78 मिलियन की आबादी के साथ नया इंडोनेशिया, दक्षिण-पश्चिम प्रशांत में एक महत्त्वपूर्ण कारक बन गया। सौभाग्य से इस राष्ट्र के साथ शुरू से ही भारत के अत्यंत प्रगाढ़ संबंध रहे और संबंधों की यह प्रगाढ़ता अब सामरिक निकटता में परिवर्तित होने लगी है, जो दोनों देशों के लोगों के लिए संतोष का विषय है।

□

इंडोनेशिया में शिक्षा

इंडोनेशिया एवं भारत में शिक्षा व्यवस्था कई मायनों में एक समान है। उपनिवेशवादी शासन का प्रभाव भी दोनों देशों की शिक्षा पद्धति में देखने को मिलता है, जहाँ ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव सीधा भारतीय शिक्षा व्यवस्था में देखने को मिलता है, वहीं यूरोपीय, विशेषकर डच साम्राज्य का प्रभाव भी इंडोनेशिया की शिक्षा व्यवस्था पर नजर आता है। योगयकार्ता जाने से पूर्व इंडोनेशिया दूतावास के सांस्कृतिक शिक्षा प्रभारी, डॉ. इवान प्रोनोता जब मुझसे मिलने आए तो उनके द्वारा मुझे बताया गया कि अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डी.सी. में शिक्षा और ज्ञान की हिंदू देवी 'सरस्वती' की 16 फीट की मूर्ति इंडोनेशिया द्वारा स्थापित की गई है।

वाशिंगटन में स्थापित हिंदू देवी माँ सरस्वती की प्रतिमा

मुझे बताया गया कि कमल के फूल पर विराजमान माँ सरस्वती की यह प्रतिमा वहाँ के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। संयोग की बात है कि व्हाइट हाउस से केवल एक मील की दूरी पर स्थित इस प्रतिमा के पास ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा भी लगी हुई है। उनके इस कथन से मुझे वहाँ की शिक्षा पर पुरातन अजर-अमर संस्कृति के प्रभाव का भान हो गया। मुझे यह जानकर बेहद उत्सुकता व हर्ष हुआ कि विश्व के सबसे बड़े मुस्लिम राष्ट्र की संस्कृति केवल तीन प्रतिशत आबादीवाले हिंदू सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व करती है। मुझे बताया गया कि मूर्ति का चयन किसी धार्मिक आधार पर नहीं, बल्कि उसके प्रतीकात्मक मूल्यों पर किया गया है, जो कि व्यापक सहयोग के तहत इंडोनेशिया व अमेरिका के संबंध, विशेषकर शिक्षा और लोगों के बीच संपर्क के समानांतर है। वाशिंगटन डी.सी. को दिए गए इस सांस्कृतिक उपहार के निर्माण का काम बाली के पाँच श्रेष्ठ मूर्तिकारों द्वारा किया गया। यह मूर्ति बाली की कला का सजीव चित्रण है, इसमें देवी सरस्वती के चार हाथ दरशाए गए हैं। एक हाथ में अक्षमाला तथा दोनों हाथों से वीणा बजाते हुए दरशाया गया है, जबकि एक हाथ में पांडुलिपि है।

इंडोनेशिया के प्रवक्ता ने मूर्ति स्थापना के समय कहा कि मूर्ति हमारी अमर संस्कृति को प्रकट करती है। इससे विविधतापूर्ण समाज में आपसी समझ के महत्त्व को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

शिक्षा

इंडोनेशिया शैक्षिक मामलों में अग्रणी एशियाई देशों में शामिल है। भारत के सदृश इंडोनेशिया में शिक्षा वहाँ की सरकार की जिम्मेदारी है, शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय पूरे देश की शिक्षा व्यवस्था को नियंत्रित करते हैं। जहाँ तक इस्लामी शिक्षा का विषय है, यह शिक्षा व्यवस्था धार्मिक मामलों के मंत्रालय के अधीन है। इंडोनेशिया में सभी नागरिकों को 12 वर्ष की शिक्षा अनिवार्य है, जिसमें 6 साल की प्राथमिक शिक्षा और 3 वर्ष की

सेकेंडरी शिक्षा दी जाती है। दूर-दराज के टापुओं को छोड़ दिया जाए तो सभी के लिए शिक्षा का समुचित प्रबंध है।

प्राथमिक शिक्षा

इंडोनेशिया में 6 से 11 साल के बच्चे प्राथमिक विद्यालय में जाते हैं। 90 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय सरकारी क्षेत्र में हैं, क्योंकि यहाँ पर व्यय काफी कम होता है। कमोबेश भारत जैसी आर्थिक स्थिति होने के कारण ज्यादातार लोग अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में नहीं पढ़ा सकते। विद्यार्थी छह साल यहाँ पर लगभग सात-आठ घंटे पढ़ाई करते हैं। इस विद्यालय को 'सेकोलाह दसार' कहा जाता है। सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि इंडोनेशिया में संयुक्त राज्य अमेरिका की तरह बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए त्वरित लर्निंग कार्यक्रम बनाया गया है। मुझे बताया गया कि विद्यालय-अध्यापकों के प्रशिक्षण पर काफी ध्यान दिया जाता है। प्राथमिक विद्यालय के पश्चात् अनिवार्य शिक्षा के लिए विद्यार्थी जूनियर हाई स्कूल सेकोला, मेननगर एवं प्रतमा जाते हैं, जिसमें त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम चलता है। मुझे अच्छी बात यह लगी कि अमेरिका और यूरोप के कई देशों की तरह, प्रतिभाशाली छात्र मात्र दो वर्षों में यह पाठ्यक्रम पूरा कर सकते हैं। सारी शिक्षा इंडोनेशियन भाषा में प्रदत्त की जाती है। हाल ही में भारत के उपराष्ट्रपति श्री वैंकैया नायडूजी ने भी अपने भाषण में कहा कि 'शिक्षा मातृभाषा या राष्ट्रभाषा में ही होनी चाहिए।' इंडोनेशिया सहित दुनिया के कई लोग इस व्यवस्था को मानते हैं। मुझे लगता है कि हम भारतीयों को इससे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। इसके पश्चात् हाई स्कूल में तीन साल की पढ़ाई होती है। 'सेकोलाह मेननगाह अतास' नामक इन संस्थानों में 12 वर्ष की पढ़ाई पूर्ण होती है। हाई स्कूल के अतिरिक्त कौशल विकास के 47 कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि इंडोनेशिया में सदैव कौशल विकास को महत्त्व दिया जाता रहा है। होटल प्रबंधन, प्लास्टिक,

आधुनिक शिक्षा के बदलते आयाम : इंडोनेशिया

संगीत, क्लर्क, कृषि, वेटरनरी एवं होम साइंस के कोर्सेज आयोजित किए जाते हैं, ताकि समुचित रोजगार मिल सके। दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष विद्यालयों का प्रबंध है। इसे 'सेकोलाह लुआर बियासा' कहा जाता है।

इंडोनेशिया में विद्यार्थियों की संख्या दुनिया की चौथी बड़ी संख्या है। जहाँ प्राइमरी एवं माध्यमिक विद्यालय पूरी तरह से मुफ्त हैं, वहीं हाई स्कूल में बहुत कम शुल्क लिया जाता है।

इंडोनेशिया विश्वविद्यालय के छात्र

इंडोनेशिया में पाँच करोड़ से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, जिन्हें तीन लाख से ज्यादा अध्यापक पढ़ाते हैं। आसियान देशों के मुकाबले इंडोनेशिया का नामांकन प्रतिशत (इनरोलमेंट रेट) काफी अच्छा है। 95 प्रतिशत बच्चे प्राथमिक शिक्षा केंद्रों में जाते हैं। आसियान देशों के मुकाबले ये आँकड़े काफी अच्छे हैं। अन्य विकासशील देशों की अपेक्षाकृत इंडोनेशिया अपने शैक्षिक ढाँचे को ज्यादा सशक्त कर पाया है। भारत की तरह इंडोनेशिया को भी दूर-दराज, सीमावर्ती एवं तटीय इलाकों में शिक्षा के तंत्र की तरफ अधिक ध्यान केंद्रित किए जाने की आवश्यकता है। दूरवर्ती, सीमावर्ती एवं तटीय क्षेत्रों में ढाँचागत अवस्थापना की कमी के कारण शिक्षा प्रभावित होती है।

इस्लामिक विद्यालय

इंडोनेशिया में कुछ लोगों की आस्था अभी भी परंपरागत इस्लामिक विद्यालयों में है। ये विद्यालय विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में स्थित हैं। इन विद्यालयों में कुरान, अरबी भाषा, शरिया, इस्लामिक इतिहास और साहित्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। एक स्वागत योग्य कदम यह है कि इन विद्यालयों में गणित, विज्ञान, भूगोल की शिक्षा भी प्रदान की जाती

इस्लामिक विद्यालय की छात्राएँ

है। अन्य मुस्लिम देशों के मदरसों की अपेक्षा इंडोनेशिया के मदरसे अधिक आधुनिक हैं। भारतीय मदरसे आधुनिकता के मामले में इनसे काफी पीछे हैं। शायद यह इसलिए है कि देश के धार्मिक मामलों के मंत्रालय द्वारा इन विद्यालयों को नियंत्रित किया जाता है और उसमें पश्चिमी देशों के ज्ञान-विज्ञान को समाहित करने का पूरा तंत्र स्थापित किया जाता है। यहाँ धार्मिक शिक्षा के साथ सामाजिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का भी प्रावधान किया गया है।

इन विद्यालयों का मुख्य लक्ष्य शिक्षा के साथ-साथ अच्छे मुस्लिम नागरिकों का निर्माण करना है। परंपरागत शिक्षा के साथ इस्लामिक संस्कृति को पुष्पित एवं पल्लवित करने के उद्देश्य से ये विद्यालय अपनी डिग्रियाँ प्रदान करते हैं। छह वर्ष की शिक्षा के पश्चात् एक विशेष प्रकार की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर सर्टिफिकेट प्रदान किया जाता है। इंडोनेशिया के मदरसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली की वकालत करते नजर आते हैं और कुल मिलाकर ये इंडोनेशिया के मध्यममार्गी इस्लाम को प्रतिबिंबित करते हैं।

माध्यमिक शिक्षा

जूनियर हाई स्कूल प्रारंभिक और उच्चतर के बीच एक पुल का कार्य करता है, जो कि सीनियर हाई स्कूल की चुनौतियों का सामना कर सकता है। यह अपने छात्रों के लिए संभावित भविष्य की दिशा निर्धारित करने के लिए शिक्षकों की सहायता भी करता है। इस्लामी शिक्षा प्रणाली एक विकल्प प्रदान करना जारी रखती है।

वैकल्पिक रूप से नामांकन के लिए चुननेवाले दो अलग-अलग प्रकार के इंडोनेशियाई हाई स्कूल हैं, जो शिक्षा की दो मुख्य धाराएँ प्रदान करते हैं। इनमें से एक का उद्देश्य उन लोगों के लिए है, जो विश्वविद्यालय में जाने का इरादा रखते हैं और दूसरा उन लोगों के लिए है, जो अभी से नौकरी खोजने की योजना बना रहे हैं। अन्य युवा लोग इस्लामिक विकल्प चुनते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा

व्यावसायिक प्रशिक्षण मुख्य रूप से निजी प्रशिक्षण कॉलेजों और दाता देशों द्वारा प्रदान किया जाता है। दुर्भाग्य से यह शहरों में मुख्य रूप से हो रहा है।

उच्च शिक्षा

इंडोनेशिया में चार प्रकार के तृतीयक शिक्षा संस्थान हैं, जैसे कि पॉलिटेक्निक, अकादमी, संस्थान और विश्वविद्यालय। इनमें से कुछ राज्य नियंत्रित हैं, कुछ धार्मिक रूप से संबद्ध हैं और कुछ निजी तौर पर वित्त पोषित हैं।

सबसे पुराना इंडोनेशिया विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना 1947 में गई थी। यह प्रतिष्ठित स्थानीय ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालय है तथा मई, 2011 में यह एशिया के विश्वविद्यालयों में शीर्ष 50वें स्थान पर काबिज था।

इंडोनेशिया ने उच्च शिक्षा के मामले में काफी तरक्की की है। जहाँ वर्ष 1950 में इंडोनेशिया में कुल 10 उच्च शैक्षणिक संस्थान थे, वहीं आज वहाँ 3000 से अधिक उच्च शैक्षणिक संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। उच्च शिक्षा के मामले में अधिकतर विश्वविद्यालय निजी क्षेत्र के हैं, जबकि 42.9 प्रतिशत

विश्व स्तरीय विश्वविद्यालय

विद्यार्थियों के साथ इंडोनेशिया में संविधान औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा को मान्यता देता है। तीन स्तरों पर इंडोनेशिया की शिक्षा भारत की तरह है। शिक्षा निजी और सरकारी क्षेत्र में दी जाती है। कई संस्थाएँ नेशनल प्लस कही जाती हैं। इंडोनेशिया में आज लगभग पौने दो लाख प्राथमिक विद्यालय हैं। 50,000 के करीब जूनियर सेकेंडरी विद्यालय और तीस हजार के करीब हाई स्कूल हैं। इनमें से राष्ट्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीन एवं 16 प्रतिशत धार्मिक मामलों के मंत्रालय के अधीन हैं। पहले पूरे देश में सात प्रतिशत स्कूल प्राइवेट क्षेत्र में हैं। हिंदू एवं बौद्ध परंपराओं के अंतर्गत शिक्षा दी जाती थी। इसे 'कर्सयान' भी कहा जाता था। मुझे बताया गया है कि बौद्ध विहारों में हिंदू मंदिरों में शिक्षा दी जाती थी। अत: हम कह सकते हैं, इंडोनेशिया पुरातन समय से शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र रहा है। हाल में देश में शिक्षा के लिए 31.2 बिलियन का बजट निर्धारित किया गया है। देश में लगभग 93 प्रतिशत की साक्षरता दर है।

अंतरराष्ट्रीय शिक्षा

इंडोनेशिया में विदेशी विश्वविद्यालयों को भी कार्य करने की अनुमति दी गई है, परंतु इन संस्थानों को इंडोनेशिया के स्थानीय शिक्षा संस्थानों के साथ कार्य करने की बाध्यता है। इंडोनेशिया में लगभग 200 के करीब विश्वस्तरीय विद्यालय हैं। इन सभी अंतरराष्ट्रीय विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा के माध्यम में शिक्षा प्रदान की जाती है। इन सभी विद्यालयों में कैंब्रिज विश्वविद्यालय या अमेरिका के पाठ्यक्रमों को पढ़ाया जाता है। इन विद्यालयों की फीस भारतीय विद्यालयों की तरह काफी अधिक है। ये विद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए छात्रों को तैयार करते हैं।

निजी विश्वविद्यालय देश के कुल विश्वविद्यालयों के लगभग 97 प्रतिशत हैं, जबकि सरकारी क्षेत्र में मात्र तीन प्रतिशत संस्थान हैं, जिनमें कि कुल 57 प्रतिशत विद्यार्थी पंजीकृत हैं। इंडोनेशिया में 6000 से 10 हजार तक विदेशी छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं।

शैक्षिक उत्कृष्टता की ओर अग्रसर : इंडोनेशिया

सरकारी संस्थानों में सरकार द्वारा लगभग 80 से 90 प्रतिशत की सब्सिडी दी जाती है, जबकि निजी विश्वविद्यालय फाउंडेशन पर चलते हैं। इन संस्थानों को भारत की ही तरह अपने आर्थिक संसाधन विद्यार्थियों की फीस से जुटाने पड़ते हैं। इन विश्वविद्यालयों के अध्यापक विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य कार्यों को भी करते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों में पाठ्यक्रम सेवा शर्तों में व्यापक छूट दी गई है।

इन उच्च शिक्षण संस्थाओं में मलेशिया सहित अन्य पड़ोसी देशों से विद्यार्थी शिक्षा अर्जित करने आते हैं। इंजीनियरिंग, मेडिकल, फार्मेसी, इस्लामिक शिक्षा और कला संकाय में अधिकतर विदेशी विद्यार्थियों की रुचि देखी जाती है। गज्जा मादा विश्वविद्यालय देश के शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक है। मैंने वहाँ की डीन एवं अन्य प्रोफेसरों से मुलाकात की। मुझे इस बात की प्रसन्नता हुई कि विश्वविद्यालयों में अमेरिका एवं यूरोप की तर्ज पर विदेशी फैकल्टी को आमंत्रित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा

है। आपसी सहयोग शिक्षा और शोध के स्तर को उत्कृष्ट बनाने के लिए आवश्यक है।

विश्वविद्यालय में मैं भारत से आए उन शिक्षाविदों से भी मिला, जो कि विशेषज्ञता प्रदान करने की दृष्टि से विभिन्न संकायों में कार्य कर रहे थे। मुझे इस बात की प्रसन्नता हुई कि ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका एवं यूरोप समेत कई देशों की संकाय मंडली शैक्षिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत इंडोनेशिया में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान के क्षेत्र में आपसी सहयोग का विशेष महत्त्व ही नहीं है, बल्कि यह अनिवार्य प्रतीत होती है।

□

इंडोनेशिया के धर्म

भारत की ही तरह इंडोनेशिया भी सदियों से कई धर्म, मजहब एवं आस्थाओं का केंद्र रहा है। इंडोनेशिया के बारे में मुझे यह बात अच्छी लगी कि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता है और वह पूरी आजादी के साथ अपनी धार्मिक आस्था के अनुसार जीवनयापन कर सकता है। विकसित और समृद्ध लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करता इंडोनेशिया का हर वर्ग, हर धर्म एवं हर जाति राष्ट्र-निर्माण और उत्थान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही है।

विश्व में अनेक संस्कृतियों का, धर्मों का एवं आस्थाओं का विकास हुआ, लेकिन समय के थपेड़ों के साथ कई संस्कृतियाँ हमेशा के लिए विलुप्त हो गईं, हालाँकि कुछ संस्कृतियाँ अजर-अमर भी हैं और इन्हीं संस्कृतियों की आधारशिला पर सशक्त राष्ट्रों का निर्माण हुआ। भारत और इंडोनेशिया इसी श्रेणी में आते हैं। वही देश एवं समाज दुनिया का नेतृत्व कर सकता है, जहाँ लौकिकता, अधिभौतिकता और भोगवाद की जगह अध्यात्मवाद और आत्मत्व की भावना केंद्रित हो, जिसका मूल लक्ष्य—शांति, सहिष्णुता, एकता, सत्य, अहिंसा और सदाचरण जैसे मानवीय मूल्यों की स्थापना कर समस्त विश्व की आध्यात्मिक उन्नति करना हो, जिसमें सबके सुख के लिए एवं सबके हित के लिए कार्य करने के उद्देश्य से समस्त विश्व को अपना परिवार मानने की भावना अंतर्निहित हो। यही वजह है कि अपने सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के बल पर भारत की तरह ही इंडोनेशिया के रीति-रिवाज, संस्कृति एवं जीवन मूल्य

संस्कृति हिंदू, धर्म इस्लाम

हजारों वर्ष बाद भी अक्षुण्ण बने हुए हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी मान्यता व हमारी सोच वैज्ञानिक आधार पर प्रतिस्थापित है और पूर्ण रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर तर्कसंगत है, इसकी असंख्य विशेषताएँ हैं।

आज के युग में यह अत्यंत संतोष का विषय है कि आने वाले समय में भारत और इंडोनेशिया दोनों राष्ट्रों का भविष्य स्वर्णिम होगा। अगले दो दशकों में विश्व की श्रेष्ठ अर्थव्यवस्थाओं में शुमार ये महान् राष्ट्र विश्व शांति एवं विश्व कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा पाएँगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

किसी भी समाज या देश का इतिहास अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। देश और समाज को सही प्रकार से समझने के लिए उसके अतीत के पन्नों का अवलोकन करना आवश्यक है। इतिहास के पन्नों में अपनी विविधता से परिपूर्ण संस्कृति एवं कलाओं की छाप छोड़नेवाले संप्रदाय एवं जनजातियाँ आज के युग में मुख्यधारा के सांस्कृतिक मंचों से अपनी छाप छोड़ती नजर आती हैं। दुनिया में कुछ ही देश ऐसे हैं, जहाँ सदियों से विभिन्न जातियों, जनजातियों एवं रीति-रिवाजों के लोग रह रहे हों और अप्रवासी लोग वहाँ की सामाजिक व्यवस्था में घुल-मिल गए हों। इंडोनेशिया और भारत के संदर्भ में यह बात पूरी तरह

लागू होती है। 'अतिथि देवो भव:' से प्रेरित होकर हमने आक्रांताओं का स्वागत किया और उनमें से कई हमेशा के लिए हमारे होकर रह गए।

इंडोनेशिया में हिंदू धर्म

जकार्ता में 02 प्रतिशत के करीब हिंदू धर्मावलंबी रहते हैं। बाली राज्य की 83.5 प्रतिशत जनसंख्या हिंदू है। हिंदू धर्म इंडोनेशिया के छह प्रमुख धर्मों में शामिल है। धार्मिक मामलों के मंत्रालय के अनुसार एक करोड़ से अधिक हिंदू विभिन्न द्वीपों में रहते हैं। बाली के अतिरिक्त जावा, कालीमंतन, सुलावेसी, सुमात्रा में हिंदू धर्म के लोग रहते हैं। हिंदुओं को यहाँ वर्ष 1964 में धार्मिक मान्यता प्राप्त हुई।

भारत, बाँग्लादेश और नेपाल के पश्चात् सर्वाधिक हिंदुओं का घर इंडोनेशिया राष्ट्र माना जा सकता है। हिंदू संस्कृति का प्रभाव इंडोनेशिया जनजीवन पर देखा जा सकता है। जहाँ एक ओर 20,000 के नोट पर भगवान् गणेश का चित्र अंकित है, वहीं दूसरी ओर अमेरिका स्थित इंडोनेशिया दूतावास के प्रांगण में माँ सरस्वती की मूर्ति स्थापित की गई है। राष्ट्रीय वायुसेवा भी भगवान् विष्णु के वाहन गरुड़ के नाम से प्रेरित है। वहीं 1997 के दक्षिण-पूर्व एशियाई खेलों में हनुमानजी को प्रतीक बनाया गया था। मुझे बताया गया कि

हिंदुओं के तीन बड़े देश

इंडोनेशिया की सैन्य-सेवाओं में शक्ति के प्रतीक रामभक्त हनुमानजी के प्रति गहरी आस्था, श्रद्धा एवं सम्मान है। इंडोनेशिया का बहासा संस्कृत के 'भाषा' शब्द से निकला है। वहाँ के लोगों के नाम एवं वहाँ के स्थानों के नाम संस्कृत भाषा से ही उत्पन्न हुए हैं। मैं जितने लोगों से मिल रहा था तो मैं देख रहा था कि कहीं-न-कहीं उनका नाम संस्कृत से जुड़ा हुआ है।

महाभारत के योद्धा कर्ण के नाम पर इंडोनेशिया के प्रथम राष्ट्रपति का नाम सुकर्णो था। सु उपसर्ग इसलिए लगाया गया कि कर्ण महान् योद्धा तो था, लेकिन गलत लोगों के साथ था, इसलिए अच्छे कर्ण के रूप में 'सुकर्णो' नाम रखा गया। यहाँ तक कि इंडोनेशिया का राष्ट्रीय ध्वज, जिसे पवित्र लाल और सफेद कहते हैं, 13वीं सदी के मजापहित साम्राज्य से प्रेरणा पाता है। होटलों, भवनों के बाहर द्वारपाल, दुकानों एवं प्रतिष्ठानों के प्रांगण में भगवान् की मूर्ति इंडोनेशिया जनजीवन पर हिंदुत्व के प्रभाव को दर्शाती है। विष्णु, शिव, राम, कृष्ण, घटोत्कच एवं अर्जुन की सुसज्जित मूर्तियाँ, रामायण और महाभारत पर आधारित नृत्य नाटिकाएँ इंडोनेशिया में हिंदुत्व के प्रभाव का जीवंत रूप प्रदर्शित करती हैं। केवल बाली में ही 20,000 मंदिर हैं, जो कि अपने आप में ही आश्चर्य की बात है। भारत में उड़ीसा प्रांत में बाली यात्रा का आयोजन सात दिन तक चलता है और उड़िया नाविकों द्वारा बाली यात्रा का उत्सव हर्षोल्लास

परंपरागत नृत्य की छटा बिखेरती युवतियाँ

उदार मुस्लिम

से मनाया जाता है। हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् फादर कामिल बुल्के ने 1982 में अपने एक लेख में लिखा है, "35 साल पहले मेरे एक मित्र ने गाँव के एक मुस्लिम शिक्षक से पूछा कि आप रामायण क्यों पढ़ते हैं? तो उत्तर मिला, 'मैं अच्छा मनुष्य बनने के लिए रामायण पढ़ता हूँ।' मुझे लगता है कि अगर हम इस एक वाक्य को समझ सकें तो पूरा इंडोनेशिया इसे समझ सकता है।"

आज ऐसे समय में, जहाँ बहुरंगी भारतीय धर्म-संस्कृति को श्वेत-श्याम करने की कोशिशें हो रही हैं, ऐसे में यह अनुभूति काफी सुखद है कि सात समंदर पार हमसे हजारों मील दूर कोई हमारी संस्कृति को जीवंत रखे हुए है।

इंडोनेशिया में हिंदू परंपराओं का वहाँ के मंदिरों में बड़ा महत्त्व है। ये प्राचीनकालीन मंदिर इतने सुंदर हैं कि दर्शक अचंभे में पड़ जाते हैं। मंदिरों की स्थापत्य कला बेजोड़ है और यहाँ पर मंदिरों में चाहे तनह लोट मंदिर हो, बोरोबुदुर हो, यहाँ पर कई देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

बोरोबुदुर हो, प्रम्बानन हो या 13वीं शताब्दी में बना सिंधसरी का मंदिर, सभी अपनी भव्यता और सुंदर मूर्तियों के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं। भगवान् शंकर को समर्पित सिंधसरी मंदिर बड़ी संख्या में भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करता है। सिंधसरी शिव मंदिर में भगवान् शिव से जुड़े हुए त्योहार बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाए जाते हैं।

मध्य जावा में बना प्रम्बानन मंदिर इंडोनेशिया का सबसे बड़ा मंदिर है। यह मंदिर मुख्य रूप से भगवान् शिव, भगवान् विष्णु और भगवान् ब्रह्मा को समर्पित है। विश्व धरोहर में शामिल यह मंदिर दुनिया भर के पर्यटकों के लिए आकर्षण का मुख्य केंद्र है। मंदिर की विशेषता यह है कि इस मंदिर में त्रिदेवों

(ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के साथ-साथ उनके वाहनों, क्रमशः हंस, गरुड़ एवं नंदी के मंदिर भी हैं। यहाँ शिव मंदिर में दुर्गा, गणेश और महर्षि अगस्त्य की मूर्तियाँ भी स्थित हैं।

इस्लाम

इंडोनेशिया में इस्लाम धर्म 8वीं सदी में अरब मुस्लिम व्यापारियों के माध्यम से आया, हालाँकि काफी विद्वान् उससे पहले इस्लाम के प्रभाव की बातें करते थे। उसके बाद इस्लाम को सर्वप्रथम व्यापारी वर्ग ने अपनाया। स्थानीय प्रतिष्ठित समुदाय एवं शासकों ने जब इस धर्म को अपनाया तो अन्य लोगों ने भी उनके प्रभाव में आकर इस्लाम धर्म को कबूलना स्वीकार किया। मुस्लिम व्यापारी वर्ग ने स्थानीय महिलाओं से विवाह करना प्रारंभ किया। ऐसा माना जाता है कि व्यापारी लोगों, जो कि व्यापारिक प्रतिष्ठानोंवाले शहरों में रहते थे, ने पहले इस्लाम धर्म को अंगीकार किया। उत्तरी सुमात्रा से शुरू हुई इस्लामीकरण की यह लहर उत्तर-पूर्व मलाया, ब्रूनेई, दक्षिण-पश्चिम फिलीपींस, पूर्व और मध्य जावा एवं मलाका क्षेत्र में फैल गई। समुंद्रा पसाई,

धार्मिक जुलूस

दमक सल्तनत मतराम, तरनात तथा तिदोर मुस्लिम सल्तनतों ने 13वीं सदी के अंत तक अपने आप को पूरी तरह से स्थापित कर लिया था। 17वीं तथा 18वीं सदी में पूर्वी द्वीपों में स्थित लोगों ने अपने हिंदू धर्म और परंपराओं को छोड़कर ईसाई और मुस्लिम धर्मों को अपना लिया था।

15वीं सदी के अंत तक शक्तिशाली मजपाहित राज्य अपनी गरिमा तथा गौरवशाली वैभव खो चुका था और देमक सल्तनत से पराजित हो गया था। सडा कलापा को 'जयकार्ता' और फिर 'जकार्ता' बना दिया गया।

इंडोनेशिया मुस्लिम बाहुल्य राष्ट्र होने के साथ-साथ मानवता के मूल्यों को काफी अधिमान देता है। इसका मुख्य कारण है, उसकी 'अनेकता में एकता', 'वसुधैव कुटुंबकम्' या 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' वाली संस्कृति। हमारे धर्म के ऊपर हमारे युग-युगांतरों से चली आ रही सनातन संस्कृति का प्रभाव है। शायद यही कारण है कि सहनशील, सहिष्णु व समरसता में बँधा इंडोनेशिया राष्ट्र एक सशक्त बुनियाद पर टिका हुआ है।

ऐसा नहीं है कि इंडोनेशिया में एक ही तरह के धर्मानुयायी रहते हैं। विविध धर्मों के लोग यहाँ निवास करते हैं। हालाँकि मुस्लिम समुदाय के लोग अधिक होने के कारण इस देश को इस्लामिक राष्ट्र के रूप में भी जाना जाता है। एक ही स्थान पर यदि चार अलग-अलग मतोंवाले व्यक्ति रहें तो मतभेद होने का डर सदैव ही बना रहता है, लेकिन इस विषय में इंडोनेशिया भाग्यशाली देश है कि जहाँ हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, ईसाई एवं अन्य धर्मों की आबादी होने के बावजूद सांप्रदायिक सौहार्दता और भाईचारा है।

इंडोनेशिया का इस्लामीकरण कई सदियों की प्रक्रिया है। इंडोनेशिया में इस्लाम का प्रभाव सुमात्रा, जावा, कालीमंतन, सुलावेसी, लोम्बोक, सम्बावा एवं उत्तर मलक्का में देखने को मिलता है। इंडोनेशिया में इस्लाम का विस्तार व्यापार से जुड़ा हुआ था। इसी वजह से इस्लाम धर्म का विस्तार सर्वाधिक वहाँ पर हुआ, जहाँ पर व्यापारिक रास्ते थे। इन सभी मार्गों पर मुस्लिम लोग बस गए और वहाँ उन्होंने अपना व्यापार प्रारंभ कर दिया। इसी श्रृंखला में यह बताना आवश्यक है कि पश्चिमी इंडोनेशिया, जो कि संपूर्ण वैश्विक व्यापार

का ऐतिहासिक केंद्र रहा है, मुस्लिम सल्तनत की स्थापना का केंद्र बनकर उभरा, विशेषकर मलक्का स्टेट यानी आधुनिक मलेशिया और इंडोनेशिया के बीच का मार्ग मुस्लिम व्यापारियों का मुख्य मार्ग रहा।

इंडोनेशिया में मुस्लिमों के आने के बारे में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत रहे हैं। हालाँकि कई मुस्लिम व्यापारियों के इंडोनेशिया में 12वीं, 13वीं शताब्दी के दौरान इस्लामिक गतिविधियों से संबंधित होने के प्रमाण मिलते हैं। उत्तरी सुमात्रा में वर्ष 1211 में मुस्लिम राज्य के प्रमाण देखने को मिले। 15वीं सदी के अंत तक इंडोनेशिया में शक्तिशाली मुस्लिम राज्य का उदय हुआ। मुस्लिम सल्तनतें अधिक समय तक पूरे इंडोनेशिया पर राज नहीं कर पाईं, क्योंकि तब तक पश्चिमी यूरोपीय उपनिवेशवादी शक्तियाँ एशिया में अपने पाँव पसारने के लिए इंडोनेशिया का रुख कर चुकी थीं। कुछ स्थानों पर बिल्कुल भी इस्लाम का असर नहीं दिखा, क्योंकि ये स्थान व्यापारिक रास्तों से काफी दूरी पर स्थित थे, जैसे कि बाली में। कई स्थानों पर इस्लाम धर्म तो आया, लेकिन वह हिंदू धर्म से पूरी तरह घुल-मिल गया, जैसा कि मध्य जावा में देखने को मिलता है। क्लिफर्ड गीर्टज की पुस्तक 'रिलीजन ऑफ जावा' के अनुसार इंडोनेशिया के मुस्लिमों को दो भागों में बाँट सकते हैं—

(1) **पहला अबगन—**ये लोग मुस्लिम तो हैं, लेकिन हिंदू एवं बौद्ध धर्म से या एनीमिस्ट परंपरा में घुले-मिले हैं। मुख्यत: ग्रामों में रहनेवाले ये लोग मिली-जुली परंपराओं का पालन करते हैं। ये लोग पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। हिंदू बौद्ध धर्मों की मूर्तियों के प्रति इन लोगों की अपार श्रद्धा है।

(2) **संत्री—**ये लोग कुरान एवं मस्जिद तक ही सीमित रूढ़िवादी मुसलमान हैं, जो मुख्यत: शहरी जनसंख्या के अभिन्न अंग हैं। इंडोनेशिया में इस्लाम विभिन्न चरणों में आया। वहाबी और सलाही क्रमश: सउदी अरब और मिस्र से आनेवाली दो धाराएँ थीं, जो 19वीं सदी के अंत में आईं। इंडोनेशिया में इस्लाम के विस्तार में धार्मिक एवं राजनीतिक अभियानों का काफी प्रभाव देखने को मिला। वर्ष

1869 में स्वेज नहर के खुल जाने से इंडोनेशिया से मक्का जानेवाले श्रद्धालुओं को काफी आसानी हुई और इसका परिणाम यह हुआ कि इंडोनेशिया से बड़ी संख्या में लोग हज के लिए सऊदी अरब जाने लगे। इससे मुस्लिम लोगों का अरब स्थित मुल्कों से संपर्क काफी बढ़ा। देश में वर्तमान समय में मुस्लिम लोग दो भागों में विभक्त हैं। 1912 में देश में 'मोहम्मदिया' नाम से एक सामाजिक संगठन शुरू हुआ, यह संस्था मुस्लिम रीति-रिवाजों एवं उसकी परंपराओं पर ध्यान आकर्षण कराती है। दूसरी संस्था 'नेहडलातुल उलामा' की है, जो कि जावर की पुरानी लोक परंपराओं के साथ इस्लाम को जीवित रखता है। ये लोग इस्लाम से पूर्व की परंपराओं को अपने आचरण में सम्मिलित करते हैं तथा दूसरे धर्मों के प्रति भी इनका व्यवहार समरसता एवं समभाव को प्रदर्शित करता है। इंडोनेशिया के अधिकतर मुस्लिम सुन्नी हैं, बहुत कम प्रतिशत शिया हैं, जो कि 0.5 प्रतिशत तक ही सीमित हैं, ये लोग जकार्ता में रहते हैं, जबकि 0.2 प्रतिशत अहमदिया मुसलमान हैं।

इंडोनेशिया में बौद्ध धर्म

हिंदू धर्म के बाद बौद्ध धर्म दूसरा सबसे पुराना धर्म है। इंडोनेशिया में बौद्ध धर्म के लोगों की संख्या 18 से 20 लाख के लगभग है और यह यहाँ का आधिकारिक रूप से मान्यताप्राप्त धर्म है। पूरी जनसंख्या का एक प्रतिशत बौद्ध धर्म को मानता है। ये लोग मुख्यत: जकार्ता, रिचाऊ, उत्तरी सुमात्रा, पश्चिम कालीमंतन, बेल्तुंक आदि क्षेत्रों में बहुतायत में हैं।

इंडोनेशिया में बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म के पश्चात् दूसरी शताब्दी में आया। नेपाल की तरह इंडोनेशिया में भी बौद्ध और हिंदू धर्म की साझी स्थापत्य कला के दर्शन इस बात के द्योतक हैं कि दोनों धर्म समान सांस्कृतिक विरासत को समेटे हुए हैं। इंडोनेशिया में अधिकांश बौद्ध धर्म के लोग चीन से आए, हालाँकि जावा और सुसाक के मूल लोग भी बौद्ध अनुयायी हैं। भारत और

बौद्ध धर्म के अनुयायी

इंडोनेशिया के बीच सिल्क रोड के माध्यम से व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ने के कारण बौद्ध धर्म के लोगों का इंडोनेशिया आना प्रारंभ हुआ। इंडोनेशिया का बाटुजाया स्तूप दूसरी शताब्दी से संबंध रखता है। जाबी पेल्मबाग, मध्य और पूर्वी जावा में अनेक बौद्ध स्तूपों का निर्माण हुआ।

चीनी बौद्ध भिक्षु आई सिंग ने अपने वृत्तांत में इस बात पर जोर दिया कि 7वीं सदी के आसपास श्री विजय नाम का एक सशक्त राज्य सुमात्रा में स्थापित हुआ था। इस राज्य द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई थी। श्री विजय राज्य के राजकुमार का नाम धर्म कीर्ति था। वे विश्वप्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय में आचार्य के रूप में कार्य करने भारत आए। ज्ञातव्य है कि नालंदा विश्वविद्यालय हेतु इंडोनेशिया सहयोग करता आया है। इंडोनेशिया सरकार का नालंदा विश्वविद्यालय के साथ सहयोग हमारे सदियों पुराने संबंधों को प्रदर्शित करता है।

8वीं सदी का बोरोबुदुर मंडल, सुमात्रा के मछुआरे तथा जाबी बहल मंदिर इंडोनेशिया एवं भारत की साझी सांस्कृतिक विरासत की कहानी को प्रदर्शित करते हैं। 13वीं सदी के आसपास जब इस्लाम ने अपने पैर जमाने प्रारंभ किए तो उसी के साथ हिंदू बौद्ध संस्थाओं की पकड़ कमजोर होने लगी। 15वीं सदी में हिंदू एवं बौद्ध धर्म का मजापहित राज्य के पतन के साथ वर्चस्व समाप्त हो गया। 16वीं सदी के अंत तक इंडोनेशिया में इस्लाम मुख्य धर्म बनकर उभरा और पूरे इंडोनेशिया में छा गया। आज भी साल में एक बार

विश्व भर के बौद्ध अनुयायी बैसाखी पर्व के लिए बोरोबुदुर में जमा होते हैं।

अधिकतर बौद्ध, चीनी महायान से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त, टूरिज्म एवं कन्फ्यूसिएनिज्म को माननेवाले भी अपने को बौद्ध धर्म का अनुयायी मानते हैं।

इंडोनेशिया में बौद्ध लोगों का सबसे बड़ा संगठन पेखाकिला उमत बुद्ध है, जो कि सभी बौद्ध संस्थाओं से समन्वय स्थापित करता है।

परंपरागत शैली में बना चर्च

ईसाई धर्म

इंडोनेशिया में ईसाई धर्म दूसरे बड़े धर्म के रूप में स्थापित है। यह फिलीपींस के बाद दक्षिण-पूर्व एशिया में सर्वाधिक ईसाई आबादीवाला देश है। लगभग ढाई करोड़ इंडोनेशिया की जनसंख्या के केवल 10 प्रतिशत इसाई धर्म के लोग हैं, इनमें से 70 प्रतिशत के करीब प्रोटेस्टेंट हैं, जबकि 30 प्रतिशत कैथोलिक हैं। ईसाई धर्म के लोग इंडोनेशिया के विभिन्न अंचलों में

फैले सुमात्रा के उत्तर क्षेत्र में 'आके' नामक स्थान पर बड़ी संख्या में बसे हुए हैं। यहाँ पर लगभग 60 हजार के करीब ईसाई लोग हैं। कालीमंतन, उत्तरी सुमात्रा, दक्षिणी सुमात्रा, जावा, मलाकू, पापुआ एवं सुलावेसी में ईसाई धर्म के लोग रहते हैं। सर्वाधिक ईसाई पूर्वी नूसा तेगांरा में रहते हैं।

इतिहासकार मानते हैं कि ईसाई धर्म के लोग 12वीं शताब्दी में इंडोनेशिया के द्वीपों में आए, मिश्र से आए ईसाई यात्री आबू सलह अल अरमीनी ने अपने वृत्तांत में पश्चिमी सुमात्रा में चर्चों का जिक्र किया। पुर्तगालियों ने वर्ष 1511 में जब मलाका (मलेशिया) पर कब्जा किया तो उन्होंने तरनात सल्तनत पर कब्जा कर लिया। शुरू में मुस्लिम शासकों और पुर्तगालियों के संबंध सौहार्दपूर्ण थे, लेकिन कुछ समय पश्चात् मिशनरियों ने स्थानीय लोगों को ईसाई बनाना प्रारंभ कर दिया। 16वीं सदी के अंत तक दक्षिण मोलाकास में 20 प्रतिशत लोग कैथोलिक हो गए। दूसरी उपनिवेशवादी शक्ति का डच के रूप में आगमन इंडोनेशिया में 1607 में हुआ। इन लोगों ने यह सुनिश्चित किया कि वे अपने हर कार्यों में डच प्रोटेस्टेंट को ही वरीयता दें।

18वीं और 19वीं शताब्दी में 'नीदरलैंड मिशनरी सोसाइटी' और 'रेनिश मिशनरी सोसाइटी' द्वारा जर्मनी की अगुआई में धर्मांतरण का कार्य चला।

विभिन्न अंचलों में फैला ईसाई धर्म

चर्च में परंपरागत प्रार्थना

19वीं शताब्दी तक सर्वत्र मिशनरी फैल गए थे, केवल मुस्लिम बाहुल्य एकह और पश्चिम सुमात्रा में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों पर रोक लगी। आज इंडोनेशिया में छिटपुट घटनाओं को छोड़ दिया जाए तो मुस्लिम और ईसाई धर्म के लोग आपसी सौहार्द और भाईचारे के साथ रहते हैं। ईसाई लोग राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से अभी भी काफी पिछड़े हुए हैं।

धर्मस्व मंत्रालय के अनुसार वर्ष 2014 में इंडोनेशिया में लगभग छोटे-बड़े 69,703 गिरिजाघर थे। भारत की तरह इंडोनेशिया में कई ईसाई शैक्षणिक संस्थान हैं, जो कि पुराने समय से चले आ रहे हैं। इन शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा के साथ -साथ धर्म विशेष की कक्षाएँ भी चलती हैं। ईसाई मिशनरी द्वारा इंडोनेशिया में 17वीं सदी में शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना हुई। 'मिशन त्रिकोण' के नाम से मशहूर मिशनरी लोग अस्पताल, स्कूल एवं गिरिजाघर खोलते थे, उनका यह सामरिक प्रयोग काफी सफल रहा, क्योंकि लोगों की शिक्षा और इलाज की आधारभूत आवश्यकताएँ पूरी करने में यह नीति सक्षम थी। ये संस्थान ईसाई मूल्यों पर आधारित शिक्षा देने के साथ-साथ गरीब ईसाई लोगों के बच्चों के लिए शिक्षा का साधन उपलब्ध कराते हैं।

□

गुरुदेव की इंडोनेशिया यात्रा : सर्जनवीयता और विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना

सर्जनवीयता विश्वविद्यालय के शांत परिसर में घूमते हुए मैं सोचने लगा कि आखिर 90 वर्ष पूर्व गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की अगस्त-सितंबर, 1927 में इंडोनेशिया की यात्रा क्यों अत्यंत सफल रही? यह यात्रा कई मायनों में ऐतिहासिक थी। यह महज संयोग ही था कि उस समय इंडोनेशिया और भारत, दोनों देश उपनिवेशवादी शक्तियों के विरुद्ध आंदोलन का बिगुल फूँक रहे थे। एक ओर इंडोनेशिया डच साम्राज्य के चंगुल से बाहर निकलने के लिए संघर्षरत था, वहीं दूसरी ओर भारत भी ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी से आजादी के लिए छटपटाता था, स्वाधीनता के लिए यह छटपटाहट उस समय के रचनाकारों की कृतियों में दृष्टिगोचर होती है। गुरुदेव ने इंडोनेशिया की यात्रा को तीर्थयात्रा का दर्जा दिया और उन्होंने कहा भी था, 'भारत की मौजूदा राजनीतिक सीमा के बाहर मैं तीर्थयात्रा पर जा रहा हूँ।' इसे हम गुरुदेव की दूरदर्शिता मान सकते हैं कि उन्होंने भारतभूमि से हजारों मील दूर बसे प्रशांत महासागर के इन सुरम्य द्वीपों को भारतीयों के लिए तीर्थस्थल माना।

गुरुदेव का इंडोनेशिया की पुण्यधरा के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव इस बात को उजागर करता है कि वे इंडोनेशिया की धरती पर भारत को खोजना चाहते थे। अपने यात्रा-संस्मरणों के माध्यम से उन्होंने बार-बार यह

स्पष्ट किया है कि भारतीय संस्कृति की जो जीवंत तसवीर उन्हें इंडोनेशिया में देखने को मिली, वह विश्व में कहीं और नहीं मिली। विश्व के अनेक देशों का भ्रमण कर चुके इस दार्शनिक महाकवि को इंडोनेशिया से विशेष लगाव था, जो कि उनके अनेक लेखों एवं भाषणों में स्पष्ट रूप से झलकता है। एक ओर उन्हें भारतीय नायकों पर आधारित अद्‌भुत मूर्तियों और चमत्कृत करनेवाले मंदिरों की अद्‌भुत स्थापत्य कला के दर्शन हुए, वहीं दूसरी ओर भारतीय नृत्य, योग तथा साहित्य के दर्शन भी इस धरती पर हुए। मंदिरों में रामायण और महाभारत की कथाओं के मंचन ने उन्हें भीतर तक आह्लादित कर दिया। शायद इन्हीं कारणों से उन्हें लगने लगा कि संस्कृति और अध्यात्म की डोर से बँधे ये दोनों राष्ट्र मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

यह गुरुदेव की विद्वत्ता, दूरदर्शिता, वैज्ञानिक सोच एवं प्रखरता ही थी

दूरदर्शिता वैज्ञानिक सोच का प्रतीक : सर्जनवीयता विश्वविद्यालय

कि उन्होंने 90 वर्ष पूर्व विश्वफलक पर इंडोनेशिया और भारत के स्वर्णिम भविष्य के अक्षर अंकित कर दिए थे।

गुरुदेव ने महसूस किया कि विश्व कल्याण, विश्वशांति, सहिष्णुता, त्याग, समरसता, समभाव तथा विश्वबंधुत्व के लिए हमारा चिंतन एक-सा है। विश्वशांति के लिए हमारी सोच, हमारी प्रतिबद्धता, हमारा दर्शन एक समान है और फिर हो भी क्यों न, क्योंकि हमारी सोच 'वसुधैव कुटुंबकम्' की उर्वरा धरती पर अंकुरित होती है और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' की परिकल्पना से अभिसिंचित होती है। इंडोनेशिया यात्रा के दौरान गुरुदेव की लोकप्रियता मेरे लिए सुखद आश्चर्य का विषय था। मुझसे उनकी पुस्तक 'गीतांजलि' के विषय में इंडोनेशिया के बहुत से लोगों ने बात की थी।

'गीतांजलि' गुरुदेव की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति रही है, जिसे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 'गीतांजलि' ने मानव को जीने की आशा जगाते हुए एक ऐसे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है, जो निर्भयता और सच्चाई के प्रकाश से प्रकाशित हो। 'गीतांजलि' प्रकृति, प्रेम व ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा तथा मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण भाव का मधुर सृजन है।

इंडोनेशिया के लोगों का गुरुदेव के प्रति गहरा सम्मान इस बात से झलकता है कि यहाँ सदी के बोरोबुदुर मंदिर में रवींद्रनाथ टैगोर की प्रतिमा लगी हुई है। यह प्रतिमा विश्व भारती के प्रोफेसर झंकार नाजरी द्वारा बनाई गई। सिंगापुर, मालापा, बोर्नियो, सुमात्रा और इंडोनेशिया के साढ़े तीन महीने के प्रवास पर जाते हुए जुलाई, 1927 को गुरुदेव ने कहा था कि वे भारत की राजनीतिक सीमा से बाहर तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तथा मुझे भारत की संस्कृति का प्रतिबिंब रामायण और महाभारत की कहानियों में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रख्यात विद्वान् अरुण दास गुप्ता द्वारा लिखी गई 'रवींद्रनाथ टैगोर इन इंडोनेशिया एन एक्सपेरिमेंट इन ब्रिज बिल्डिंग' में गुरुदेव की इंडोनेशिया यात्रा का शानदार वृत्तांत दिया गया है, टैगोर द्वारा बोरोबुदुर मंदिर में वृक्षारोपण भी किया गया।

सर्जनवीयता विश्वविद्यालय के प्रवास के दौरान मैंने महसूस किया कि

गुरुदेव ने अपनी इंडोनेशिया यात्रा में अपने बाह्य चक्षुओं से घटनाओं को देखकर अपने अंतर्मन से उसका संपूर्ण विश्लेषण कर उसका अनुशीलन किया और अंतत: यथार्थ का अमूल्य सत्य प्रकट होकर सबके सम्मुख आया। इनसान की अंतर्रात्मा को जाग्रत् कर, वास्तविक जीवन जीने के लिए प्रेरित करने के क्रम में गुरुदेव ने भारत और इंडोनेशिया के निवासियों को उपनिवेशवाद को उखाड़ फेंकने को कहा। गुरुदेव रवींद्र ने 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की प्रबल भावना को अपनी रचनाओं के माध्यम से सजीव रखा। मुझे लगता है कि इंडोनेशिया में गुरुदेव को अपनत्व का अहसास इसलिए अधिक हुआ, क्योंकि उन्हें इंडोनेशिया में एक अहंकाररहित स्वाभिमान समाज के दर्शन हुए, जिसका कहीं-न-कहीं उनकी मातृभूमि से गहरा नाता था। एक ऐसा समाज, जो ईश्वरीय सत्ता के आगे नतमस्तक, करुणा से युक्त तथा स्वदेश की स्वाधीनता की प्रबल भावना में बहकर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर था। सबसे अच्छी बात यह कि उन्होंने अपनी रचनाओं में स्वयं को एक तुच्छ प्राणी मानते हुए पूरे इंडोनेशिया के कल्याण के लिए प्रार्थना की। गुरुदेव ने अपने जीवन से एवं अपने विचारों से इंडोनेशिया के लोगों को न केवल प्रेरित किया, बल्कि उनके अंदर एक नई ऊर्जा और नए स्पंदन का सूत्रपात भी किया। इसका माध्यम बने देवनतारा, जिन्होंने तमन सिस्वा के माध्यम से योगयकार्ता इंडोनेशिया के लोगों के लिए एक स्कूल की स्थापना की थी। गुरुदेव रवींद्र ने श्री सुकर्णो और श्री हजर देवनतारा के माध्यम से इंडोनेशिया को उपनिवेशवाद के खिलाफ अभिप्रेरित किया।

इंडोनेशिया में टैगोर ने जहाँ एक ओर भारतीय संस्कृति के मूल्यों को खोजने में सफलता पाई, वहीं दूसरी ओर उन्होंने बेलावान बटाविया सुराबाया, सोलो योगयकार्ता, बाली एवं बानडुंग की यात्रा कर बुद्धिजीवी और सांस्कृतिक ध्वज वाहकों से भेंट की तथा अपने प्रिय प्रोजेक्ट विश्वभारती के लिए सहयोग जुटाने आए थे। टैगोर ने अपनी इस यात्रा में समाज, कला, संस्कृति तथा विभिन्न क्षेत्र के लोगों से भेंट की। यहाँ पर उन्होंने प्रसिद्ध वॉटीक प्रिंटिंग को भी सीखा और अपने विश्व विद्यालय में उसका प्रचार-प्रसार किया। गुरुदेव ने

सर्जनवीयता विश्वविद्यालय : नई चुनौतियों का मुकाबला

अपने रवींद्र नृत्य में जावा संगीत के कई पहलुओं को बखूबी उठाया।

गुलामी के प्रति अपने उद्‌गारों को व्यक्त करते हुए और ब्रिटिश सम्मान 'सर' की उपाधि को वापस करते हुए उन्होंने अपने मित्र रानू मुखर्जी को लिखा था, "मैं कवि हूँ, स्वभावतः कोई लड़ाई नहीं लड़ सकता, लेकिन अपने परिवेश से जुड़े रहने के लिए मैं सर्वस्व न्योछावर कर सकता हूँ।" कई बार मुझे लगता है कि गुरुदेव और देवनतारा के प्रति न केवल भारत और इंडोनेशिया की पीढ़ियाँ कृतज्ञ होंगी, बल्कि विश्व का हर वह व्यक्ति कृतज्ञ होगा, जो मानव मात्र के विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समरसतापूर्ण समाज की परिकल्पना करता हो। इन दो महापुरुषों के रूप में ऐसे अनेक मानवतावादी चिंतक, श्रेष्ठ वक्ता, स्वतंत्रता सेनानी और युगद्रष्टा का अभ्युदय हुआ, जिन्होंने दलित, पिछड़े उपेक्षित वर्ग की बेहतरी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

मुझे लगता है कि गुरुदेव की इंडोनेशिया यात्रा का अर्थ समझने के लिए एक साहित्यकार के रूप में रवींद्रनाथ टैगोर को समझना पड़ेगा। उनकी

संवेदनशीलता, उनकी रचनाओं के अंदर के मानवतावाद और विश्वबंधुत्व को समझकर ही हम उनकी इंडोनेशिया यात्रा के वास्तविक अर्थ को समझ सकते हैं।

एक कवि होने के नाते और हिंदी साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मानवीय संवेदना की जो समझ, विश्वबंधुत्व, संवेदनशीलता, समरसता का भाव और विनम्रता का जो सामंजस्य गुरुदेव रवींद्रनाथजी की रचनाओं में देखने को मिलता है, उसके दर्शन अन्यत्र होना कठिन है। चाहे वह काबुलीवाला का चित्रण हो, जहाँ व्यक्ति की आवश्यकताओं, दायित्वों, मजबूरियों की बात हो, सर्वत्र गुरुदेव ने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। वैयक्तिक संवेदनाओं को सफलतापूर्वक उभारने में गुरुदेव का कोई सानी नहीं है। कालजयी कृति 'गीतांजलि' में अथाह भवसागर को तरंगित करने की उनकी क्षमता विलक्षण है। वे कहते हैं—

अपने चरण धूलि के तल में मेरा शीश झुका दो देव।
सब अहंकार मेरे आँसू तल में डुबा दो।

वसुधैव कुटुंबकम् की वैदिक भावना

सच भी है कि जब तक अहंकार का पतन नहीं होता, तब तक करुणा का जन्म नहीं हो सकता। आगे कविवर बताते हैं कि अपने झूठ के अहंकारपूर्ण अस्तित्व को पाने के लिए मनुष्य स्वयं को भी अपमानित करने से पीछे नहीं हट रहा है। आगे वे लिखते हैं—

अपने को गौरव देने को,
स्वयं को घेरकर अपने को अपमानित करता हूँ
पल-पल में घूम-घूमकर स्वयं मरता हूँ।

कहीं-न-कहीं गुरुदेव की रचनाएँ वैदिक भावना 'वसुधैव कुटुंबकम्' को पुष्ट करती हैं।

गुरुदेव ने लिखा है कि मैं इंडोनेशिया के नृत्य के विविध पहलुओं को देखकर स्तब्ध था, मानो जैसे कि नृत्य ही इंडोनेशिया की प्राकृतिक भाषा हो। उन्होंने आगे लिखा है कि बाली की मूर्तियाँ देखकर उन्हें अजंता-एलोरा की

मूर्तियाँ याद आ गईं। गुरुदेव ने यहाँ तक लिख दिया कि इंडोनेशिया का उत्सव नृत्य ही है।

कविवर समस्त विश्व को एक घर (परिवार) मानते हैं। उनकी अतुलनीय भावनाओं के प्रवाह में समरस्ता, सौहार्द, मानवता एवं सर्व बंधुत्व का भाव जाग्रत् होता है। देखा जाए तो कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी रूप में यूरोप, सिंगापुर, थाईलैंड, बर्मा और इंडोनेशिया की यात्राएँ भी उनकी विश्वबंधुत्व की भावना से प्रेरित थीं। कविवर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः' के अमर संदेश को अभिव्यक्त करते दिखते हैं। गुरुदेव मानव मन के कुशल चितेरे के रूप में अपने पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। मानवीय संवेदनाओं के साथ वे पारलौकिक संसार से जुड़े थे। 'गीतांजलि' में ही वे कहते हैं—

विकसित करो हमारा अंतर अंतश्तर है।
उज्ज्वल करो, करो निर्मल कर दो सुंदर हे।।
जाग्रत् करो, करो उद्यत निर्भर कर दो हे।
मंगल करो, करो निरलस निसंशय कर हे।।

गुरुदेव स्वयं पर विश्वास रखने में विश्वास रखते थे। दु:ख, विपदा प्राकृतिक हैं, जिन्हें किसी-न-किसी रूप में इनसान के जीवन में आना है, उनसे बचने के बजाय डटकर सामना करने की प्रेरणा गुरुदेव की रचना में मिलती है। 'नहीं माँगता' कविता में कहते हैं कि—

कोई जब न मदद को आए
मेरी हिम्मत टूट न जाए
जब-जब धोखे पर धोखा दे
और चोट पर चोट लगाए
अपने मन में हार न मानूँ
ऐसा नाव्य विधान करो
विपदा में निर्भीक रहूँ मैं
इतना हे भगवान् करो।

गुरुदेव की इंडोनेशिया यात्रा इतनी सफल क्यों रही, यह उनकी रचनाओं को पढ़कर पता लग सकता है। गुरुदेव की रचनाओं में अध्यात्मवाद, भक्तिवाद, राष्ट्र प्रेम, त्याग, शांति, तेज, क्षमा, लज्जा, अद्रोह और नातिमानिता जैसे दिव्य गुणों का प्रतिपादन देखने को मिलता है। उन्होंने लिखा है—

विपत्तियों से रक्षा कर यह मेरी प्रार्थना नहीं।
मैं विपत्तियों से भयभीत न होऊँ।।
मेरा भय न-ट कर प्रभु न-ट कर।
मुझसे मुख मत मोड़।।
विपदाओं से रक्षा करो,
य न मेरी प्रार्थना,
यह करो, विपद में न भय हो
दु:ख से व्यथित मन को मेरे
भले न हो सांत्वना
यह करो, दु:ख पर मिले विजय।

कवि की विनम्रता एक अद्‌भुत भाव है। अहंकार या घमंड न होना नातिमानिता है। गुरुदेव ने लिखा है—

मेरा माथा नत कर दो तुम
अपनी चरण-धूलि तल में
मेरा सारा अहंकार दो
डुबो चक्षुओं के जल में।

उनकी रचनाओं में मनोभावों में चित्त-वृत्तियों का चित्रण, भावात्मक अभिव्यंजना एवं आत्मीयता की अनुभूति सर्वश्रेष्ठ रूप से देखने को मिलती है। कुल मिलाकर गुरुदेव की रचनाएँ न केवल भारत में व इंडोनेशिया में लोकप्रिय हैं, बल्कि यूरोप, अमेरिका और पूरे विश्व में अत्यंत सम्मानित और प्रतिष्ठित मानी जाती हैं।

हजदर देवनतारा (राष्ट्रीय शिक्षा के जनक) ने 3 जुलाई, 1922 को तमन सिस्वा की आधारशिला रखी, यह संस्था सांस्कृतिक उन्नयन एवं विकास के

लिए समर्पित है। प्रारंभ में कुछ चयनित पाठ्यक्रमों में शिक्षा दी गई। तमन इंद्रिय, तमन मुद्रा, तमन देवासा, तमन गुरु, तमन कर्या, तमन मछा की शिक्षा के 33 साल पश्चात् 15 नवंबर, 1955 को हजदर देवनतारा ने तमन परासर्जना के नाम से तीन क्षेत्रों में स्नातक पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए।

(1) जावानीज और इंडोनेशियन भाषा एवं समाजशास्त्र (इतिहास, पृथ्वी विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान)

कुछ वर्ष पश्चात् वर्ष 1959 में एक संकाय मंडली बनाई गई, जिसका नाम 'तमन सर्जन शास्त्र' रखा गया। 28 दिसंबर, 1950 को सर्जनवीयता फाउंडेशन की नींव रखी गई। योगयकार्ता की इस फाउंडेशन में श्री सुलतान हेमिंग कुबुवानों, हजर देवनतारा जैसे आदि विद्वानगण शामिल थे। इस फाउंडेशन की अध्यक्षता सरीनों माँगुन प्रनातों ने की। वर्ष 1960 में पहली बार अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रारंभ किया गया। 3 जुलाई, 1963 को संस्था की 41वीं वर्षगाँठ पर 'तमन सर्जन पेंडीडिकेन जुरूसेन' बनाया गया, जिसमें निम्नलिखित विभाग थे—

(1) शिक्षा विभाग
(2) इतिहास विभाग
(3) भू-विज्ञान विभाग
(4) प्राकृतिक चिकित्सा विभाग
(5) जावा भाषा विभाग
(6) अंग्रेजी भाषा विभाग
(7) इंडोनेशिया भाषा विभाग

1 अक्तूबर, 1964 को संस्था का नाम 'तमन सिस्वा' रख दिया गया। हजर देवनतारा ने रेक्टर के रूप में पदभार सँभाला। विज्ञान शिक्षा, भूगोल, कानून एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों में इंडोनेशियन स्नातक कोर्स शुरू किए गए। वर्ष 1980 में तमन सिस्वा विश्वविद्यालय में कृषि, मनोविज्ञान एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय शुरू किए गए।

वर्ष 1983 में सर्जनवीयता विश्वविद्यालय स्थापित हुआ, जिसका नाम 'यूनिवर्सिटीज सर्जनवीयता तमन सिस्वा' रखा गया। विश्वविद्यालय का विजन राष्ट्र के बौद्धिक जीवन में सर्वश्रेष्ठता स्थापित करना है। विश्वविद्यालय शोध, सामुदायिक सेवा, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय विद्यालय के रूप में स्थापित होने का लक्ष्य रखा गया है। इसका एकमात्र उद्देश्य मानवता, राष्ट्र सेवा, सहकारिता एवं संस्कृति के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता स्थापित करना है।

आज सर्जनवीयता विश्वविद्यालय योगयकार्ता के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में शुमार हुआ है। विश्वविद्यालय संस्कृति और अध्यापक प्रशिक्षण तथा अंग्रेजी शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। सर्जनवीयता विश्वविद्यालय में मैंने देखा कि पुरानी सांस्कृतिक धरोहर सँजोने के साथ यह विश्वविद्यालय विज्ञान प्रौद्योगिकी में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। मैंने कई विभागों का दौरा किया और मुझे रेक्टर के कार्यालय में विचार-विमर्श करने का सुअवसर भी मिला। विश्वविद्यालय के अध्यक्ष श्री एंडी स्वासों की प्रखरता, विद्वत्ता और अनुभव से मैं अत्यंत प्रभावित हुआ। मुझे विश्वविद्यालय की शीर्ष फैकल्टी के साथ-साथ शिक्षा से जुड़े मामलों पर चर्चा करने का मौका मिला। मैं भारत में या विदेशों में कहीं भी जाता हूँ, तो वहाँ छात्र-छात्राओं और फैकल्टी से मिलना मेरी प्राथमिकता रहती है। विश्वविद्यालय में मुझे नई ऊर्जा मिलती है और इन मुलाकातों में काफी कुछ सीखने को भी मिलता है। मुझे इन लोगों के साथ कुछ समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ये लोग अपने-अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध स्तर तक अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक वातावरण के लिए विश्वविद्यालय संकाय कृतसंकल्प दिखा।

मैंने इस दौरान स्नातकोत्तर छात्र-छात्राओं को एक व्याख्यान भी दिया। मैं इस बात से अत्यंत प्रभावित हुआ कि सभी बच्चे जहाँ एक ओर भारतीय संस्कृति में गहरी रुचि रख रहे थे, वहीं दूसरी ओर भारत-इंडोनेशिया के प्रगाढ़ सामरिक संबंधों के पक्षधर थे। इन छात्र-छात्राओं ने मुझसे कई प्रश्न भी पूछे, भारतीय संस्कृति से जुड़े इन प्रश्नों में पुरानी परंपराओं एवं सभ्यता

की आधुनिकता के युग में महत्त्व के विषय में पूछा गया था। जहाँ वैश्विक वैमनस्य, सांप्रदायिकता एवं देशों में आपसी कलह पर चिंता प्रकट की गई, वहीं यह भी पूछा गया कि किस प्रकार से भारत-इंडोनेशिया, दोनों मिलकर वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला कर सकते हैं। मुझे इस बात पर बेहद प्रसन्नता है कि सभी विद्यार्थी इस बात से गौरवान्वित थे कि उनकी महान् संस्कृति की जड़ें भारत में ही हैं।

कई बार मुझे लगता है कि शांतिनिकेतन विश्वभारती अवश्य ही 'सर्जनवीयता तमान सिस्वा विश्वविद्यालय' के लिए एक प्रेरणा रहा होगा। विश्वभारती के भारतीय स्वाधीनता संग्राम में दिए योगदान से श्री देवनतारा प्रभावित थे। सर्जनवीयता इंडोनेशिया के हिसाब से मध्यमवर्गीय विश्वविद्यालय है, जहाँ लगभग दस हजार विद्यार्थी पढ़ते हैं। पूरे इंडोनेशिया में विश्वविद्यालय की 169 रैंकिंग है, जबकि वैश्विक सूची में विश्वविद्यालय का 8493वाँ स्थान है। विश्वविद्यालय में देश-विदेश के बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं। सर्जनवीयता विश्वविद्यालय शांतिनिकेतन की तरह भाषा, कला तथा संस्कृति के लिए जाना जाता रहा है। तमान सिस्वा के प्राध्यापकों से मेरी काफी विस्तृत चर्चा हुई। इस बात से सभी लोग सहमत थे कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण से ही देश का कल्याण संभव है। वहाँ पर सबने इस बात पर चिंता प्रकट की कि देश में विद्यार्थी दंगे, नशीले पदार्थों, शराब, हिंसा में लिप्त हैं। सब इस बात पर एकमत थे कि आज का युवा राष्ट्रीयता, अपनी पहचान और जिम्मेदारी से दूर भाग रहा है। तमान सिस्वा के अनुसार शिक्षा से सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अध्याय लिखा जा सकता है। भारत की तरह इंडोनेशिया के लोग भी यह मानते हैं कि विदेशी शासकों द्वारा सांस्कृतिक क्षति पहुँचाई गई, जिससे राष्ट्रीय चरित्र गिर गया।

विश्वविद्यालय के अधिकारियों से, वहाँ के संकाय अध्यक्षों से एवं रेक्टर से बातचीत करने के पश्चात् मुझे मालूम हुआ कि इस विश्वविद्यालय में कृषि, कृषि प्रौद्योगिकी, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, अभियांत्रिकी, गणित, भौतिकी, कला, इंडोनेशियन भाषा, अध्यापन शिक्षा, एकाउंटिंग, विज्ञान शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय अध्यापन, प्रशिक्षण एवं इंडोनेशिया का स्नातक विभाग है।

इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र बिजनेस मैनेजमेंट, शैक्षिक प्रबंधन, अंग्रेजी शिक्षा के स्नातकोत्तर विभाग मौजूद हैं।

शांतिनिकेतन

शांतिनिकेतन को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण जाना जाता है। यह पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में कोलकाता के उत्तर से लगभग 180 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। रवींद्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन को बनाया था, जो एक अंतरराष्ट्रीय यूनिवर्सिटी है, जहाँ संस्कृति और परंपरा को विज्ञान के साथ जोड़कर समझाया जाता है। निकेतन का अर्थ है घर और शांति, ऐसा स्थान, जहाँ शांत वातावरण हो और आसपास का माहौल आपको शहर की भीड़ से दूर कुछ पल सुकून प्रदान करे। कई विख्यात हस्तियाँ, जैसे इंदिरा गांधी, सत्यजीत रे, गायत्री देवी, नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन और अबुल गनी खान शांतिनिकेतन में प्रवास पर रहे हैं। यह स्थान देशी और विदेशी पर्यटकों के भ्रमण के लिए खास स्थान है। शांतिनिकेतन के दौरे पर आकर आप कट्टरपंथी कला, नृत्य और संस्कृति को एक साथ देख सकते हैं।

शांतिनिकेतन में हमेशा कोई-न-कोई कार्यक्रम चलता ही रहता है, इस कारण यहाँ का परिसर सदैव जीवंत रहता है। यहाँ पर कई तरह के आयोजन

साल भर होते रहते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर का जन्मदिन अप्रैल मध्य में मनाया जाता है। शांतिनिकेतन में प्रतिवर्ष, अगस्त/सितंबर के महीने में मानसून के दिनों में पौधों को रोपने का काम किया जाता है, जिसे 'वृक्षारोपण त्योहार' के नाम से जाना जाता है। शांतिनिकेतन में ब्रह्म मंदिर की स्थापना के उपलक्ष्य में पौष उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव दिसंबर से जनवरी माह के बीच में मनाया जाता है। इसमें लोक नृत्य, संगीत, कला, संस्कृति, खेल और कलाकृतियों आदि का प्रदर्शन किया जाता है। इसके अलावा माघोत्सव, जयदेव मेला और बसंत उत्सव भी यहाँ के ऐतिहासिक आयोजन हैं। शांतिनिकेतन बंगाली भोजन के लिए प्रसिद्ध है, विशेषतौर पर फिश करी यहाँ पर सबसे ज्यादा पसंद की जाती है। यहाँ का विश्वभारती कैंपस काफी विशाल और सुंदर है। यहाँ के कला व शिल्प कॉलेज में मूर्तियाँ, भित्तिचित्र आदि को दरशाया गया है। इसके अलावा यहाँ कई पुस्तकों का विशाल संग्रहालय भी है। पारंपरिक ब्रह्माचार्य आश्रम को पटना भवन के द्वारा फॉलो किया जाता है। यहाँ पर हर बुधवार को प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है। कविवृंद यहाँ के उत्तरायण परिसर में रहते हैं और वहीं विभिन्न कार्यों को करते हैं। शांतिनिकेतन के पास में ही अन्य स्थल भी

विश्वविद्यालय परिसर : शांतिनिकेतन

मौजूद हैं, जैसे कानकालीताला, जो एक पवित्र सत्त पीठ स्थल है, यह स्थल बुधवार के अलावा शेष सभी दिनों में खुला रहता है। जॉयदेव-कुंडुली, लेखक गीत गोविंदा का जन्मस्थान है। यहाँ एक मंदिर है 'नानुर', जो कि देवी भुसुली को समर्पित है। इसके अलावा यहाँ बाकरेश्वर है, जो कि एक पानी का झरना है। शांतिनिकेतन की यात्रा के दौरान तारापीठ, लावपुर, फुलारा, साईनाथ, नंदेश्वरी, नालहटी और मसनजोर में भी सैर के लिए जाया जा सकता है।

शांतिनिकेतन की स्थापना रवींद्रनाथ टैगोर के लिए किसी स्वप्न की भाँति थी। यह उनके लिए जिद और जुनून जैसा ही कुछ था तथा उससे भी आगे बढ़कर जीवन लक्ष्य, तभी तो शांतिनिकेतन के निर्माण के दौरान एक-एक करके पहले पत्नी, फिर पुत्री, फिर पिता और फिर पुत्र को खो बैठने के बावजूद वे अपने काम से नहीं डिगे। कोई साधारण मानसिकता का व्यक्ति होता तो वह इन घटनाओं से विचलित होकर अवश्य ही हिम्मत हार जाता, परंतु ऐसा नहीं हुआ और शांतिनिकेतन अकेला उनके जीने का मकसद बना रहा, इसलिए कि उनका परिवार भी वह था और समाज भी वही। अपने परिवार को खोने के बाद वे परिवार की कल्पना को विस्मृत कर सभी चीजों से खुद को जोड़कर देखने लगे थे। 'मेरा घर सभी जगह है, हरेक घर में मेरे निकट संबंधी हैं और मैं उन्हें हर स्थान पर तलाश करता हूँ।' ये पंक्तियाँ लिखनेवाले रवींद्रनाथ टैगोर के लिए वे परिस्थितियाँ आत्मनिर्वासन भी थीं और आत्मविस्तार भी।

बचपन में सुनते थे कि कहानीवाले राजा की जान हमेशा तोते में बसती है, रवींद्रनाथ टैगोर के लिए वह तोता शांतिनिकेतन ही हो गया था, यह बात कोई अतिशयोक्ति नहीं है। गुरुदेव का एक पत्र इसकी सबसे अच्छी गवाही देता है। यह 1930 की बात है, जब टैगोर मॉस्को के पास के किसी शहर में रहते थे। उस समय उन्होंने अपनी पोती श्रीनंदिनी को एक चिट्ठी लिखी, जिसमें वे लिखते हैं कि 'मैं जहाँ हूँ, वहाँ की बात तुम सोच भी नहीं सकती। आज शाम मोटर से मॉस्को जाऊँगा। यहाँ शानदार बाग हैं। दूर तक जहाँ भी नजर जाती है, बड़े-बड़े पेड़ोंवाले जंगल हैं, आसमान पर बादल छाए हैं,

हवा में ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की फुनगियाँ झूल रही हैं, घड़ी नहीं है, पर अंदाजे से यह लग रहा है कि सुबह के आठ बजनेवाले होंगे, पर खिड़की से अभी भी चाँद-तारे दिखाई दे रहे हैं।' टैगोर पत्र में यहाँ तो उस रूसी नगर की खूब तारीफ कर रहे हैं, लेकिन फिर आगे लिखते हैं—मेरा जी यह चाहता है कि शांतिनिकेतन चला आऊँ और इस बार अगर लौटूँ तो लाख हिलाने से भी वहाँ से न हिलूँ। वहाँ पर बैठा-बैठा बस चित्रकारी करूँगा···हाथ में छड़ी लेकर सुबह रोज अपने लाल बजरीवाले बाग में टहलने निकल जाया करूँगा। शांतिनिकेतन के प्रति यह उनका लगाव ही था कि बंगाल से हजारों कि.मी. दूर रूस के एक खूबसूरत शहर में भी उन्हें बरबस शांतिनिकेतन की याद आ जाती है और वे हमेशा के लिए यहाँ आकर बसने की बात करते हैं। अकसर ऐसा काफी बार व्यक्तिगत जीवन में भी होता है, हफ्ते भर के विदेश यात्रा से मन पूर्ण रूप से भर जाता है और वापस अपने गंतव्य स्थान को लौटने को करता है। मुझे बताया गया कि गुरुदेव इंडोनेशिया की सांस्कृतिक सुंदरता के साथ-साथ नैसर्गिक सुंदरता से भी अत्यंत प्रभावित थे, लेकिन फिर भी निकेतन उनके लिए सर्वोच्च स्थान रखता था।

शांतिनिकेतन से रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक लगाव से प्रभावित होकर महात्मा गांधी ने उन्हें गुरुदेव, यानी गुरुओं के भी गुरु या आराध्य की उपाधि दी थी। शांतिनिकेतन घूमकर यह बात पूर्ण रूप से समझ आई कि आखिर क्यों उन्हें 'गुरुदेव' की उपाधि दी गई।

नोबेल पुरस्कार पानेवाले रवींद्रनाथ टैगोर पहले भारतीय ही नहीं, बल्कि

विश्वभारती विश्वविद्यालय परिसर

पहले एशियाई भी थे। मैंने अपनी शांतिनिकेतन यात्रा के दौरान महसूस किया कि गुरुदेव के प्रशंसक देश-विदेश तक फैले हैं, उनके प्रशंसकों में यीट्स और आंद्रेजीद जैसे बड़े नाम रहे। यीट्स ने न सिर्फ 'गीतांजलि' की भूमिका लिखी, बल्कि वे यह तक मानते थे कि उनकी अपनी भाषा में टैगोर की टक्कर का कोई भी कवि नहीं है। यीट्स ने एक जगह कहा भी है कि 'गीतांजलि' की भूमिका लिखने से पहले वे उसे साथ लेकर लगातार घूमते रहे, कारण यह कि उसे एक साँस में या फिर एक साथ पढ़ जाना उनके लिए बिल्कुल असंभव जैसा था और इसे पढ़ते हुए वे सार्वजनिक स्थलों पर भी रो पड़ते थे। यदि हम देशकाल के संदर्भ को किनारे भी कर दें तो एक बड़े कवि एवं एक नए कवि की प्रशंसा में इससे बड़े शब्द भला क्या हो सकते हैं?

कवि गुरु रवींद्रनाथ टैगोर के शांतिनिकेतन में जाकर लगा कि किस प्रकार एक विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और परंपरा को अक्षुण्ण रखते हुए जैव तकनीक, भौतिकी एवं कंप्यूटर एप्लीकेशंस के साथ-साथ संगीत, डांस एवं कला की पढ़ाई कर सकते हैं। यह सुखद आश्चर्य वाली बात है कि वर्ष 1901 में गुरुदेव द्वारा केवल 5 छात्रों को लेकर शुरू किया गया यह विश्वविद्यालय आज एक अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालय बन गया है।

शांतिनिकेतन के विषय में एक बात, जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह है पूर्वी और पाश्चात्य शिक्षा-मूल्यों में तालमेल बिठाना।

इस संस्था ने आधुनिक सोच और सांस्कृतिक मूल्यों में अत्यधिक सफल समन्वय स्थापित करते हुए, ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक विधाओं में विधार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में सफलता पाई है। इस विश्वविद्यालय में विज्ञान के कई विभाग हैं। वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, कंप्यूटर और सिस्टम विज्ञान, डिजाइन, सिरेमेटिक ग्लास, पर्यावरण अध्ययन, अंकशास्त्र, भौतिक विज्ञान, आँकड़े, प्राणी विज्ञान, आईएसईआरसी, जैव-प्रौद्योगिकी, गणित की शिक्षा के लिए केंद्र, लाइफ साइंसेज के स्कूल एवं ग्राफिक कला, इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में सामाजिक विज्ञान और भाषा को बड़ा महत्त्व दिया जाता है। शांतिनिकेतन में भाषाओं के अत्यंत प्रतिष्ठित विद्यालय

हैं। असमिया, मराठी, अरबी, फारसी, इस्लामिक स्टडीज, बंगाली, चीनी भाषा और संस्कृति, अंग्रेजी भारत और तिब्बती अध्ययन, जापानी, ओरिया, संस्कृत, पाली और प्राकृत, संथाली, तमिल, हिंदी के अलावा अर्थशास्त्र तथा राजनीति का एक श्रेष्ठ विद्यालय शांतिनिकेतन में है।

मुझे अपनी इंडोनेशिया यात्रा के दौरान प्रोफेसर यूलिया ने कहा कि यदि आप प्रकृति, संस्कृति और शिक्षा से प्रेम करते हैं, तो पश्चिम बंगाल में शांतिनिकेतन एक ऐसी जगह है, जहाँ आपको अवश्य जाना चाहिए। उन्होंने आगे यह भी बताया कि शिक्षा, अनुसंधान, कला एवं संगीत का श्रेष्ठ संस्थान होने के साथ-साथ नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित विश्वभारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के सबसे प्रसिद्ध पर्यटक आकर्षणों में से एक है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि शांतिनिकेतन न केवल एक शैक्षिक संस्था है, बल्कि ग्राम्य विकास के सांस्कृतिक मूल्यों तथा कला संस्कृति की रक्षा हेतु अंतरराष्ट्रीय संस्थान है। कला का इतिहास, चित्र, मूर्ति, महिला अध्ययन केंद्र के लिए आधुनिक यूरोपीय भाषाओं, साहित्य और संस्कृति अध्ययन केंद्र, कृषि विज्ञान, बागबानी और पोस्ट-हार्वेस्ट प्रौद्योगिकी (एचपीएचटी), कृषि विस्तार, भूगोल, इतिहास, दर्शन और धर्म, पत्रकारिता एवं जनसंचार के लिए केंद्र, मनुष्य जाति का विज्ञान, शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, शास्त्रीय संगीत, रवींद्र संगीत नृत्य और नाटक, शिक्षा सत्र, पाठभवन, पल्ली चर्चा केंद्र, शिल्प सदन, सामाजिक कार्य, ग्रामीण विस्तार केंद्र एवं पौध-संरक्षण जैसे विभागों के माध्यम से शांतिनिकेतन देश और दुनिया के श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों में शामिल है।

मुझे बताया गया कि यहाँ के दीक्षांत समारोह में विश्वभारती विश्वविद्यालय के प्रत्येक स्नातक को उनके मूल कार्यों की याद दिलाने के लिए पेड़ की एक शाखा से सम्मानित किया जाता है। विश्वविद्यालय का स्वरूप देखने योग्य है। व्यक्तिगत रूप से मैं अपने पाठकों से वहाँ जाने का आग्रह करूँगा।

रवींद्र भवन संग्रहालय—रवींद्र भवन कवि की तसवीरों, स्मृति चिह्न,

परंपरागत कक्षा विश्वभारती विश्वविद्यालय

चित्रकारी और अन्य वस्तुओं के अलावा 40,000 पुस्तकों और 12,000 पत्रिकाओं का घर है। यह संग्रहालय शांतिनिकेतन की सबसे दिलचस्प जगहों में से एक है। रवींद्र भवन जाकर गुरुदेव के जीवन की बारीकियों को समझने में मदद मिलती है। उत्तरायण कॉम्प्लेक्स-उत्तराखंड कॉम्प्लेक्स शांतिनिकेतन की सबसे आकर्षक जगहों में से एक है। यहाँ की इमारतों में एक प्रार्थना हॉल है, जहाँ आगंतुक ध्यान लगाते हैं और मनन करते हैं। ईश्वर की आराधना में डूबे श्रद्धालु आपको यहाँ अकसर मिलते हैं। विश्वविद्यालय में गुरुदेव रवींद्र को प्राप्त नोबेल पदक प्रदर्शन के लिए संगृहीत हैं। परिसर में प्रत्येक इमारत को एक अलग वास्तुकला के हिसाब से बनाया गया है।

श्रीजनी शिल्पा ग्राम—शिल्पा ग्राम बीरभूम, संस्थान संस्कृति, स्थानीय कला और संस्कृति के ग्रामीण जीवन का वर्णन करता है। इसके अतिरिक्त गाँव के परिपेक्ष्य को समझने हेतु श्रीनिकेतन है। श्रीनिकेतन विश्वभारती विश्वविद्यालय का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जो आर्थिक और ग्रामीण विकास पर केंद्रित है और यह खोज के लिए एक सुंदर जगह है।

शांतिनिकेतन कोलकाता से पाँच घंटे में कार द्वारा पहुँचा जा सकता है। शांतिनिकेतन पश्चिम बंगाल राज्य के बीरभूम जिले में स्थित है, इसका निकटतम प्रमुख शहर बोलपुर है, जो पश्चिम बंगाल राज्य की राजधानी कोलकाता से लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हालाँकि हाइवे का रास्ता ज्यादा दूर पड़ता है। हवाई यात्रा करनेवाले या विदेशियों हेतु शांतिनिकेतन की यात्रा के लिए कोलकाता का हवाई अड्डा सबसे निकटतम है। अंतरराष्ट्रीय छात्र और आगंतुक कोलकाता (सीसीयू) हवाई अड्डे से एक कार किराए पर लेकर शांतिनिकेतन को जा सकते हैं।

शांतिनिकेतन पहुँचने के लिए रेल का अच्छा नेटवर्क है। देश के विभिन्न भागों से लोग सस्ते में ट्रेनों से आना पसंद करते हैं। कोलकाता बोलपुर से आने वाले आगंतुकों के लिए कई स्थानीय ट्रेनें, सियालदह स्टेशन और रामपुरहाथ के बीच चलती हैं। इन ट्रेनों में आमतौर पर आरक्षण की आवश्यकता नहीं होती है, किसी असुविधा से बचने हेतु आरक्षण करवाना ही उचित है। राज्य सरकार द्वारा इस महत्त्वपूर्ण जगह को जोड़ने के लिए बसें हैं, कोलकाता और बोलपुर के बीच कई राज्य परिवहन और निजी बसें चलती हैं। इस मार्ग पर सबसे ज्यादा चलनेवाले वाहन निजी टैक्सी या कार हैं। यह सड़क पक्की है और यहाँ सुगमतापूर्वक यात्रा की जा सकती है। बोलपुर से शांतिनिकेतन मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर है। कई ऑटो और रिक्शा वहाँ जाने के लिए उपलब्ध रहते हैं।

शांतिनिकेतन में देखनेवाले स्थान

टैगोर आश्रम—1863 में देबेंद्रनाथ टैगोर द्वारा ब्रह्म समाज के रूप में स्थापित यह आश्रम अब विश्वभारती विश्वविद्यालय शांतिनिकेतन के केंद्र में स्थापित है। जहाँ हजारों लोग आकर गुरुदेव के जीवन को नजदीक से देखने का प्रयास करते हैं।

छत्तिमताला—प्रार्थना कक्ष की बगल में छत्तिमताला, देबेंद्रनाथ टैगोर के ध्यान करने का स्थान है।

चीना भवन—कवि द्वारा 1937 में चीन के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से चीना भवन की स्थापना की गई, अब यह भवन विश्वविद्यालय का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

निप्पॉन भवन—निप्पॉन भवन जापानी अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है और यह भारत-जापान संस्कृति का आदान-प्रदान करने में सहायक भी है। निप्पॉन भारत और जापान के मध्य सांस्कृतिक एवं शैक्षिक सहयोग को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

ब्रह्मा मंदिर—ब्रह्मा मंदिर की स्थापना 1891 में हुई थी। यह एक महत्त्वपूर्ण ध्यान करने योग्य स्थान है, यहाँ पर कई लोग ध्यान करते हुए देखे जा सकते हैं।

अमर कुथिर—यह एक शोरूम है और शांतिनिकेतन के कुटीर उद्योगों के सर्वश्रेष्ठ उत्पादों की दुकान भी है। 'कुथिर' शब्द 'कुटिर' का समानार्थी हिंदी से लिया गया है। परंपरागत हस्तशिल्प के अतिरिक्त यह स्थान कपड़े पर अद्वितीय चमड़े का काम और कांथा कढ़ाई के लिए भी जाना जाता है।

बल्लवपुर वन्यजीव अभयारण्य—बल्लवपुर वन्यजीव अभयारण्य सैकड़ों पक्षियों, चीतल (धब्बेदार हिरण), ब्लेकबक्स और अन्य जानवरों का घर है। सर्दियों के दिनों में आनेवाले सैकड़ों प्रवासी पक्षियों के लिए यह एक वंशावली स्थान है। शांतिनिकेतन के प्राण के रूप में सांस्कृतिक मिश्रण के अलावा, यहाँ पास में दो काली माताजी के मंदिर हैं, जो कि बहुत ही प्रसिद्ध हैं और हजारों भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

कंकालितला—शांतिनिकेतन से लगभग 9 कि.मी. की दूरी पर कंकालितला मंदिर, देवी काली को समर्पित है। यह प्रसिद्ध मंदिर के साथ-साथ एक शांतिपूर्ण शक्तिपीठ भी है।

तारपीठ—बोलपुर से 55 कि.मी. दूर एक और शक्तिपीठ है, जिसे 'तारपीठ' के नाम से जाना जाता है। माँ भगवती का यह सिद्धपीठ प्रत्येक वर्ष लाखों श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है।

शांतिनिकेतन को मैं गुरुदेव की दूरदर्शिता, प्रखरता और राष्ट्र के प्रति

उनके प्रेम का साक्षात् दर्शन मानता हूँ। नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित विश्वभारती विश्वविद्यालय शांतिनिकेतन के सांस्कृतिक पर्यावरण केंद्र में स्थापित है। रवींद्रनाथ टैगोर ने 1900 के प्रारंभ में एक शैक्षिक संस्था (स्कूल-विद्यालय) की स्थापना ब्रह्मचर्य आश्रम के बाहर की थी। मुझे इस बात का सुखद आश्चर्य हुआ कि इंडोनेशिया के शैक्षिक जगत् में शांतिनिकेतन को अधिकतर लोग पहचानते हैं। प्रत्येक देशवासी गुरुदेव का ऋणी है। उनकी सहृदयता का यह आलम है कि अपना सर्वस्व विश्वविद्यालय के निर्माण में समर्पित किया। उन्होंने अपने नोबेल पुरस्कार की राशि और अपनी पुस्तक 'रॉयल्टी' इस विद्यालय के विकास कार्यों के लिए प्रदान कर दी थी, जिसके कारण इस विद्यालय को 1951 में विश्वविद्यालय का दर्जा मिला था।

विश्वभारती विश्वविद्यालय अब एक बहु-अनुशासनात्मक विश्वविद्यालय माना जाता है, जिसके कारण दुनिया भर के शिक्षक और छात्र इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान करने की दिशा में अपने कट्टरपंथी दृष्टिकोण के लिए सबसे अच्छा इसलिए माना जाता है, क्योंकि यहाँ तर्क-वितर्क, कार्यशालाएँ, खुली वायुवाली कक्षाएँ और सांस्कृतिक विषयों के आदान-प्रदान पर जोर दिया जाता है। विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुछ पूर्व प्रसिद्ध छात्रों में इंदिरा गांधी, सत्यजीत रे, अमर्त्य सेन, आर. शिव कुमार और सुचित्रा मित्रा शामिल हैं।

बंगाल के बाउल लोक गीतकार—बंगाल के बाउल लोक गीतकार खनन और रहस्यवादी प्रेमी गायन का एक समूह है। बाउल लोक गीतकार तीन रातें एक जगह नहीं बिताते हैं और ये धार्मिक टिप्पणियों के बजाय आध्यात्मिक रूप वाले गाने गाते हैं। इस्लाम के सूफी संतों की तरह बाउलो ने भी बंगाली संस्कृति और समाज पर काफी प्रभाव डाला तथा राज्य की साहित्यिक और संगीत विरासत में अपनी अहमियत को प्रदर्शित किया है। बाउल बोलपुर क्षेत्र के शांतिनिकेतन संस्कृति केंद्र में भी रहे हैं। बाउल कलाकार शांतिनिकेतन के सड़क किनारे और गलियों पर अनोखे तरीके से

गाते और नृत्य करते हुए निकलते थे, यह देखनेवाले प्रत्येक स्थानीय दर्शक के लिए एक सामान्य-सी बात होती थी।

हर साल हजारों आगंतुक और छात्र शांतिनिकेतन की यात्रा करते हैं। कुछ पढ़ने के लिए, कुछ भारतीय संस्कृति के जीवंत रूप के दर्शन के लिए और कुछ गुरुदेव के इस मंदिर में उनके जीवन को समझने हेतु यहाँ आते हैं। कलकत्ता क्षेत्र में सबसे अच्छी छुट्टियाँ बितानेवाले स्थान के अलावा यह देश का एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र भी है। अपनी प्रकृति, शांतिपूर्ण प्राचीन रख-रखाव, शैक्षिक उत्कृष्टता और कुटिर उद्योगों पर जोर देने के कारण शांतिनिकेतन पश्चिम बंगाल ही नहीं, बल्कि देश के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। जैसा कि सर्वविदित है कि भारत के पूर्व स्वतंत्रता के वर्षों के दौरान इस शहर ने सबसे स्वतंत्र और प्रगतिशील विचारकों के साथ टैगोर के आश्रम में काम करने, लिखने और स्वतंत्र भारत की कल्पना करने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इस नाते यह स्थान हम सबके लिए शिक्षा के केंद्र के अतिरिक्त स्वाधीनता संग्राम के दौर का तीर्थस्थल भी है। जो लोग सैकड़ों विदेशी छात्राओं को भारत के विश्वभारती और शांतिनिकेतन में आकर्षित करते हैं, वे भारत की सांस्कृतिक विरासत और कुटिर उद्योगों को निष्कलंकीय तरीके से सुरक्षित रखते हैं।

शांतिनिकेतन ने अपने आपको एक ऐसे केंद्र के रूप में विकसित किया है, जहाँ हमारी संस्कृति एवं हमारी परंपराओं का उत्सव मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति की देहाती धारणाओं को ध्यान में रखते हुए, शांतिनिकेतन में मनाए जाने वाले अधिकांश त्योहार प्रकृति से जुड़े हुए हैं। 25 बोईसाक और 22 स्त्राबान (बंगाली कैलेंडर की तिथियों) के अलावा रवींद्रनाथ टैगोर के जन्म की पुण्यतिथि और अन्य महत्त्वपूर्ण त्योहारों में बसंत उत्सव (होली), बरशा मंगल, शरदोत्सव और नंदन मेला यहाँ के प्रमुख त्योहारों में शामिल हैं। पारंपरिक हर्षोल्लास से मनाए जाने वाले इन त्योहारों में कई विदेशी लोग भी हिस्सा लेते हैं। दिसंबर के अंत में मनाया जानेवाला पूस मेला (बंगाली कैलेंडर के पूस महीने के अनुसार) इस क्षेत्र के सबसे रंगीन मेलों और

त्योहारों में से एक है। प्रारंभिक वर्षों में इस तीन दिवसीय भव्य मेले का आयोजन ब्रह्मा मंदिर में भव्य आतिशबाजी प्रदर्शन से किया जाता था। वर्तमान समय में शांतिनिकेतन में कुटिर उद्योगवाले ठेलों की स्थापना की जाती है, जिससे बाहरी आगंतुकों को यहाँ के बारे में शिक्षा प्राप्त करने और विभिन्न कलाकृतियों को खरीदने में मदद मिलती है। कुल मिलाकर शांतिनिकेतन गुरुदेव रवींद्रनाथ की तपस्थली के साथ आधुनिक शिक्षा संगीत, कला मंदिर और भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ा पुण्यस्थल है, जो आनेवाली पीढ़ियों को जीवन में प्रेरित और प्रोत्साहित करता रहेगा।

□

इंडोनेशिया : विश्व पर्यटन के फलक पर

दक्षिण अमेरिकी देश ब्राजील के समान जैव-विविधता से भरपूर मलेशिया और ऑस्ट्रेलिया के बीच हजारों द्वीपों पर फैला इंडोनेशिया विविध धर्म, जाति और संप्रदायों का अत्यंत खूबसूरत देश है, जो पूरी दुनिया से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। विश्व पर्यटन का बड़ा केंद्र होने के साथ यह देश पूर्वी एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी है। जातीय तौर पर यह विविधताओं से भरा देश है, जिसमें 300 से ज्यादा स्थानीय भाषाओं का इस्तेमाल होता है। यहाँ ग्रामीण शिकारियों और घुमंतुओं से लेकर आधुनिक शहरी अभिजात्य वर्ग तक के लोगों का बसेरा है। यह राष्ट्र विश्व में अपनी किस्म का अनोखा देश है। इंडोनेशिया में अन्य देशों की तुलना में सबसे ज्यादा द्वीप स्थित हैं। इसकी अनुमानित जनसंख्या 26 करोड़ से भी ज्यादा है और यह दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आबादीवाला देश है। इंडोनेशिया तेजी से उभरती अर्थशक्ति और दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के समूह जी-20 का सदस्य भी है। देश में उपभोक्ताओं की बड़ी तादात, समृद्ध प्राकृतिक संसाधन और राजनीतिक स्थिरता निवेशकों को आकर्षित करती है, हालाँकि भारत की तरह अपर्याप्त मूलभूत सुविधाएँ, अवस्थापना की कमी, भ्रष्टाचार और आर्थिक संरक्षणवाद एवं रेड टेप की बढ़ती माँग से अकसर निवेशक हतोत्साहित होते हैं।

मुझे लगता है कि शायद इन्हीं के कारण व्यापक संसाधन होने के बावजूद इंडोनेशिया उस मुकाम को हासिल नहीं कर पाया है, जहाँ उसे

होना चाहिए था। एक ओर प्राकृतिक कारण, जिसके मद्देनजर इंडोनेशिया का व्यापक औद्योगीकरण नहीं हुआ, क्योंकि भौगोलिक तौर पर इंडोनेशिया भूकंप और ज्वालामुखी विस्फोट के प्रति संवेदनशील है। वर्ष 2004 के दौरान समुद्र में आए भारी भूकंप ने पूरे दक्षिण और पूर्वी एशिया के तटीय इलाकों को तबाह कर दिया था। हिंद महासागर में आई इस सुनामी में करीब 2,20,000 इंडोनेशियाई लोग मारे गए थे या फिर लापता हो गए थे। सामाजिक, राजनीतिक असंतोष के चलते देश के कई प्रांतों में समय-समय पर स्वतंत्रता की माँग भी उठती रही है। राष्ट्रीय छुट्टी का दिन था और वहाँ कुछ इसी तरह का नजारा दिखाई दे रहा था, जैसा कि दिल्ली में इंडिया गेट पर होता है। मुझे यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि दुनिया की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादीवाले देश इंडोनेशिया में बड़े उत्साह के साथ बुद्ध पूर्णिमा मनाई जाती है तथा इस दिन राष्ट्रीय अवकाश होता है। इसे यहाँ 'हरि राया बैसाख' कहते हैं।

इंडोनेशिया में अगर पर्यटन की बात करें तो वहाँ की संस्कृति का वर्णन करना अति आवश्यक है। दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेषत: इंडोनेशिया में रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ खासे लोकप्रिय हैं। भारत के लोगों के लिए वह धर्म हो सकता है, परंतु मुस्लिम बाहुल्य इंडोनेशिया की सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है। मानव समाज की कहानियों में दिलचस्पी ज्यादातर धर्मों के फलने-फूलने की एक बड़ी वजह रही है। रामायण और महाभारत की दक्षिण एशिया में लोकप्रियता को देखकर भारत के हिंदुओं को गौरव महसूस होता है। कुछ साल पहले भारत के पूर्व उप-प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणीजी बाली गए थे और उन्होंने वहाँ पर हिंदू विरासत को कायम रखने के लिए इंडोनेशिया की काफी प्रशंसा की थी। आडवाणीजी ने स्वयं मुझे इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति की जीवंतता की बातें बताईं। इंडोनेशिया में मुझे इस बात पर ताज्जुब हुआ कि दुनिया की सबसे अधिक मुस्लिम आबादीवाला यह राष्ट्र अपने हिंदू और बौद्ध अतीत के साथ किस

तरह से सहज गौरवान्वित है। इंडोनेशिया में हिंदू मुस्लिम और ईसाइयों के बीच तरह-तरह की विभाजन रेखा, हिंदी विचारधारा की मूल अवधारणा के खिलाफ है। हिंदू धर्म सबको साथ लेकर चलने में विश्वास रखता है। इंडोनेशिया में कट्टर इस्लाम में यकीन रखनेवालों की एक बड़ी जमात है, परंतु वे दूसरी जगहों में फैल रहे इस्लामी कट्टरपंथ की तुलना में उतने मुखर नहीं हैं।

मुझे इंडोनेशिया के एक अत्यंत सफल पर्यटक गंतव्य होने के कारण वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता के अतिरिक्त वहाँ के लोगों की विनम्रता, सहनशीलता, समरसता और सभी धर्म तथा संप्रदायों के प्रति आदर के भाव ने प्रभावित किया। इंडोनेशिया के लोग अपने विशिष्ट आतिथ्य प्रेम के लिए जाने जाते हैं। इसका दर्शन मैंने अपनी यात्रा के दौरान किया, जहाँ पर हम पल-पल उनके श्रेष्ठ आतिथ्य के लिए कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे थे। हर छोटी-छोटी चीज का इतना ध्यान रखा गया था, जो कि अपने आप में विलक्षण है।

इंडोनेशिया में भ्रमण के दौरान मुझे यह भी अनुभव हुआ कि इंडोनेशिया में खाने-पीने की वस्तुएँ अत्यंत सस्ती हैं और होटल आदि भी कम दाम में उपलब्ध हो जाते हैं। कुल मिलाकर अन्य देशों के मुकाबले यहाँ आकर कम पैसों में जैव-विविधता से भरे प्राकृतिक नजारों को देख ही नहीं, बल्कि उन्हें महसूस भी कर सकते हैं। भारत, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर एवं यूरोप समेत कई देशों के लोग यहाँ घूमने आते हैं। इंडोनेशिया और सार्क देशों में पर्यटन की बड़ी संभावना है। इंडोनेशिया और भारतीय उपमहाद्वीप देशों के बीच बहुत अच्छे संबंध हैं, जिससे पर्यटकों को आकर्षित करने में मदद मिलेगी। इंडोनेशिया भी दक्षिण एशियाई पर्यटन और यात्रा एक्सपो 2016 में भाग ले चुका है। मुझे बताया गया कि इस एक्सपो का अच्छा-खासा लाभ मिला है।

इंडोनेशिया में रहकर मुझे मालूम हुआ कि हर साल दुनिया भर में लगभग एक करोड़ पर्यटक इंडोनेशिया घूमने आते हैं, लेकिन भारत से

केवल 2,70,000 लोग ही आते हैं। इंडोनेशिया सबसे ज्यादा सिंगापुर के पर्यटकों को आकर्षित करता है और उसके बाद मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया, चाइना, जापान, साउथ कोरिया और आखिर में भारत से सबसे कम पर्यटक आते हैं, हालाँकि मुझे लगता है कि यह स्थिति शीघ्र बदलेगी।

इंडोनेशिया भारत की संभावनाओं से भलीभाँति परिचित है। इंडोनेशिया ने इस बात का एहसास करते हुए कि भारत एक बहुत बड़ा बाजार है और विश्व की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का एक बड़ा वर्ग है, इसीलिए इंडोनेशिया सरकार ने भारतीयों को मुफ्त वीजा प्रदान करने का निर्णय लिया है। हमने इस साल भारत से 3,50,000 भारतीय पर्यटकों को आकर्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। विदेश जानेवाले भारतीय पर्यटकों की पहली पसंद प्राकृतिक रूप से इंडोनेशिया व बाली है, क्योंकि वहाँ पर वे अपने आप को अत्यंत सहज महसूस करते हैं। भारत से ज्यादातर लोग इंडोनेशिया घूमने के लिए जाते हैं, ऐसा इसलिए भी हो सकता है कि वे इंडोनेशिया में अन्य स्थानों के बारे में न जानते हों। मुझे लगता है कि इस बात का प्रयास हो कि भारतीय इंडोनेशिया के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी रखें। बाली तक ही हम सीमित न होकर जावा, सुमात्रा एवं योगयकार्ता जैसे विशेष क्षेत्र में भी जाएँ।

इंडोनेशिया का पर्यटन उद्योग अपने देश की जीडीपी में 9 प्रतिशत का योगदान देता है। यह देश अपनी दूरगामी योजनाओं की बदौलत पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दे रहा है और 2019 के आखिर तक देश की कुल जीडीपी में पर्यटन से 15 प्रतिशत तक का योगदान रहेगा। किसी भी विकासशील देश के लिए यह अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है, परंतु इंडोनेशिया का नैसर्गिक सौंदर्य देखते हुए यह कठिन नहीं लगता।

इंडोनेशिया में 60 प्रतिशत लोग यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को देखने आते हैं, 35 प्रतिशत लोग यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और शेष 5 प्रतिशत लोग मानव-निर्मित गतिविधियों का आनंद उठाने आते हैं।

मुझे अपनी इंडोनेशिया यात्रा के दौरान भारत-इंडोनेशिया के बीच सीधी कनेक्टिविटी की काफी कमी खली। एक तो इससे समय काफी ज्यादा लगता है और दूसरा किराया भी काफी अधिक है। दोनों देशों के बीच कोई सीधी विमान सेवा न होने के कारण इस तरह की समस्याएँ लोगों के आड़े आती हैं। भारत के लोग मलेशिया और सिंगापुर होते हुए यहाँ पहुँचते हैं, जो कि इंडोनेशिया के पर्यटन उद्योग को उतना लाभ प्रदान नहीं करा पाते, जितना कराना चाहिए था। मुझे कई लोगों द्वारा बताया गया कि सीधी उड़ान के अभाव में समय और पैसा दोनों नष्ट होते हैं। अब दोनों देशों के बीच सीधी उड़ान सेवा शुरू करने के लिए सहमति बन रही है। आशा है कि इस मुद्दे को जल्द ही सुलझा लिया जाएगा। मुझे आशा है कि मुंबई और बाली के बीच सीधी उड़ान भी शीघ्र ही शुरू हो जाएगी। गरुड़ इंडोनेशियाई एयरलाइंस दोनों देशों के बीच उड़ानों को संचालित करने के लिए सहमत हो गई है, इंडोनेशिया जाना भारतीय पर्यटकों के लिए तीन कारणों से पसंदीदा गंतव्य है। सर्वप्रथम भारतीयों को इंडोनेशिया अपने घर-सा लगता है, क्योंकि यहाँ के लोग अत्यंत विनम्र व मधुरभाषी हैं। यहाँ का खानपान हमारे देश से मेल खाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य पर्यटक केंद्रों की अपेक्षा रहना व खाना-पीना सुविधाजनक एवं किफायती है। सबसे महत्त्वपूर्ण हमें यहाँ रामायण-महाभारत आधारित नृत्य, शताब्दियों पुराने मंदिर एवं बौद्ध और हिंदू धर्म का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है।

योगयकार्ता में सर्वप्रथम हम प्रम्बानन मंदिर गए। नवीं शताब्दी में स्थापित यह मंदिर स्थापत्य कला का बड़ा आश्चर्य प्रतीत होता है। बार-बार यह सोचने पर दिमाग मजबूर होता है कि किस प्रकार इतने बड़े मंदिर का निर्माण इतनी खूबसूरती के साथ उस युग में किया गया, जब कोई बड़ी प्रौद्योगिकी एवं वैज्ञानिक साधन मौजूद ही नहीं थे। यूँ तो संपूर्ण इंडोनेशिया में अनेक मंदिर स्थापित हैं, जो कि भव्य एवं सुंदर होने के साथ-साथ वहाँ के जनमानस की आस्था का केंद्र भी हैं, लेकिन योगयकार्ता का हिंदू

मंदिर 'प्रम्बानन' पर्यटन की दृष्टि से भी वहाँ पर काफी प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण नवीं सदी में भगवान् ब्रह्माजी के प्रति आस्था के रूप में करवाया गया था।

सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी, संरक्षणकर्ता विष्णु भगवान् तथा विनाशक शिव महाप्रभुजी की सुंदर प्रतिमाएँ मंदिर में स्थापित हैं। यह दक्षिण-पूर्व एशिया में एक सबसे भव्य हिंदू मंदिर होने के साथ-साथ प्राचीन वास्तुकला के भी दर्शन करवाता है।

भारतीय महासागर से 70 मीटर ऊपर की तरफ बड़ी बीहड़-सी चूना-पत्थर की चट्टानों के किनारे स्थित बहुत ही सुंदर तथा दर्शनीय स्थल 'पुरा का उल्वात मंदिर' घुमक्कड़ तथा ऐतिहासिक स्थलों में विशेष रुचि एवं जिज्ञासा रखनेवाले सैलानियों के लिए एक बेहतरीन पड़ाव साबित होता है। सुंदर प्राकृतिक छटा से घिरा हुआ यह स्थान विशेषकर सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय बहुत ही मनमोहक नजर आता है। उल्वातु मंदिर का निर्माणकाल ग्यारहवीं शताब्दी के आसपास का है। यह अति सुंदर तथा अद्भुत मंदिर बाली के बुकिट प्रायद्वीप पर स्थित है, दर्शनार्थियों के लिए यह अति उत्तम स्थान है।

इंडोनेशिया में धार्मिक संतुलन बनाते हुए, दुर्लभ मंदिरों के साथ-साथ वास्तुकला को दर्शाती हुई भारतीय मस्जिदों का भी निर्माण हुआ है। इन्हीं मस्जिदों में से एक प्रसिद्ध मस्जिद बेतुरहमान ग्रंड मस्जिद है। इंडोनेशिया के सुंदर शहरों में से बाँदा आके शहर के मध्य में स्थित यह मस्जिद उत्तम वास्तुकला का सजीव उदाहरण है। यह कहना आवश्यक होगा कि बेतुरहमान ग्रंड मस्जिद बाँदा आके शहर के जनमानस के बीच समृद्धि, धर्म तथा संस्कृति का महत्त्वपूर्ण केंद्र है। मस्जिद की बनावट में स्थानीय शिल्प परंपरा और भारतीय मुगल वास्तुकला की छाप नजर आती है।

वर्ष 2004 में शहर बाँदा आके के आसपास के इलाकों में पहुँचा सुनामी तूफान इस मस्जिद के कुछ हिस्सों को प्रभावित कर गया था, परंतु

इसके बावजूद वहाँ के लोगों के दिलों में इस मस्जिद के प्रति जरा भी महत्ता कम नहीं हुई। इंडोनेशिया पहुँचनेवाले पर्यटकों के लिए यह भी एक दर्शनीय स्थान हो सकता है।

इंडोनेशिया में ज्वालामुखी पर्वतों की एक शृंखला है तथा यहाँ पर कई सक्रिय ज्वालामुखी भी हैं, परंतु वे खतरे की जद से बाहर हैं। पूर्वी जावा में स्थित माउंट ब्रोमो, इंडोनेशिया के विभिन्न पर्वतों में से सबसे अधिक लोकप्रिय है। प्राकृतिक स्थलों पर पर्यटक आकर्षण की यदि बात करें तो सर्वप्रथम जावा के माउंट ब्रोमो का ही नाम आता है। यहाँ पर संगमरमर के पहाड़ों के मध्य से उठते सक्रिय ज्वालामुखी के धुएँ के बीच पर्वतों की खूबसूरत फिजा देखकर मन उमंगता से भर जाता है। सुहावने मौसम में सूर्योदय को देखना यहाँ पर बहुत ही मनमोहक लगता है। ज्वालामुखी की यह विशेषता तथा मन हर लेने वाली प्राकृतिक छटा पर्यटकों के मध्य एक विशेष आकर्षण का केंद्र रही है, जिसे अपने नयनों में समेटने तथा यादों में सँजोने हेतु देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक आते रहते हैं।

संपूर्ण इंडोनेशिया प्राकृतिक सौंदर्य के खूबसूरत नजारों से भरा पड़ा है। अनुपम दृश्यों एवं कुदरत की अद्‌भुत कृति 'छोबा झील' एक ऐसा ही उदाहरण है। इतिहास के अनुसार लगभग सत्तर हजार साल पुरानी यह झील 100 कि.मी. लंबी तथा 30 कि.मी. चौड़ी है। 'दानौ टोबा' के नाम से भी जानी-जानेवाली इस झील की गहराई लगभग पाँच सौ मीटर मानी गई है। टोबा झील से उठता धुआँ किसी सक्रिय ज्वालामुखी में विस्फोट जैसा प्रतीत होता है। इस झील का नाम भी प्राकृतिक सुंदरता में सबसे ऊपर लिया जाता है, जिसकी खूबसूरती को निहारने के लिए काफी संख्या में पर्यटकों का जमावड़ा यहाँ लगा रहता है।

इंडोनेशिया में बड़ी संख्या में जंगली जीव अपने प्राकृतिक वातावरण में स्वच्छंदता से विचरण करते हैं। कोमोडो ड्रैगन नामक जंगली प्राणी यहाँ इतना प्रसिद्ध है कि इसी के नाम से यहाँ पर एक कोमोडो नेशनल पार्क

बनाया गया है। इंडोनेशिया के फ्लोरोस में स्थित यह पार्क यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों में से एक है। आमतौर पर घरों में रहनेवाली छिपकली के विशालकाय रूप जैसे इस जीव की लंबाई लगभग दस फीट तथा वजन डेढ़ सौ किलो से भी ज्यादा हो सकता है। इसकी विशेषता यह है कि इसके शरीर पर सख्त खाल का आवरण होता है और इसकी जीभ साँप जैसी होती है तथा दाँत तीखे व नाखून पैने होते हैं। प्रकृतिप्रेमी तथा वन्य जीव से लगाव रखनेवाले लोगों के लिए कोमोडो नेशनल पार्क भी भ्रमण के लिए एक बेहतरीन स्थान साबित हो सकता है। यहाँ पर भी पर्यटकों का आगमन होता ही रहता है।

इंडोनेशिया के अनेक स्थान अपनी सुंदरता के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं। बाली द्वीप सुंदरतम स्थानों में से एक है, यहाँ की प्रकृति बहुत कुछ कहती है, जिसका अपना विशेष आकर्षण है। यहाँ के लोग चावल का उपयोग अपने भोजन के रूप में तो करते ही हैं, परंतु साथ ही वे इनसे उस क्षेत्र विशेष की सुंदरता को बढ़ाने का भी कार्य करते हैं। पहाड़ी ढलानों पर सर्पाकार खेत तथा उनमें लहलहाती हुई चावलों की फसलों की हरियाली भी यहाँ पर बाहर से आनेवाले पर्यटकों को खूब आकर्षित करती है। चावलों की खुशबू चित्त को आनंदित कर देती है। इस द्वीप में नारियल के पेड़ों की सुंदर वृक्षावली मनमोहक अनुभूति पैदा करती है। पर्यटक यहाँ पहुँचकर रात्रि विश्राम के समय असीम आनंद का अनुभव करते हैं। पर्यटकों के लिए इंडोनेशिया अनेक दिलचस्प स्थानों से भरपूर है, जहाँ पहुँचकर उन्हें प्रकृति के अद्भुत एवं दुर्लभ नजारों को देखने का मौका मिलता है। कुछ स्थान ऐसे भी हैं, जो वहाँ के लोगों द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाए गए हैं और काफी प्रसिद्ध भी हैं।

इंडोनेशिया में एक स्थल, जिसे 'राजा अम्पैट द्वीप' के नाम से जाना जाता है, यह जलक्रीड़ा व गोताखोरी के लिए मात्र इंडोनेशिया में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व में मनोरंजक स्थल के रूप में विख्यात है। राजा अम्पैट

द्वीप इंडोनेशिया के सबसे बड़े समुद्री पार्क के रूप में स्थित है, जहाँ विभिन्न समुद्री जीव तथा एक हजार से भी ज्यादा भिन्न-भिन्न प्रजाति की मछलियाँ, कछुए, शैवाल, हजारों प्रजातियों के मूँगा और सीपियाँ आदि पाए जाते हैं। इंडोनेशिया तथा विश्व का यह प्रसिद्ध स्थान पर्यटकों के लिए बहुत ही मनोरंजक, विशेषकर गोताखोरी के शौकीन लोगों के लिए सबसे उपयुक्त जगह है। यहाँ समय-समय पर पर्यटक मौज-मस्ती के लिए आते रहते हैं।

यहाँ पहुँचनेवाले पर्यटकों के लिए यह एक लोकप्रिय तथा शांतिपूर्ण इलाका है। यह सांस्कृतिक द्वीप के मध्य में स्थित है, जिसकी बनावट और सुंदरता अद्वितीय है। समृद्ध संस्कृति और आकर्षण से भरे विभिन्न समारोहों के लिए प्रसिद्ध यह स्थान वास्तव में अद्‍भुत है। पर्यटन की दृष्टि से इंडोनेशिया जाने पर यदि इस स्थान का भ्रमण न किया जा सके तो मान लीजिए कि आपकी यात्रा अभी अधूरी ही है।

विभिन्न पर्यटक स्थलों के अद्वितीय सौंदर्य के साथ ही इंडोनेशिया में कुछ स्थान ऐसे भी हैं, जहाँ आप प्रकृति की गोद में बैठकर ईश्वर की अद्‍भुत रचना का अहसास करते हैं। 'लंबोक द्वीप' इंडोनेशिया में एक ऐसा ही स्थान है, जहाँ प्रकृति अपने आप में सौंदर्य को सहेजे हुए है। बाली द्वीप के साथ ही इस द्वीप की सुंदरता भी बेमिसाल है। बाली द्वीप पर घूमने के लिए आनेवाले पर्यटक इस द्वीप पर भी अवश्य ही आते हैं। यह द्वीप इंडोनेशिया के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है, जहाँ पर आज भी बड़ी संख्या में पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है, विशेषकर हनीमून पर जानेवाले जोड़ों के लिए यह द्वीप उत्तम स्थान माना जाता है। इस प्रकार पर्यटन की दृष्टि से यदि देखा जाए तो इंडोनेशिया सैलानियों के लिए उत्तम व ताजगी से भरपूर देश है। जहाँ पर हसीन वादियाँ, खूबसूरत नजारे व अद्‍भुत पुरातात्त्विक स्थल बाँहें फैलाए आपके स्वागत में सदैव तत्पर रहते हैं।

इंडोनेशिया में हजारों ऐसे स्थान हैं, जो पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। कहा जाता है कि अगर इंडोनेशिया को पूरा घूमना हो तो सालों लग

सकते हैं, परंतु अगर विश्व प्रसिद्ध पर्यटन केंद्रों की बात करें तो कुछ स्थान ऐसे हैं, जो अपने नैसर्गिक सौंदर्य के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं, उनका विवरण यहाँ प्रस्तुत है—

बाली के समुद्र तट—संभवत: कई लोगों के लिए बाली का समुद्र तट इंडोनेशिया का सबसे लोकप्रिय अवकाश स्थल है। बाली में कई सांस्कृतिक स्थल और परंपराएँ हैं जो यहाँ की यात्रा को सार्थक बनाती हैं। लेकिन जो भी यात्री बाली की यात्रा करता है, उसके दिमाग में गरम रेत व नीला पानी होता है, और द्वीप की सुंदरता उसे कभी निराश नहीं करती है। 'कुटा' सबसे प्रसिद्ध समुद्र तट है और उन लोगों के लिए बहुत अच्छा है, जो सन-सर्फिंग (समुद्र के किनारे पैदल चलना) और दोस्तों के साथ मेल-जोल करना पसंद करते हैं। इसकी लोकप्रियता के कारण आपको यहाँ रेस्तराँ और पर्यटकों को आकर्षित करनेवाली गतिविधियों में कोई कमी नहीं मिलेगी। यदि आप कुछ शांत और कम भीड़ वाली जगह देखना चाहते हैं

सुरम्य सीढ़िनुमा धान के खेत

तो 'नुसा दुआ' का सौंदर्य उल्लेखनीय है। सानूर इंडोनेशिया के बाली द्वीप के दक्षिण-पूर्व में स्थित एक समुद्र तटीय शहर है। समुद्र तट के काफी बड़े हिस्से में उथले पानी की सुविधा है। रंग-बिरंगी जुकुंग मछली पकड़ने वाली नावें रेत पर आराम करती हैं, जो एक पक्के साइकिलिंग पथ द्वारा

सुंदर समुद्र तट (बाली)

चालित हैं। 'सानूर' थोड़ा और संस्कृति के साथ-साथ पानी के खेल के लिए प्रसिद्ध स्थान है।

बोरोबुदुर—बोरोबुदुर यूनेस्को (UNESCO) के विश्व धरोहर स्थल में शामिल है। यह मंदिर परिसर दुनिया के सबसे महान् बौद्ध स्मारकों में से

सक्रिय ज्वालामुखी

एक है, और इसे 8वीं–9वीं शताब्दी में शैलेंद्र राजवंश के शासनकाल के दौरान बनवाया गया था। स्मारक इंडोनेशिया के जावा द्वीप के केंद्र में, मध्य जावा के दक्षिणी भाग एवं केडू घाटी में स्थित है। मुख्य्य मंदिर पहाड़ी के चारों ओर तीन स्तरों में बना एक स्तूप है, जो एक प्राकृतिक केंद्र था—पाँच सांद्रिक वर्ग छतों वाला एक पिरामिड का आधार, तीन गोलाकार प्लेटफॉर्मों के साथ एक शंकु का ट्रंक और शीर्ष पर एक स्मारक स्तूप। दीवारों और balustrades को ठीक ढंग से सजाया गया है, जो कुल 2,520 वर्ग से.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। वृत्ताकार प्लेटफॉर्मों के चारों ओर 72 ओपनवर्क स्तूप हैं और प्रत्येक में बुद्ध की प्रतिमा है।

बेस, शरीर और अधिरचना में बोरोबुदुर मंदिर का ऊर्ध्वाधर विभाजन बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान की अवधारणा को ब्रह्मांड के अध्ययन से जोड़ता है। मंदिर को शैलेंद्र राजवंश के एक उत्कृष्ट राजवंशीय स्मारक के रूप में भी देखा जाता है, जिसने 10वीं शताब्दी तक, यानी पाँच शताब्दियों तक जावा पर शासन किया था।

बोरोबुदुर मंदिर के यौगिकों में तीन स्मारक शामिल हैं अर्थात् बोरोबुदुर मंदिर दो छोटे मंदिरों की पूर्व दिशा में स्थित है, जो बोरोबुदुर की सीधी धुरी पर स्थित है। दो मेंडुत मंदिर हैं, जिनके बुद्ध के चित्रण में दो बोधिसत्त्वों के साथ एक अखंड मोनोलिथ का प्रतिनिधित्व किया गया है। पवन मंदिर, एक छोटा मंदिर हैं, जिसके आंतरिक स्थान से प्रकट नहीं होता है कि यहाँ कौन से देवता की पूजा होती है। वे तीन स्मारक निर्वाण–प्राप्ति में सहायक चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मंदिर को 10वीं और 15वीं शताब्दी के बीच एक बौद्ध मंदिर के रूप में इस्तेमाल किया गया था, फिर इसे छोड़ दिया गया। 19वीं शताब्दी में इसकी फिर से खोज और 20वीं शताब्दी में इसके पुनरुद्धार के बाद से इसे एक बौद्ध पुरातात्त्विक स्थल के रूप में पहचाना जाता है।

बोर्नियो के ऑरंगुटंस—इंडोनेशिया की कोई भी यात्रा कुछ ऑरंगुटंस को देखे बिना पूरी नहीं होती। बोर्नियन ऑरंगुटन (पोंगो पायगमाइस)

ऑरेंजुटान मूल की एक प्रजाति है, जो बोर्नियो द्वीप में पाई जाती है। सुमत्रन ऑरंगुटन और तपनौली ऑरंगुटन के साथ मिलकर यह एशिया के मूल महान् वानर जाति का एकमात्र जीनस है। अन्य महान् वानरों की तरह वनमानुष अत्यधिक बुद्धिमान होते हैं, जो उपकरण उपयोग और जंगलों में अलग-अलग सांस्कृतिक पैटर्न प्रदर्शित करते हैं। ऑरंगुटंस अपने डी.एन.ए. का लगभग 97 प्रतिशत मनुष्यों के साथ साझा करते हैं। बोर्नियन ऑरंगुटन गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजाति है, जिसमें वनों की कटाई, ताड़ के तेल के बागान और निरंतर शिकार इनके अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

गिली द्वीप—गिली द्वीप लोंबोक में एक प्रमुख आकर्षण का केंद्र है, जिसकी हाल के वर्षों में पर्यटन के शौकीन और पर्यटकों के बीच लोकप्रियता में वृद्धि हुई है। ये सुरम्य द्वीप समुद्र तटों की सुंदरता के मामले में बाली के द्वीपों को टक्कर देते हैं तथा गोताखोरी और स्नॉर्कलिंग के

द्वीपों की नैसर्गिक छटा

अवसर प्रदान करते हैं। यदि आप कछुए की गतिविधियों की तलाश कर रहे हैं तो आप यहाँ कछुए की हैचरी देख सकते हैं, जहाँ हर साल इनमें सैकड़ों कछुए पैदा होते हैं। काइकिंग भी गिलिस में लोकप्रिय है; यदि आप अपने मन व शरीर के साथ फिर से जुड़ने के लिए जगह चाहते हैं तो आपको योग कक्षाओं के लिए यहाँ कई विकल्प मिलेंगे।

पार्कों से विविधता का संरक्षण

कोमोडो नेशनल पार्क—यह ज्वालामुखी द्वीप लगभग 5,700 विशाल छिपकलियों की आबादी में बसा हुआ है, जिनकी उपस्थिति और आक्रामक व्यवहार के कारण उन्हें 'कोमोडो ड्रेगन' कहा जाता है। ये दुनिया में कहीं और मौजूद नहीं हैं और 'विकास के सिद्धांत' का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों की रुचि का मुख्य केंद्र हैं। कोमोडो नेशनल पार्क यूनेस्को की विश्व विरासत में शामिल है, जो पाँच मुख्य द्वीपों और कई छोटे क्षेत्रों के साथ-साथ आसपास के समुद्री क्षेत्रों को शामिल करता है। इन द्वीपों का पानी दुनिया में कुछ अलग है। कोमोडो ड्रेगन पार्क के किसी भी दौरे पर शो देख सकते हैं, लेकिन आगंतुक हाइक, स्नोर्कल, कैनोइंग जाने या द्वीपों के छोटे गाँवों की यात्रा भी कर सकते हैं।

उबुद—उबुद में सबसे अच्छी चीजें प्राचीन मंदिरों, राजसी शाही महलों, हरी पहाड़ियों और चावल की छतों को देखना आदि शामिल है। सांस्कृतिक स्थलों का एक खजाना है यह बाली शहर। और इसके बाहरी क्षेत्र जियानार रीजेंसी, जहाँ दुनिया के कुछ उल्लेखनीय कारीगरों व खोजकताओं ने दौरा किया है।

उबुद में बहुत सारे प्राकृतिक परिदृश्य और आकर्षण हैं, जो शहर के केंद्र के बाहर एक छोटी ड्राइव के भीतर हैं। उबूद में प्रमुख स्थलों में उबूद बंदर वन और फोटोजेनिक तेगलालांग, यानी चावल की छत शामिल हैं।

सुंदर मंदिर शिल्प का बेजोड़ नमूना

उबूद बंदर वन केंद्रीय उबूद के किनारे पर स्थित हैं, जो 700 से अधिक लंबी पूँछवाले लंगूरों का घर है। यह प्राकृतिक अभयारण्य बाली में अपने

जैविक विविधता से परिपूर्ण वन क्षेत्र

समुदाय-आधारित प्रबंधन, स्थान और पहुँच में आसानी से आने के लिए जाना जाता है। पडंगटेगल गाँव के पास, उबूद बंदर वन, वैज्ञानिक अनुसंधान और आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक स्थान है, स्थानीय ग्रामीणों द्वारा यहाँ पवित्र मंदिर स्थापित हैं। उबूद बंदर वन को पांडंगटेगल का पवित्र बंदर वन भी कहा जाता है, और इसका आधिकारिक पदनाम मंडला विसाटा वेनारा वन है।

माउंट ब्रोमो—एक सक्रिय ज्वालामुखी के क्रेटर को देखना एक रोमांचक अनुभव है। लेकिन इंडोनेशिया में माउंट ब्रोमो, बस की तुलना में बहुत अधिक हैं।

इंडोनेशिया रिंग ऑफ फायर में स्थित है, जो दुनिया के सबसे सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक है। माउंट मरापी जैसे देश के कई ज्वालामुखी अपने हिंसक विस्फोट और अपनी आश्चर्यजनक, लेकिन खतरनाक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। माउंट ब्रोमो इन सबमें से एक है। एक विस्फोट में ब्रोमो की चोटी उड़ गई, आप अभी भी पहाड़ से निकलते सफेद धुएँ को देख सकते हैं। ज्वालामुखी ब्रोमो टेंगर सेमरू नेशनल पार्क का हिस्सा है, जिसमें माउंट सेमरू भी शामिल है, जो जावा की सबसे ऊँची चोटी है। पार्क टेंगर लोगों का घर है, जो एक पृथक् जनजातीय समूह है, जो प्राचीन माजापहाइट साम्राज्य में अपने वंश का संबंध बताता है।

तन तोरजा—दक्षिण सुलावेसी प्रांत के ताना तोराजा की यात्रा से न केवल आपको ऐसा महसूस होगा कि आप अपने समय में बहुत आगे बढ़ गए हैं, बल्कि इंडोनेशिया की दीर्घकालिक संस्कृतियों की समृद्धि और विविधता पर भी एक नजर डालते हैं। तोंगकोनान में नाव के आकार के घरों और अन्य इमारतों की स्थापत्य शैली दूर से ही दिखती है, लेकिन यहाँ के लोग इस प्राकृतिक स्वर्ग के इस टुकड़े को खास बनाते हैं। वे यात्रा के दौरान आपसे मिलने की आश कर सकने वाले और सबसे ज्यादा स्वागत करने वाले लोग हैं। मृत्यु के लिए इनका दृष्टिकोण श्रद्धा और उत्सवपूर्ण है। अंतिम संस्कार में भोजन और पारंपरिक नृत्य से युक्त समारोह होते हैं,

ज्वालामुखी और झीलों का देश

और मृतकों को आसपास की गुफाओं में बनी कब्रों में दफनाया जाता है। यात्री यहाँ के गाँवों की यात्रा कर सकते हैं और स्थानीय लोगों के साथ जुड़ सकते हैं या प्राचीन ग्रामीण इलाकों में ट्रेक कर सकते हैं।

टोबा झील—इंडोनेशिया के प्राकृतिक अजूबों में से एक टोबा झील, पानी और ज्वालामुखी दोनों का मिश्रण है। झील एक ज्वालामुखी के मुख पर स्थित है, 69,000 और 77,000 वर्षों के बीच शायद बनाई गई थी और माना जाता है कि यह एक भयावह विस्फोट का परिणाम थी। झील 1,145 वर्ग किलोमीटर लंबी और 450 मीटर गहरी है। ज्वालामुखी विस्फोट अभी भी नियमित रूप से यहाँ होते रहते हैं और इसने कुछ द्वीपों को पानी की सतह से ऊपर उठा दिया है। टोबा झील सुंदरता में बेमिसाल है। यहाँ आप तैराकी, वॉटर स्कीइंग, कैनोइंग या मछली पकड़ने जा सकते हैं या पैदल या बाइक पर आसपास के क्षेत्र में घूम सकते हैं।

पर्वत क्रकटु—निश्चित रूप से 1883 में इंडोनेशिया के सबसे प्रसिद्ध ज्वालामुखी क्रैकटाऊ का इतिहास में दर्ज सबसे बड़ा विस्फोट था। विस्फोट ने दुनिया भर की जलवायु परिस्थितियों को गंभीर रूप से प्रभावित किया और

पास के जावा तथा सुमात्रा पर मानव जीवन के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ। अनक क्रैकटाऊ 1883 के विस्फोट से बने द्वीपों में सबसे छोटा है और 1930 में यह सतह के ऊपर खुद निकल आया। यह वाष्पशील ज्वालामुखी समुद्र से ऊँचा उठता जा रहा है और इसमें विस्फोट होता रहता है। अनक क्रैकटाऊ अभी भी धुएँ और आग से भरा है और पर्यटक इंडोनेशिया में हर मोड़ पर सतह के नीचे इतनी भयानक और अनदेखी शक्ति के दर्शन कर सकते हैं।

गुनुंग रिंजनी—इंडोनेशिया के प्रसिद्ध ज्वालामुखियों में से एक, गुनुंग रिनजानी लोंबोक पर एक बड़ा आकर्षण है। लेकिन 13वीं शताब्दी के अंत में इसका केल्डेरा बनाने वाला विस्फोट मानव इतिहास में सबसे शक्तिशाली माना जाता है। रिंजनी के कैल्डेरा में एक झील है और झील के भीतर माउंट है। बारू एक और सक्रिय ज्वालामुखी है। रिनजनी नेशनल पार्क में आप दुर्लभ काले आबनूस पत्ती, बंदर, लंबी पूँछ वाले मैकाक, सल्फर-क्रेस्टेड कॉकटू और अन्य विदेशी प्रजातियों के जानवरों को देख सकते हैं। यहाँ ट्रेक उपलब्ध हैं, और आप रात भर पार्क में डेरा डाल सकते हैं।

पुरा तनहा लोट—यह बाली के सबसे लोकप्रिय मंदिरों में से एक है, जिसे समुद्र में एक चट्टान को काटकर बनाया गया है। मूल गठन एक बिंदु पर बिगड़ना शुरू हुआ, इसलिए चट्टान का एक हिस्सा अब कृत्रिम

रिंजनी स्थित सुंदर पार्क

है। फिर भी पुरा तनाह सूर्योदय में लोगों को आकर्षित करता है। यह मंदिर परिसर बेरबन गाँव के दक्षिणी तट पर है और आप समुद्री भाटा के समय मंदिर तक टहलते हुए जा सकते हैं। सूर्यास्त के पश्चात् बाजार की रौनक देखने लायक होती है, जहाँ अनोखी बाली की चीजें मिलते हैं।

□

भारत और इंडोनेशिया : सामरिक साझेदारी में बदलती मित्रता

वर्ष 2017 में मैं अपनी संसदीय समिति बैठक के सिलसिले में अंडमान-निकोबार की यात्रा पर गया था। अंडमान-निकोबार के राजभवन में मुझे बताया गया कि अंडमान में हम समुद्री मार्ग के जरिए भारत-इंडोनेशिया के अत्यंत निकट के पड़ोसी हैं। मुझे बताया गया कि यहाँ हमारी तटरक्षक एवं सुरक्षा एजेंसियाँ मिलकर गश्त करती हैं। 'इंडोनेशिया' शब्द का मतलब ही भारत से जुड़ाव है तथा हमारे ग्रंथों में यवद्वीप के नाम से इंडोनेशिया प्रख्यात है। श्रुति है कि राजा सुग्रीव ने माँ सीता की खोज के लिए सेना को यवद्वीप

मित्रता के नए आयाम : प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति विडोडो

भेजा था। भारत से अनेक लोग शताब्दियों पहले इंडोनेशिया में आए। डच लोग भी अपने साथ 10वीं सदी में बड़ी संख्या में मजदूरों को इंडोनेशिया में लाए। एक भारतीय होने के नाते यह गौरव का विषय है कि अधिकतर इंडोनेशिया निवासियों का मानना है कि यहाँ हमें भारतीय संस्कृति का सार्थक प्रभाव देखने को मिलता है और वे इस प्रभाव से काफी हद तक गौरवान्वित भी हैं।

मुझे लगता है कि भारत और इंडोनेशिया के मध्य सौहार्दपूर्ण संबधों की नींव हमारी साझा संस्कृति है। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भगवान् श्रीराम भी भारत की तरह ही इस देश में मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में पूजे जाते हैं। एक आदर्श पति, एक आदर्श पुत्र, एक आदर्श भाई तथा एक आदर्श राजा के रूप में भगवान् श्रीराम ने हम सबके सम्मुख जीवन का जो उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है, वह हम सभी के लिए अनुकरणीय है।

जितने इंडोनेशिया से आज हम सांस्कृतिक रूप से जुड़े हैं, उतने ही सामरिक रूप से भी जुड़े हुए हैं, क्योंकि विश्व कल्याण, विश्व शांति एवं समभाव के लिए हमारा दर्शन, चिंतन तथा विश्व बंधुत्व का भाव एक-सा है। विश्व शांति के लिए हमारी प्रतिबद्धता भी एक-सी है। हमारा परम ध्येय केवल विश्व कल्याण है और हमने हमेशा दूसरी संस्कृति एवं दूसरे धर्मों का स्वागत किया, उन्हें आत्मसात् किया और हर कहीं पर अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई है। आज सामाजिक कुरीतियों व वैश्विक चुनौतियों से निपटने का रास्ता हमें अपनी अमर संस्कृति में ढूँढ़ना होगा। अपने आदर्श पुरुषों के धर्मग्रंथों में टटोलना होगा, तभी भारत का, इंडोनेशिया का और संपूर्ण विश्व का कल्याण संभव है।

मेरा शुरू से ही यह मानना है कि गहन ऐतिहासिक संबंधों तथा साम्राज्यवाद के साथ मिलकर लड़ने संबंधी अतीत के साझे इतिहास के दृष्टिगत भारत-इंडोनेशिया के सफलतम सामरिक साझेदार होने की प्रबल संभावना है। आज इंडोनेशिया के अंदर भारत अवस्थापना विकास, विद्युत्, कपड़ा, इस्पात, ऑटोमेटिव, खनन, बैंकिंग एवं एम.एम.सी.जी. क्षेत्र में अपनी व्यापक पहचान बना पाया है। हाल ही में दोनों देश गंभीरता से भारत-

प्रधनमंत्री मोदी के सम्मान में गार्ड ऑफ आनर

इंडोनेशिया के मध्य सीधी हवाई सेवाओं पर कार्य कर रहे हैं, जो इस बात का द्योतक है कि दोनों देशों के मध्य व्यापक संभावनाएँ हैं। मैं अपनी यात्रा के दौरान भारतीय प्रतिष्ठानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मिला और वे सभी इस बात से उत्साहित थे कि भारत-इंडोनेशिया संबंधों में कहीं अधिक संभावनाएँ हैं। संभावनाओं को अवसरों में परिवर्तित कर दोनों देश आपसी व्यापार एवं वाणिज्यिक संबंधों को मजबूत बनाने की आवश्यकता को महसूस करते हैं। मैं इस बात को संयोग और दोनों देशों का सौभाग्य ही मानता हूँ कि वर्तमान में इंडोनेशिया और भारत की कमान सक्षम हाथों में है।

हमारी आर्थिकी के लिए आवश्यक है कि इंडोनेशिया तथा भारत का नेतृत्व मजबूत प्रशासकों के सुयोग्य हाथों में हो। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति श्री जोको विडोडो और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी एवं गतिशील नेतृत्व में दोनों देश बहुपक्षीय कार्यक्रमों के साथ-साथ वार्षिक शिखर सम्मेलन बैठक का आयोजन करने पर भी राजी हुए। सबसे बड़ी बात यह है कि 'भारत-इंडोनेशिया इमिनेंट पर्सस ग्रुप' द्वारा एक विजन दस्तावेज 2025 में पेश किए जाने का दोनों देशों में व्यापक रूप से स्वागत हुआ है।

आधुनिक युग में भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा इंडोनेशिया के पहले राष्ट्रपति सुकर्णो के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के कारण

दोनों देशों के बीच घनिष्ठता का बीज बोया गया, जो आज हमें फलीभूत होता दिखाई दे रहा है। जब यह नवीन राष्ट्र डच साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा था, उस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इंडोनेशिया के उद्देश्य का पूर्ण रूप से समर्थन किया था।

मुझे बताया गया कि भारत की स्वतंत्रता से पूर्व (मार्च-अप्रैल 1947) में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इंडोनेशिया की समस्या पर विचार-विमर्श करने के लिए नई दिल्ली में पहले एशियाई संबंध सम्मेलन का आयोजन किया था। इस सम्मेलन में पूरे एशिया के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े नेता इकट्ठे हुए तथा यह एशियाई एकता का निर्माण करने की दिशा में पहला प्रयास था। बीजू पटनायक (जो आगे चलकर उड़ीसा के मुख्यमंत्री बने) ने उपराष्ट्रपति मोहम्मद हट्टा तथा प्रधानमंत्री सुल्तान सजाहरि को डचों से बचाकर नई दिल्ली लाने के लिए अपना एयरक्राफ्ट इंडोनेशिया भेजने संबंधी पंडित नेहरू के आह्वान पर काररवाई की, ताकि वे इस सम्मेलन में भाग ले सकें। कई साल बाद, सुकर्णो ने पटनायक को मानद भूमिपुत्र बनाया।

मुझे प्रोफेसर यूलिया के द्वारा बताया गया कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने नवजात गणतंत्र पर डच हमले के विषय में विचार-विमर्श करने के लिए जनवरी, 1949 में इंडोनेशिया सम्मेलन का आयोजन करके 1947 की घटना को आगे बढ़ाया। ये दोनों सम्मेलन 1955 के बडुंग सम्मेलन के पूर्ववर्ती थे, जिसकी मेजबानी इंडोनेशिया ने की। यह पहला अफ्री-आसियान सम्मेलन था, जहाँ पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा सुकर्णो ने एशिया की भावना को प्रेरित कर गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखी। अधिक समकालीन अवधियों में 1991 में भारत की 'पूरब की ओर देखो नीति' का अनावरण तथा भारत के आसियान का सदस्य बन जाने पर नई दिल्ली एवं जकार्ता को अपने संबंधों को फिर से जिंदा करने में सहायता मिली, जिनमें कि उस समय व्यवधान आ गया था। इंडोनेशिया 1965 से 1998 के बीच सैन्य शासन के अधीन था। इंडोनेशिया आसियान के 10 सदस्य देशों में सबसे अधिक आबादी, सबसे अधिक क्षेत्रफल तथा सबसे अधिक प्रभावशाली देश है।

पिछले कुछ वर्षों में हमारा रक्षा और सुरक्षा सहयोग सुदृढ़ हुआ है। तत्कालीन रक्षामंत्री श्री ए.के. एंटनी ने 2012 में इंडोनेशिया का दौरा भी किया था। भारत और इंडोनेशिया कॉरपोरेट पर मिलकर काम कर रहे हैं, जो समुद्री मार्गों की सुरक्षा बनाए रखने तथा जलदस्युतारोधी ऑपरेशन से संबंधित हैं। दोनों देशों ने प्रत्यर्पण संधि एवं परस्पर कानूनी सहायता संधि पर हस्ताक्षर किए हैं तथा **सजायाफ्ता व्यक्तियों के अंतरण पर करार करने की दिशा में काम कर रहे हैं।** आतंकवाद के खिलाफ, नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी तथा साइबर अपराधों को रोकने की दिशा में दोनों देशों के सहयोग में वृद्धि हुई है।

दोनों देशों ने अपने समुद्री सहयोग में वृद्धि की है। इंडोनेशिया भारत का समुद्री पड़ोसी देश है। सुमात्रा द्वीप का सबसे पश्चिमी छोर, अर्थात् बंडा-असेह भारत के अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के सबसे पूर्वी छोर से मुश्किल से 90 नॉटिकल मील की दूरी पर है। दोनों ही देश आईओआर-एआरसी पर घनिष्ठ सहयोग के लिए कदम उठा रहे हैं तथा हाल ही में हिंद महासागर से जुड़े मुद्दों पर त्रिपक्षीय वार्त्ता में ऑस्ट्रेलिया भी शामिल हो गया है। जहाँ तक व्यापार एवं आर्थिक संबंधों का प्रश्न है, इंडोनेशिया की अवसंरचना—विद्युत्, कपड़ा, इस्पात, ऑटोमोटिव, खनन, बैंकिंग तथा एम.जी.सी. क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों ने काफी निवेश किया है। इंडोनेशिया की भी अनेक कंपनियों ने भारत की अवसंरचना परियोजनाओं में निवेश किया है।

भारत इंडोनेशिया से कच्चे पॉम ऑयल का आयात करनेवाला सबसे बड़ा देश है, साथ ही वहाँ से वह कोयला, खनिज, रबड़, लुगदी एवं कागज का आयात करता है। भारत परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों, मक्का, वाणिज्यिक वाहनों, दूरसंचार के उपकरणों, तिलहन, पशु आहार, कपास, स्टील के उत्पाद तथा प्लास्टिक आदि इंडोनेशिया को निर्यात करता है। इंडोनेशिया में निवेश करनेवाली भारत की प्रख्यात कंपनियाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

टाटा पावर, रिलायंस, अडानी, एल एंड टी, जी.एम.आर., जी.वी.के., वीडियोकॉन, पुंज लॉयड, आदित्य बिरला, जिंदल, स्टेनलेस स्टील, एस्सार,

टीवीएस, बजाज, बी.ई.एम.एल., गोदरेज, बामन एंड लॉरी, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया एवं बैंक ऑफ इंडिया आदि कंपनियों ने इंडोनेशिया में अपनी अच्छी धाक जमाई हुई है।

ऐतिहासिक संबंधों तथा साम्राज्यवाद से साथ मिलकर लड़ने संबंधी अतीत के साझे इतिहास को देखते हुए मजबूत भारत-इंडोनेशिया संबंध की प्रचुर संभावना है। जैसा कि रवींद्रनाथ टैगोर ने जावा में लगभग सौ साल पहले कहा था कि 'मैं भारत को हर जगह देखता हूँ, परंतु मुझे यह कहीं नहीं मिलता।'

जब हम विश्व विकास की बात करते हैं तो हम आतंकवाद की अनदेखी नहीं कर सकते, जिससे लगभग आज पूरा विश्व प्रभावित है। यह शांति एवं विकास के लिए भी हमारे प्रयासों पर भारी बोझ बनता जा रहा है। अपने-अपने स्तर पर भारत और इंडोनेशिया आतंकवाद के समूल विनाश के लिए प्रतिबद्ध हैं, यह प्रतिबद्धता संयुक्त राष्ट्र, आसियान एवं सार्क सम्मेलनों में स्पष्ट रूप से झलकती है।

जुड़वाँ भाइयों के समान

भारत तथा इंडोनेशिया के आपसी संबंधों का परिचय पूर्व में रामायण काल से ही मिलता है। भारत के महाग्रंथ रामायण में 'यवादविपा' (जावा) का उल्लेख है। इंडोनेशिया नाम लैटिन इंडस से अर्थ इंडिया और ग्रीस निसोस अर्थात् द्वीप है, जो कि दोनों देशों की सांस्कृतिक समानताओं की बड़ी वजह भी है।

भारत तथा इंडोनेशिया कई मायनों में समानता का निर्वाह भी करते हैं, कुछ लोगों का यह भी कहना है कि जकार्ता तथा मुंबई (भारत) के आसपास का सामान्य जीवन ज्यादातर समानता लिये हुए है। भारत तथा इंडोनेशिया दोनों ही देश प्रगतिशील राष्ट्र हैं, जिसमें बड़ी जनसंख्या में लोग निवास करते हैं।

इंडोनेशिया के कुछ शब्द भारतीय भाषा से समानता भी रखते हैं। भारत

ने सुमात्रा तथा जावा की संस्कृति के लिए काफी योगदान दिया है। इंडोनेशिया के कुछ पारंपरिक वस्त्र भी लगभग भारतीय परिधान के समान हैं। भारतीय देवी-देवता एवं वीर अर्जुन तथा महाभारत के पात्र भी वृहद् रूप से जावा के लोगों द्वारा परिचय से परिपूर्ण हैं। इंडोनेशिया के देवदूत भारतीय पारंपरिक संगीत से बहुत अधिक प्रभावित हैं तथा इंडोनेशिया की एक बड़ी जनसंख्या भारतीय बॉलीवुड के चलचित्र को भी काफी पसंद करती है।

मुझे बताया गया कि भारतीय सीरियल भी इंडोनेशिया में काफी लोकप्रिय हैं। इंडोनेशिया में, विशेषकर वृहत् जकार्ता मैदान, सुराबाय और बंदुग में लगभग एक लाख भारतीय मूल के इंडोनेशियन लोग निवास करते हैं तथा इसके अतिरिक्त दस हजार भारतीय भी इंडोनेशिया में रहते हैं। सभी साक्ष्य यह

तत्कालीन विदेश मंत्रीजी की इंडोनेशिया यात्रा

जानने के लिए पर्याप्त हैं कि भारत तथा इंडोनेशिया के संबंध आपसी समानता लिये हुए वर्षों से किस प्रकार प्रगाढ़ व भाईचारे से परिपूर्ण हैं, परंतु आज भी दोनों देशों के मध्य कई समझौतों तथा मजबूत रिश्तों के लिए बहुत गुंजाइश बाकी है, जो कि गहरे ऐतिहासिक संबंधों तथा साम्राज्यवाद के खिलाफ एक साथ लड़ने के पुराने इतिहास होने के कारण से है।

व्यापक आर्थिक भागीदारी

डावोस में विश्व आर्थिक फोरम के मंच से प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज हम एक चुनौतीपूर्ण युग में जी रहे हैं तथा पूरा विश्व अविश्वास, अनिश्चय, आर्थिक मंदी एवं अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद से जूझ रहा है, ऐसे में भारत और इंडोनेशिया तेजी से उभरती दो आर्थिक शक्तियों के रूप में पूरे विश्व की आशा का केंद्र बने हुए हैं। दोनों देशों ने आपस में व्यापक भागीदारी बढ़ाने का निश्चय किया है।

भारत और इंडोनेशिया के बीच व्यापार एवं विनिवेश में वृद्धि को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए पारदर्शी आर्थिक नीति के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि इस काररवाई से दोतरफा व्यापार, निवेश तथा निजी क्षेत्र की अगुआईवाले आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। दोनों देशों के ये कदम वर्ष 2030 तक इंडोनेशिया और भारत को विश्व की पाँच शीर्ष अर्थव्यवस्था में शामिल होने का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति विडोडो को अपनी सरकार की तरफ से भारत में बदलाव के लिए की जा रही पहलों मसलन मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटी, स्टार्ट-अप इंडिया और स्वच्छ भारत मिशन से अवगत कराया, साथ ही इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए इंडोनेशिया के व्यापारियों को आमंत्रित भी किया। राष्ट्रपति विडोडो ने भी इंडोनेशिया में हाल के सुधार को लेकर उठाए गए कदमों और कारोबारों को सुगम बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के बारे में प्रधानमंत्री मोदी को जानकारी दी। उन्होंने भारतीय कंपनियों को इंडोनेशिया में औषधि निर्माण, बुनियादी ढाँचा, आई.टी., ऊर्जा और उत्पादन उद्योग के क्षेत्र में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया। दोनों देशों में औद्योगिक विकास को गति देने हेतु साझा मंच प्रदान करने के लिए भारत और इंडोनेशिया के प्रमुख उद्योगपतियों के फोरम की 12 दिसंबर, 2016 को नई दिल्ली में बैठक हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य था—द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश सहयोग को और आगे बढ़ाया जा सके। इंडोनेशिया और भारत के चुनिंदा कार्यदायी अधिकारियों की 13 दिसंबर,

2016 और दोनों देशों के प्रमुख उद्योगपतियों के फोरम की 12 दिसंबर, 2016 को नई दिल्ली में बैठक हुई। बैठक की रिपोर्ट राष्ट्रपति जोको विडोडो को सौंप दी गई। गैर-परंपरागत क्षेत्र में ऊर्जा उत्पादन की आवश्यकता पर दोनों देश एक हैं। राष्ट्रपति विडोडो ने अक्षय ऊर्जा, विशेषकर अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के स्थापना क्षेत्र में प्रधानमंत्री मोदी की पहल का स्वागत किया।

हाल के वर्षों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान में 2015-18 के तहत कला, साहित्य, संगीत, नृत्य एवं पुरातत्त्व के जरिए दोनों देश, लोगों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को स्थापित करने को लेकर प्रतिबद्ध हैं। पर्यटन को बढ़ावा देने एवं युवाओं पर फिल्मों के प्रभाव और उसकी लोकप्रियता को स्वीकार करते हुए दोनों पक्षों ने फिल्म उद्योग के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक समझौते को अंतिम रूप देने पर सहमति जताई है। मैंने भी महसूस किया कि समान मूल्यों पर आधारित हमारे सामाजिक ढाँचे में साहित्य, कला एवं फिल्मों का भी अपना विशिष्ट योगदान है और हमें इस क्षेत्र में सहयोग को ज्यादा सशक्त बनाना चाहिए। भारत और इंडोनेशिया में युवा पीढ़ी को सशक्त करने के उद्देश्य से शिक्षा और मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में निवेश के महत्त्व को रेखांकित किया गया। दोनों पक्षों ने संकाय आदान-प्रदान, शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं दोहरी डिग्री कार्यक्रमों के लिए विश्वविद्यालय के संबंधों का संस्थानीकरण करने की दिशा में किए जा रहे सहयोग का उल्लेख किया। उन्होंने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौते के प्रारंभिक निष्कर्ष के महत्त्व पर बल दिया और संबंधित अधिकारियों को इस संबंध में आवश्यक कदम उठाने के निर्देश भी दिए। इंडोनेशिया के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययन केंद्र खोले जाने के महत्त्व को समझते हुए और भारतीय विश्वविद्यालयों में भी इंडोनेशिया अध्ययन केंद्र खोले जाने पर दोनों सरकारों की सहमति स्वागत योग्य कदम है। किसी भी देश के युवा उसका भविष्य हैं। ऐसे में युवा मामलों में आपसी सहयोग का विशेष महत्त्व है। दोनों देशों में युवा मामले और खेल पर सहयोग बढ़ाना एक स्वागत योग्य कदम है तथा इस संबंध में समझौता ज्ञापन पर

हस्ताक्षर किए जाने से दोनों देशों के युवाओं को और निकट लाने में सहायता मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

सामरिक साझेदारी

रणनीतिक साझेदारों और समुद्री पड़ोसियों के रूप में दोनों राष्ट्रों ने आपसी सुरक्षा और रक्षा सहयोग को मजबूत करने पर जोर दिया। इस संदर्भ में उन्होंने रक्षा मंत्रियों की वार्त्ता और संयुक्त रक्षा सहयोग समिति (जे.डी.सी.सी.) की बैठक में प्रारंभिक आयोजन की समीक्षा करने तथा एक ठोस द्विपक्षीय रक्षा सहयोग समझौते के लिए मौजूदा रक्षा के क्षेत्र में सहयोग कार्यों पर समझौते का उन्नयन करने हेतु दोनों देशों के मंत्रियों को निर्देश दिया। दोनों देशों की सेनाओं (अगस्त 2016) और नौसेनाओं (जून 2016) के बीच स्टाफ वार्त्ता पूरा होने का उल्लेख किया, जिसके परिणामस्वरूप दो सशस्त्र बलों के बीच रक्षा सहयोग बढ़ाने और वायु सेना स्टाफ वार्त्ता भी एक प्रारंभिक तिथि पर आयोजित करने की सहमति बनी। दोनों पक्षों में विशेष बलों सहित रक्षा आदान–प्रदान, प्रशिक्षण और संयुक्त अभ्यास की आवृत्ति में वृद्धि करने के लिए सहमति बनी। उन्होंने दोनों पक्षों के रक्षा मंत्रियों को प्रौद्योगिकी हस्तांरण के साथ उपकरणों के संयुक्त उत्पादन, तकनीकी सहायता और क्षमता निर्माण में सहयोग के लिए, रक्षा उद्योग के बीच सहयोग का पता लगाने के लिए निर्देश दिया।

दोनों राष्ट्रों ने वैश्विक आतंकवाद और अन्य बढ़ते अंतरराष्ट्रीय अपराधों पर चिंता व्यक्त की और साइबर अपराध, आतंकवाद के वित्तपोषण, मनी लॉन्ड्रिंग, हथियारों की तस्करी एवं मानव तस्करी का मुकाबला करने हेतु द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने का संकल्प भी दोहराया। आतंकवाद पर संयुक्त कार्य समूह की सराहना की गई, जिसने नियमित रूप से मुलाकात की और अक्तूबर 2015 में आयोजित पिछली बैठक के नतीजे का जायजा लिया, जिसमें साइबर सुरक्षा सहित परस्परहित वाले मुद्दों पर चर्चा की गई थी। उन्होंने आतंकवाद से मुकाबला करने, स्वास्थ्य, ड्रग्स, मादक पदार्थों और नारकोटिक्स में अवैध

तस्करी का मुकाबला करने को लेकर गठित क्षेत्रीय संयुक्त कार्य के तहत हुई प्रगति का स्वागत किया। इस संबंध में अगस्त 2016 में बैठक हुई थी। दोनों पक्षों ने इन क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने का वचन दिया। दोनों देशों के नेताओं ने नई दिल्ली में 'आपदा जोखिम न्यूनीकरण 2016' पर एशियाई मंत्री स्तरीय सम्मेलन के सफल आयोजन का स्वागत किया और इस क्षेत्र में सहयोग के लिए क्षमताओं को भी चिह्नित किया। दोनों राष्ट्रों ने अपने संबंधित पक्षों को नियमित रूप से संयुक्त अभ्यास, प्रशिक्षण के सहयोग व प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ प्रतिक्रिया देने तथा इस प्रकार की क्षमताओं को बढ़ाने और संस्थागत रूप देने में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में सहयोग को पुनर्जीवित करने के निर्देश दिए, साथ ही दोनों देशों ने दुनिया और अपने-अपने देशों के आसपास के क्षेत्रों के लिए समुद्री क्षेत्र के महत्त्व पर प्रकाश डाला, उन्होंने अपने समुद्री सहयोग पर वक्तव्य भी जारी किया। वक्तव्य में एक व्यापक क्षेत्र शामिल था, जिसमें समुद्री सुरक्षा, समुद्री उद्योग, नेगीवेशन और दोनों देशों द्वारा चिह्नित द्विपक्षीय सहयोग के अन्य क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया था। अवैध, अनियमित और गैर रिपोर्टेड (आई.यू.यू.) फिशिंग को खत्म करने की तत्काल आवश्यकता की पुष्टि, आई.यू.यू. पर हस्ताक्षर किए जाने और इंडोनेशिया तथा भारत के बीच स्थायी मत्स्य पालन को बढ़ावा देने का सर्वत्र स्वागत हुआ। उभरते हुए अंतरराष्ट्रीय संगठित मत्स्य अपराध, जो दुनिया के लिए एक बढ़ता हुआ खतरा बन गया है, दोनों देशों द्वारा इसे एक संगठित अपराध की श्रेणी में रखा गया।

वैश्विक चुनौतियाँ : साझी रणनीति

अगर वैश्विक चुनौतियों को देखा जाए तो आज आतंकवाद शीर्ष चुनौती के रूप में उभरकर मानवता को भी चुनौती दे रहा है। अनेक लोग आतंकवादियों के बर्बरतापूर्ण अत्याचारों का शिकार हो रहे हैं।

दोनों राष्ट्रों ने विश्व में तेजी से फैल रहे आतंकवाद की कड़ी शब्दों में निंदा की और आतंकी गतिविधियों को लेकर 'जीरो टोलरेंस' नीति यानी

भारतीय समुदाय : निरंतर बढ़ता प्रभाव

'बर्दाश्त नहीं करने की' बात पर जोर दिया। उन्होंने बड़ी चिंता के साथ आतंकवाद और हिंसक उग्रवाद के बढ़ने और उसकी पहुँच के बढ़ते खतरे का उल्लेख किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के संकल्प 1267 को लागू करने के लिए सभी देशों से आह्वान किया। उन्होंने सभी देशों से आतंकवादियों के सुरक्षित ठिकानों को मिटाने और उनके बुनियादी ढाँचे को नष्ट करने की दिशा में काम करने के लिए आह्वान किया, ताकि आतंकवादी नेटवर्क और वित्तपोषण को खत्म किया जा सके। साथ ही सीमा पार से आतंकवाद को रोकने का भी आह्वान किया गया। उन्होंने अपने क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले राष्ट्रीय आतंकवाद से निपटने के संबंध में सभी देशों के लिए प्रभावी आपराधिक न्याय प्रतिक्रिया स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। इस संदर्भ में भारत-इंडोनेशिया के बीच अधिक-से-अधिक खुफिया जानकारी के आदान-प्रदान के माध्यम से सहयोग बढ़ाने का आह्वान भी किया गया।

दोनों देशों ने नौवहन की स्वतंत्रता का सम्मान करने और उड़ान भरने में नियम-कायदों का पालन करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया, जो कि संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन समुद्र के कानून (यू.एन.सी.एल.ओ.एस.) (UNCLOS) में विशेष रूप से परिलक्षित होता है। इस संबंध में उन्होंने

सभी दलों से खतरे का सहारा लिये बिना शांतिपूर्ण साधनों के माध्यम से विवादों को हल करने का आग्रह किया, जिसमें कि गतिविधियों के संचालन में आत्मसंयम बरतने और एकतरफा काररवाई करने से बचने को कहा गया, ताकि अनावश्यक तनाव से बचा जा सके। यू.एन.सी.एल.ओ.एस. में राष्ट्र प्रमुखों के रूप में उन्होंने जोर देकर कहा कि सभी दलों को यू.एन. सी.एल.ओ.एस. के प्रति अत्यंत सम्मान दिखाना चाहिए, जिसे समुद्र और महासागरों के अंतरराष्ट्रीय कानून के लिए स्थापित किया गया है। दक्षिण चीन सागर के बारे में, दोनों पक्षों ने यू.एन.सी.एल.ओ.एस. के मुताबिक विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने के महत्त्व पर बल दिया। आज के तनावपूर्ण माहौल में दोनों देशों की यह पहल एक महत्त्वपूर्ण कदम है। दोनों पक्षों ने व्यापक क्षेत्रीय आर्थिक साझेदारी को लेकर आगे बढ़ने के लिए वार्त्ता के निष्कर्ष के महत्त्व को दोहराया। दोनों नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र और उसके प्रमुख निकायों में सुधार के लिए चल रहे कार्यक्रमों में अपने समर्थन की मंशा को दोहराया, जिसमें सुरक्षा परिषद् में सुधार शामिल है। वर्तमान युग में चुनौतियों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र को अधिक लोकतांत्रिक, पारदर्शी और कुशल बनाना होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि परिषद् का इस तरह पुनर्गठन किया जाना चाहिए, जिससे कि विकासशील देशों को पर्याप्त रूप से परिषद् के स्थायी सदस्यों के जरिए प्रतिनिधित्व मिल सके। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में सुधार से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर सहमति जताई। पिछले 24 वर्षों में आसियान-भारत वार्त्ता के संबंध में की गई लगातार प्रगति से दोनों देश लाभान्वित हुए हैं। आसियान-भारत वार्त्ता संबंध की 25वीं वर्षगाँठ और सामरिक भागीदारी 2017 की पाँचवीं वर्षगाँठ मनाने के लिए की गई तैयारियों का दोनों पक्षों ने स्वागत किया है। इसमें भारत में एक स्मारक शिखर सम्मेलन सहित मंत्रिस्तरीय बैठक, व्यापार सम्मेलन, सांस्कृतिक समारोह और अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं, जिससे लोगों के बीच रिश्ते प्रगाढ़ हो सकेंगे।

भारत-इंडोनेशिया पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन (ई.ए.एस.), आसियान

क्षेत्रीय फोरम (ए.आर.एफ.) और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक (ए.डी.एम.एम.) के रूप में आसियान से संबंधित तंत्र में घनिष्ठ समन्वय जारी रखने पर सहमत हुए हैं। एशिया प्रशांत क्षेत्र की शांति के लिए भारत-इंडोनेशिया की अहम भूमिका है। दोनों देशों ने इस बात को स्वीकार किया कि एक बड़े देश के रूप में भारत और इंडोनेशिया हिंद महासागर में अपना विस्तार कर रहे हैं। दोनों देशों को हिंद महासागर रिम संघ (आई.ओ.आर.ए.) और संगठन द्वारा पहचाने गए क्षेत्रों में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में और हिंद महासागर नौसैनिक संगोष्ठी (आई.ओ.एन.एस.) में ज्यादा सार्थक भागीदारी करनी चाहिए। भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अगले साल होने वाले पहले आई.ओ.एन.एस. और आई.ओ.आर.ए. सम्मेलन की अगुआई करने के लिए इंडोनेशिया के राष्ट्रपति विडोडो को बधाई दी।

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि दोनों देश विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने की बात को लेकर सहमत हुए, साथ ही आम बैठकों के आयोजन के जरिए द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने पर भी सहमति बनी। हाल ही में भारत-इंडोनेशिया के सामरिक संबंधों को मजबूती प्रदान करते हुए कई कार्यक्रम तय किए गए हैं।

सर्वप्रथम भारत-इंडोनेशिया के मध्य मंत्रिस्तरीय संयुक्त आयोग का गठन किया गया है। इसके अतिरिक्त रक्षा मंत्रियों की वार्त्ता और संयुक्त रक्षा सहयोग समिति का गठन किया गया है। द्विवर्षीय व्यापार मंत्रियों के फोरम (बी.टी.एम.एफ.) के माध्यम से व्यापार को गति दी जाएगी। ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग की रूपरेखा तय करने के लिए एनर्जी फोरम की बैठक बुलाने की तैयारी की जा रही है, ताकि ऊर्जा के क्षेत्र में भी साझी रणनीति बन सके। सुरक्षा सहयोग पर एक व्यापक कार्य-योजना विकसित करने के लिए सुरक्षा वार्त्ता की तैयारी की जा रही है। राष्ट्रपति विडोडो ने प्रधानमंत्री मोदी को इंडोनेशिया की यात्रा के लिए आमंत्रित किया, जिसे भारतीय प्रधानमंत्री ने स्वीकार कर लिया।

योग दिवस की धूम

भारत-इंडोनेशिया को जोड़ता आसियान

आसियान दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों का समूह है, जो क्षेत्र के आर्थिक सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है और इसका मूल लक्ष्य क्षेत्र में शांति और स्थिरता कायम करते हुए समृद्धि को सुनिश्चित करना है। इस संस्था का मुख्यालय इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में है। 8 अगस्त, 1967 को थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस एवं सिंगापुर द्वारा इस संगठन की स्थापना की गई। बंधुत्व और आपसी सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर करने के अलावा सभी सदस्य राष्ट्रों की संप्रभुता, क्षेत्रीय शांति और स्थिरता कायम करने के लिए प्रतिबद्ध यह संगठन आज विश्व के प्रतिष्ठित संगठनों में से एक है। 1994 में आसियान ने एशियाई क्षेत्रीय फोरम की स्थापना की। अमेरिका, रूस, भारत, चीन, जापान और उत्तरी कोरिया सहित ए.आर.एफ. के 23 सदस्य हैं। अपने चार्टर के अनुसार असियान के सभी सदस्य देश संप्रभुता, अखंडता और स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्ध हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के अनुसार, भारत ने आसियान देशों के साथ मित्रता का करीबी बंधन जोड़ा है। आसियान के साथ हमारा संबंध केवल साझा सांस्कृतिक विरासत की आधारशिला पर ही निर्भर नहीं है, बल्कि समूचे क्षेत्र में शांति, समृद्धि और स्थिरता के लिए समर्पित है।

आसियान गुट की भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वर्ष 2020 तक आसियान कार्ययोजना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि आसियान-भारत मिलकर जहाँ दक्षिण-पूर्व एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता लाएँगे, वहीं आपसी सहयोग से क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाएँगे।

साझा मूल्य साझा भाग्य

आसियान में भारत का प्रभाव निश्चित रूप से बढ़ रहा है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि इंडोनेशिया ने आसियान के माध्यम से भारत का विभिन्न मंचों पर साथ दिया है। हमारे पक्ष में यह भी जाता है कि इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में आसियान का मुख्यालय है और आसियान के नीति-निर्धारण, रणनीति के सृजन तथा क्रियान्वयन में इंडोनेशिया की मुख्य भूमिका रही है।

ब्रूनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्याँमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम दो ऑब्जर्वर, पापुआ, न्यू गिनी तथा पूर्वी तिमर सभी राष्ट्रों के साथ भारत के मित्रवत् संबंध हैं। इन देशों में भारत के द्विपक्षीय व्यापार में पिछले वर्षों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, विशेषकर वियतनाम, म्याँमार, कंबोडिया, इंडोनेशिया व सिंगापुर के साथ भारत की अनेक सामरिक परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है।

जनसंख्या की दृष्टि से, क्षेत्रफल की दृष्टि से एवं सामरिक दृष्टि से इंडोनेशिया बढ़ती आर्थिकी के चलते विश्व परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण शक्ति बनकर उभरा है। जहाँ भारत एक ओर प्रमुख एशियाई आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है, वहीं दूसरी ओर इंडोनेशिया का प्रभाव बढ़ रहा है। हाल ही में इंडोनेशिया ने यह कहते हुए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की सदस्यता के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की है कि विश्व निकाय के प्रति उसकी प्रतिबद्धता और योगदान सही मायने में उसे विश्व शांति का प्रमुख साझेदार बनाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के अपने संबोधन में देश के उपराष्ट्रपति

मोहम्मद युसुफ कल्ला ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र को अधिक ताकतवर बनाने और इसे 21वीं सदी की चुनौतियों तथा वास्तविकताओं के लिहाज से और प्रासंगिक बनाने के लिए इसमें सुधार की आवश्यकता है।

विश्व के प्रमुख राष्ट्रों के समर्थन के साथ भारत पहले ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के लिए दावा कर चुका है। यूरोप, अमेरिका, एशिया और अफ्रीका के कई देश भी भारत का पुरजोर समर्थन कर चुके हैं। भारत की तरह ही इंडोनेशिया का कहना है कि संयुक्त राष्ट्र को पारदर्शी, प्रभावशाली, जवाबदेह, दक्ष और प्रतिनिधित्व के गुणों के साथ-साथ विश्व शासन का केंद्र बनाया जाना चाहिए। इंडोनेशिया शांति रक्षक बल ने अपने देश के योगदान में वर्ष 2019 तक इजाफा करने और क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्तर पर आतंकवाद से मुकाबले की अपनी प्रतिबद्धता को जाहिर किया। आज के वातावरण में भारत और इंडोनेशिया सरीखे देशों की जिम्मेवारी अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि हमने गरीबी को करीब से महसूस किया है।

आज हम उस चौराहे पर खड़े हैं, जहाँ दो रास्ते औद्योगिकी और प्रौद्योगिकी की ओर तथा दो आतंकवाद और ग्लोबल वॉर्मिंग की ओर हैं। औद्योगीकरण तथा प्रौद्योगिकी के लाभों का लुत्फ उठाने के साथ-साथ हमें नई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। जलवायु-परिवर्तन इन अनेक मुद्दों में से एक है, जो लोगों के जीवन एवं राष्ट्रों को सीधे तौर पर प्रभावित कर रहे हैं। आसियान और भारत के देशों को इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर आपसी समन्वय स्थापित कर साझी रणनीति के तहत कार्य करना चाहिए। विकसित देशों के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए जलवायु परिवर्तन एवं इसके प्रतिकूल प्रभावों का उपशमन करने हेतु तत्काल महत्त्वाकांक्षी कदम उठाना बहुत जरूरी है। विकासशील देशों को साझी, किंतु विभेदीकृत जिम्मेदारियों तथा अपनी-अपनी क्षमता के सिद्धांतों के अनुसरण में 2020 के पश्चात् व्यापक, संतुलित एवं साम्यपूर्ण करार के लिए साथ मिलकर काम करना चाहिए।

दूसरा सबसे बड़ा खतरा आतंकवाद है। इंडोनेशिया और भारत दोनों समान रूप से धार्मिक कट्टरवाद से ग्रसित हैं। धार्मिक उन्माद एवं सांप्रदायिक

विद्वेष फैलाने वाली शक्तियाँ दोनों देशों में सक्रिय हैं। मेरा मानना है कि इस वैश्विक चुनौती का मुकाबला करने हेतु भारत–आसियान को ज्यादा मुखर होना पड़ेगा, क्योंकि यह इसलिए आवश्यक है कि आज देशों की आर्थिकी पर अनिश्चितता, मंदी का खतरा मँडरा रहा है। देश में बेरोजगारी एवं संसाधनों की कमी के कारण युवा वर्ग परेशान हैं, ऐसे में आतंकी संगठन धर्म के नाम पर आसानी से उन्हें गुमराह कर सकते हैं। बढ़ती आबादी और गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोग हमारे लिए एक बड़ी चिंता का विषय बन गए हैं। कुल मिलाकर मानव संसाधन का कुशल प्रबंधन हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

आबादी की घड़ी निरंतर बढ़ती हुई टिक–टिक कर रही है तथा हमें अपनी जिम्मेदारियों की बरबस याद दिला रही है कि हमें अपने सभी लोगों के लिए संपोषणीय एवं समग्र विकास को सुनिश्चित करना होगा। सस्ती ऊर्जा, आवास, स्वास्थ्य देखरेख, बुनियादी सेवाओं, शिक्षा एवं उत्तम रोजगार तक पहुँच प्रदान कर ऐसा अनुकूल माहौल सृजित करके ही इसे प्राप्त किया जा सकता है। जो अवसंरचनाओं संबंधी अंतराल को पाटे और गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास तथा संपोषणीय प्रगति के पथ पर ले चले।

इंडोनेशिया और भारत दोनों राष्ट्रों ने सार्वभौमिक सतत विकास के एजेंडे को अपनाकर जनकल्याण को अपनी पहली प्राथमिकता निर्धारित की है। सार्वभौमिक विकास के एजेंडे के लिए यह अपेक्षित है कि विकसित देशों के साझेदार अपनी बाध्यताओं को भी ग्रहण करें। भारत और आसियान साथ मिलकर साझेदार, समावेशी एवं संपोषणीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुकूल अंतरराष्ट्रीय माहौल स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। साथ में यह महत्त्वपूर्ण पहलू सुनिश्चित करना होगा कि पर्याप्त वित्तीय एवं अन्य आवश्यक संसाधनों के साथ इस विशाल कार्य में मदद मिलती रहे। यह प्रसन्नता का विषय है कि अपने–अपने ढंग से इंडोनेशिया और भारत अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए उन संस्थाओं को सुदृढ़ कर रहे हैं, जिनका लक्ष्य मानव मात्र का कल्याण है।

भारत संयुक्त रूप से भी आतंकवाद से लड़ने के लिए प्रतिबद्ध है तथा भारत द्विपक्षीय रूप से और बहु–व्यवस्थाओं के माध्यम से भी आतंकवाद से लड़ने के उद्देश्य से अन्य देशों के साथ भागीदारी करने के लिए सदैव तत्पर है।

इंडोनेशिया के साथ भारत हमेशा से एकता के पक्ष में रहा है। शुरुआत से ही अन्य विकासशील देशों के साथ सहयोग, स्वतंत्र भारत की विदेश नीति का केंद्रीय सिद्धांत रहा है। हमारा दृष्टिकोण यह है कि हम भारतवासियों को ऐसे अन्य देशों के साथ विकास संबंधी अपने अनुभवों को साझा करना चाहिए, जो समान पथ पर चल रहे हैं तथा यह हमारे तकनीकी एवं आर्थिकी सहयोग कार्यक्रम आई.टी.ई.सी. के लिए प्रेरणा है, जिसे 1964 में शुरू किया गया था। भारत अपने आई.टी.ई.सी. कार्यक्रम के माध्यम से यहाँ पर मौजूद लगभग सभी देशों के साथ साझेदारी करता है और मानव संसाधन विकास तथा विशेषज्ञों की तैनाती आदि के लिए अनुभवों को साझा करता है। दोनों देशों के लोग आपसी सहयोग बढ़ने से अति उत्साहित एवं प्रसन्न हैं। हर वर्ष भारत आई.टी.ई.सी. के तहत सैकड़ों प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए साथी विकासशील देशों से हजारों उम्मीदवारों की मेजबानी करता है। हम दोनों उपमहाद्वीप महासागरों के माध्यम से आपस में जुड़े हुए हैं। हमारे तीनों ओर जो समुद्र है, उसने अनेक सहस्राब्दियों से हमारे विस्तारित पड़ोस के साथ वाणिज्य, संस्कृति एवं धर्म के संबंधों को सुगम बनाया है।

हमारी यह सांस्कृतिक संलग्नता बहुत ही स्पष्ट है, जो एशिया एवं अफ्रीका तक फैली हुई है। हिंद महासागर समग्र विकास के साथ हमारे बीच घनिष्ठ सहयोग के लिए अनेक अवसर प्रस्तुत करता है और साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है, जिसमें समुद्र में जलदस्युता से उत्पन्न चुनौतियाँ भी शामिल हैं। हम अपने सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से न केवल उन अवसरों का प्रयोग कर सकते हैं, जो हिंदू महासागर प्रस्तुत कर रहा है, अपितु उन चुनौतियों से भी निपट सकते हैं, जो हमारे मार्ग में उत्पन्न हो रही हैं। हमें एशिया एवं अफ्रीका में अपने चारों ओर अनुकूल वातावरण के सृजन के लिए

साथ मिलकर कार्य करना जारी रखना चाहिए, जिसमें कि हमारे विकास एवं प्रगति के लिए हमारी बहुपक्षीय साझेदारियाँ शामिल हैं।

सेतु के रूप में हमारे प्रवासी

इंडोनेशिया में मुझे कई भारतीय मिले, जो वहाँ पर नौकरी, व्यापार या अन्य पारिवारिक कारणों से रह रहे हैं। ये सभी लोग जहाँ इंडोनेशिया में अपना कुशलतापूर्वक जीविकोपार्जन कर रहे हैं, वहीं इनके मन में भारत-इंडोनेशिया को और अधिक निकट लाने की छटपटाहट है। भारतीय मूल के एक लाख 20 हजार से अधिक लोग जकार्ता, मदान, सुरबाया और बागडुंग में रहते हैं। लगभग दस हजार भारतीय विशेषज्ञों के रूप में इंडोनेशिया के अंदर अस्थायी रूप से कार्य कर रहे हैं। इनमें से अधिकतर इंजीनियर, वैज्ञानिक, चार्टर्ड अकाउंटेंट, बैंकर्स, परामर्शदाता और पेशेवर शामिल हैं। मुझे बताया गया है कि 'भारतीय कल्चरल फोरम' के अधीन 31 सामाजिक संस्थाएँ भारतीय संस्कृति के ध्वज वाहक के रूप में अपना कर्तव्य बखूबी निभा रहे हैं। कई भारतीय विद्यार्थी इंडोनेशिया में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मैं सदैव शैक्षिक आदान-प्रदान का प्रबल समर्थक रहा हूँ। अलग-अलग देशों में पढ़ रहे विद्यार्थी जहाँ एक-दूसरे देशों के तौर-तरीके सीखते हैं, वहीं आने वाले समय में भारत-इंडोनेशिया के ब्रांड एंबेसडर बनकर दोनों देशों की कीर्ति पताका पूरे विश्व में फैलाने में भी सफल होंगे। भारत-इंडोनेशिया के बारे में मेरे एक यूरोपियन मित्र ने बताया और मैं इससे काफी सहमत भी हूँ कि ये दोनों जुड़वाँ देश हैं। समूची दुनिया की तरह भारतीय मूल के लोगों ने भी इंडोनेशिया में अपनी सफलता के झंडे गाड़े हैं।

चाहे वे अध्यात्म के क्षेत्र में आनंद करुण हों, या अभिनय की दुनिया की आयु अजहरी या शहीर शेख हों, राजनीति में एच.एस. ढिल्लो हों या शीर्ष उद्योगपति प्रकाश लोहिया और मनोज पंजाबी हों, सभी ने इंडोनेशिया में अपनी प्रखरता एवं कड़ी मेहनत की बदौलत शीर्ष स्थान बनाया है। अपनी व्यापक गतिविधियों के माध्यम से दोनों देशों के मध्य सेतु का काम करनेवाले भारतीय

प्रवासी दोनों देशों को अधिक निकट लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये लोग विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय त्योहारों एवं राष्ट्रीय उत्सवों को मनाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन कार्यक्रमों में स्थानीय लोगों की बढ़-चढ़कर भागीदारी रहती है। मुझे बताया गया है कि हमारे प्रवासी बंधु भारतीय सिने जगत् से जुड़े कई कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। मुझे यह भी बताया गया है कि लगभग हर भारतीय त्योहार पूरी उमंगता और उत्साह के साथ मनाया जाता है, जहाँ इन कार्यक्रमों में भारतीय संस्कृति व परंपराओं की झलक देखने को मिलती है, वहीं भारतीय व्यंजन तथा परिधानों के विषय में भी आम इंडोनेशियन को जानकारी प्राप्त होती है। संस्कृति, साहित्य, संगीत, नृत्य एवं कला से जुड़े कितने ही कार्यक्रम इंडोनेशिया में भारतीय प्रवासियों के माध्यम से आयोजित किए जाते हैं, जिसमें भारतीय दूतावास की भी भागीदारी रहती है। मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता हुई कि जहाँ एक ओर होली, दीपावली और ओणम के त्योहार मनाए जाते हैं, वहीं दूसरी ओर व्यापार एवं वाणिज्य निवेश से जुड़ी कार्यशालाएँ भी देखने को मिलती हैं। कहीं विभिन्न लाइफ स्टाइल बीमारियों पर सेमिनार हो रहा होता है, तो कहीं किशोर कुमार को समर्पित शाम का आयोजन किया जाता है।

मुझे विश्व में अनेक देशों के प्रवासी संगठनों की जानकारी है, परंतु इंडोनेशिया में प्रवासियों के मध्य आपसी प्रेम एवं सहयोग की भावनाओं को देखकर मैं अत्यंत प्रभावित हुआ। मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि प्रवासी भारतीय विभिन्न संगठनों के माध्यम से एक वृहद् परिवार की भाँति इंडोनेशिया में रहते हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से जहाँ व्यापारिक संबंध बनाने में सहायता दी जाती है, वहीं लोगों को ढूँढ़ने में भी मदद की जाती है। सामाजिक गतिविधियों के तहत बच्चों में संस्कार देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि इंडोनेशिया और भारत द्विपक्षीय संबंधों को मधुर बनाने के साथ-साथ नई ऊँचाई तक ले जाने में भी सफल होंगे।

मुझे जकार्ता स्थित संस्थाओं द्वारा भावपूर्ण आमंत्रण मिला, जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। मुझे बताया गया कि इंडोनेशिया स्थित प्रवासी संगठनों द्वारा हिंदी की कक्षाएँ पढ़ाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न नृत्य शैलियों का मंचन और प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। बड़ी गर्मजोशी के साथ सभी भारतीय त्योहारों को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने की व्यवस्था की जाती है, जिसमें इंडोनेशिया के गण्यमान्य नागरिकों की उपस्थिति आयोजन के उत्साह को दुगना कर देती है। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य की मैं सराहना करना चाहता हूँ।

मुझे यह भी बताया गया कि प्रवासी संगठन यदि किसी मुश्किल में पड़े, दिक्कत में पड़े या कठिनाइयों में पड़े तो भारतीय दूतावास के साथ स्थानीय प्रशासन मिलकर उनकी समस्याओं का समाधान करते हैं।

कुल मिलाकर भारतीय मूल के लोगों द्वारा दोनों देशों के बीच मजबूत सेतु का निर्माण अत्यंत कुशलता से किया गया है, आशा है कि प्रवासी भारतीय अपने क्रियाकलापों से दोनों देशों को और अधिक निकट लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

अपनी व्यापक गतिविधियों के माध्यम से दोनों देशों के मध्य सेतु का काम करनेवाले भारतीय प्रवासी, दोनों देशों को अधिक निकट लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये लोग विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय त्योहारों एवं राष्ट्रीय उत्सवों को मनाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन कार्यक्रमों में स्थानीय लोगों की बढ़-चढ़कर भागीदारी रहती है। मुझे बताया गया है कि हमारे प्रवासी बंधु भारतीय सिने जगत् से जुड़े कई कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिससे कि वहाँ सलमान खान, शाहरुख खान, अक्षय कुमार, रजनीकांत और कमल हसन जैसे अभिनेता बहुत ही लोकप्रिय हैं।

कल्पना कीजिए, एक ऐसा राष्ट्र, जहाँ पर हाथ जोड़कर नमस्ते से आपका कोई अभिवादन करे, संयुक्त परिवार में सबका सम्मान होता दिखे, पारिवारिक, सामुदायिक भोजों का आयोजन हो, धार्मिक सहिष्णुता और

समरसता के दर्शन हों, जहाँ घटोत्कच, अर्जुन, कर्ण, भगवान् राम और माता सीता के जीवन की नृत्य नाटिकाएँ देखने को मिलें, जहाँ असंख्य मंदिर हों, लोगों के नाम संस्कृत भाषा से लिये गए हों और जहाँ हिंदू बौद्ध धर्म के अद्‍भुत संगम के रूप में सदियों पुराने मंदिर विहार मौजूद हों, जहाँ अयोध्या नगरी हो, आपको लगेगा कि हम भारत या नेपाल की बात कर रहे हैं, परंतु भारत-नेपाल के अलावा दुनिया में एक बेहद खूबसूरत गंतव्य के रूप में इंडोनेशिया मिलेगा, जहाँ आपको ये सारी परंपराएँ व रीति-रिवाज देखने को मिलेंगे। भारत की तरह लोग आज भी पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। यहाँ पर लोग उत्साह के साथ हिंदू नववर्ष मनाते हैं तथा ईद, क्रिसमस, दीपावली को भी पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे देश-विदेश के कई मंचों पर भारतीय संस्कृति के विषय में बोलने का सुअवसर मिला है। मेरा यह भी मानना रहा है कि भारत की विश्व को सबसे बड़ी देन हमारी संस्कृति ही है और इस नाते हमने पूरे विश्व को मानवता का न केवल पाठ पढ़ाया है, बल्कि उसके जीवंत रूप के दर्शन कराए हैं। सदियों से पूरे विश्व का हमने जीवन के उच्च आदर्शों से साक्षात्कार कराया है। चाहे वह जापान, चीन, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका या यूरोप हो, सर्वत्र हम अपने शाश्वत मूल्यों के माध्यम से जीने की एक नई राह दिखा रहे हैं। जब मैं इंडोनेशिया के बारे में सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि यह जीवंत राष्ट्र है, जो अपनी संस्कृति से गौरवान्वित है, जिसने हमारे प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों को अपना आधार स्तंभ बनाया है। सदियों पूर्व से चली आ रही हमारी सनातन संस्कृति की भाँति इंडोनेशिया का आधार स्तंभ भी हमारी ही संस्कृति है, जिसमें कि त्याग, समरसता, सहिष्णुता, निस्स्वार्थ प्रेम, समभाव, समन्वय, निरंतर उन्नयन की भावना और मानव मात्र के सामाजिक, आर्थिक तथा आत्मिक कल्याण निहित हैं। युग-युगांतर से हम संपूर्ण विश्व को शांति और अध्यात्म का पाठ पढ़ा रहे हैं।

अगर पूरे विश्व इतिहास का अवलोकन करें तो भारतीय संस्कृति का कोई सानी नहीं है। मानवीय मूल्यों की सर्वश्रेष्ठता को इस संस्कृति ने न

केवल स्थापित किया है, बल्कि उन मूल्यों की रक्षा एवं उनके संवर्द्धन का मार्ग आलोकित और प्रशस्त भी किया है। हजारों साल बाद भी यदि हमारी सनातन परंपरा जीवित है तो वह इस अजर-अमर संस्कृति के कारण ही है।

भारतीय संस्कृति की तरह इंडोनेशिया भी पूरे संसार को अपना परिवार मानते हुए उसके कल्याण के लिए कृतसंकल्प दिखता है। दुनिया के किसी भी देश में आपको यह जीवन दर्शन देखने को नहीं मिलेगा। आज विश्व भौतिक सुख की पराकाष्ठा पर बैठा हुआ है। संचार माध्यम, प्रौद्योगिकी, विज्ञान की चकाचौंध, बाजारवादी सोच, धन-लोलुपता, बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ एवं सैकड़ों कि.मी. प्रति घंटे की गति से दौड़ती बुलेट ट्रेन आदि देखकर बाहर से तो सब ठीक-ठाक लगता है, परंतु अगर आज देखें तो लोग अशांत व अवसाद से ग्रसित हैं। ईर्ष्या, अधिक पाने की होड़, विस्तारवादी नीतियाँ, धर्म-जाति, संप्रदाय एवं राष्ट्रीयता के नाम पर दिन-प्रतिदिन बढ़ता संघर्ष, झूठी श्रेष्ठता सिद्ध करने की मनोवृत्ति और जातीय तथा धार्मिक हिंसा ने एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया है, जहाँ हर कोई अपने को डरा-सहमा तथा असुरक्षित-सा महसूस करता है। इसका सबसे दु:खद पहलू यह है कि अविश्वास, विद्वेष, अनावश्यक होड़, ईर्ष्या तथा विषाद का यह भाव अब अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गया है, जो कि अपने आप में एक चिंताजनक विषय है। सीमा विवाद, व्यापारिक असफलता, संसाधनों के लिए संघर्ष, धार्मिक कट्टरता एवं नस्लभेद जैसी कुछ ऐसी चुनौतियाँ हैं, जो मानवमात्र के कल्याण में अवरोध बनकर खड़ी हैं। ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए इंडोनेशिया और भारत की विशिष्ट भूमिका रही है। आजादी के बाद के दशकों पर दृष्टिपात किया जाए तो इंडोनेशिया और भारत ने वैश्विक शांति, परस्पर सहयोग एवं जनकल्याण के लिए एक निर्णायक भूमिका अदा की है।

आज की विकट परिस्थितियों में शांति, सद्भाव व मानव कल्याण की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है, जब हम संपूर्ण भाव से पूरे विश्व को अपने परिवार के रूप में देखें। हमारी 'संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम्' के भाव को हजारों वर्ष पूर्व संपूर्ण विश्व में प्रतिपादित कर चुकी है।

आज चाहे अमेरिका हो, चीन हो, कनाडा हो, फ्रांस हो, स्पेन हो या ब्रिटेन या फिर चाहे भारत हो या सुदूरवर्ती ऑस्ट्रेलिया हो, मध्य-पूर्व के देश हों या अफ्रीकी उपमहाद्वीप का कोगो, सोमालिया या कीनिया हो, सभी जगह गरीबी, भुखमरी, अवसाद, नस्लीय जातीय संघर्ष, असमानता, विद्वेष एवं असहिष्णुता देखने को मिलती है। ऐसे चुनौतीपूर्ण युग में हम सभी को मिल-बैठकर शांति-सौहार्द के वातावरण में समाधान ढूँढ़ना होगा, अन्यथा पूरी दुनिया का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

सर्जनवीयता विश्वविद्यालय के अपने व्याख्यान में मैंने कहा कि मुझे लगता है कि मानव संसाधन का अगर सही उपयोग किया जाए, तो हम काफी चुनौतियों से निपट सकते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम आज भौतिक सुखों की अंधी दौड़ में भाग रहे हैं, जबकि आज आवश्यकता इस बात की है कि हमें सतत विकास के उस मॉडल को स्थापित करना होगा, जिसकी आधारशिला शाश्वत मानवीय मूल्यों पर टिकी हुई हो, प्राकृतिक संसाधनों से समन्वय स्थापित करता यह मॉडल एक ऐसी अवधारणा का विकास करे, जहाँ हम समुचित मानव कल्याण के लिए अपने आप को पूर्णतया समर्पित करें। एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण हो, जहाँ संपूर्ण विश्व एक परिवार के सूत्र में बँधे, इस मॉडल का विकास करने में या ऐसे तंत्र का विकास करने में सांस्कृतिक मूल्यों का बड़ा महत्त्व है। मैं समझता हूँ कि भारत और इंडोनेशिया की साझी सांस्कृतिक विरासत इस महत्त्वपूर्ण कार्य में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हमारी सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की आधारशिला एक ही है। आपसी भाईचारे, सौहार्द, प्रेम तथा समरसतावाले समाज के निर्माण के लिए दोनों देशों को अतिरिक्त प्रयास करने पड़ेंगे।

अपने विदेश प्रवास के दौरान मैंने एक बात को महसूस किया है कि दुनिया के जो श्रेष्ठ नेता हुए हैं, वे कहीं-न-कहीं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से प्रेरित रहे हैं, चाहे वे विंस्टन चर्चिल हों, अब्राहम लिंकन हों, मदर टेरेसा हों, स्वामी दयानंद सरस्वती हों, विवेकानंद हों, महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला हों या मार्टिन लूथर हों या इंडोनेशिया के शिक्षा मंत्री श्री देवनताराजी हों, इन सभी

ने हमारी संस्कृति के अमर मूल्यों को आत्मसात् किया, इन्हीं अमर मूल्यों पर जीवन समर्पित करते हुए उन्होंने न केवल विश्व को नई राह दिखाई, अपितु मानवता के लिए नए मापदंड भी स्थापित किए।

भारत और इंडोनेशिया ने स्वाधीनता प्राप्ति के बाद विश्व के अनेक मंचों पर उपनिवेशवाद का खुलकर विरोध किया है। मुझे लगता है कि इस साझे संघर्ष में ऊर्जा का संचार हमारी अनेकता में एकतावाली संस्कृति के कारण ही हुआ।

दुनिया की कोई समस्या, कोई चुनौती या कोई अवरोध ऐसा नहीं है, जिससे निपटने का रास्ता हमारे साझे सांस्कृतिक मूल्यों में न मिलता हो। इतिहास के पन्नों को टटोलने पर मैंने देखा कि पिछले पाँच-छह दशकों में भारत और इंडोनेशिया ने मिलकर विश्व परिदृश्य में निम्न विश्व शांति और कल्याण के सिद्धांत प्रतिपादित किए या फिर अपने कर्तव्यों के माध्यम से इन शाश्वत मूल्यों को और सशक्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- Non Align Movement (गुट निरपेक्षता)
- Peaceful Coexistence (शांति सह अस्तित्व)
- Economic Cutlural Cooperation (आर्थिक सांस्कृतिक सहयोग)
- Anti Apartheid (नस्लवाद विरोध)
- Disarmament (निस्तारीकरण)
- Use of Nuclear Energy for peaceful purpose (परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्वक उपयोग)
- Anti Colonialism (उपनिवेशवाद का विरोध)
- Support for UNO (संयुक्त राष्ट्र समस्याओं का सहयोग)
- Settlement of Disputes through Settlement (गतिरोधों का शांतिपूर्वक समाधान)
- Universal Brotherhood (विश्व बंधुत्व)

मैंने इंडोनेशिया में अपने अभिभाषण में बताया कि विश्व में वर्तमान

समय में गरीबी, भुखमरी, मानसिक तनाव, सामाजिक शोषण, जातीय संघर्ष, असमानता एवं असहिष्णुता जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत और इंडोनेशिया को साझे-सार्थक और समयबद्ध तरीके से रणनीति का सृजन कर उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित करना होगा, तभी धरती पर मानवता की रक्षा हो सकती है। हमें अपनी साझी विरासत के मूल्यों को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है तथा एक ऐसे तंत्र को विकसित करने की आवश्यकता है, जिससे स्थायी विकास की अवधारणा को धरातल पर लाया जा सके। आज हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सहारे, डिजिटल विश्व के नए वातावरण में मानव मूल्यों की रक्षा और विश्व के कल्याणार्थ एक लंबा रास्ता तय करना है। हमें मिलकर संघर्ष करना है, अपनी कविता की इन पंक्तियों में मैं भारत और इंडोनेशिया के समक्ष चुनौतियों के संघर्ष का वर्णन करना चाहता हूँ।

अभी भी है जंग जारी,
वेदना सोई नहीं है।
मनुजता होगी धरा पर,
संवेदना खोई नहीं है।।
किया है बलिदान जीवन,
निर्बलता ढोई नहीं है।

हमारी रीतियाँ, हमारे गीत एवं हमारा संगीत सब विश्व कल्याण और विश्व बंधुत्व की भावना से अभिप्रेरित है। हमारी सोच, हमारा चिंतन समूचे विश्व के लिए है।

भारत व इंडोनेशिया की संस्कृति विनम्रता, प्रेम और त्याग का मार्ग प्रशस्त करती है। विनम्रता, अहंकारपूर्ण अस्तित्व को तिलांजलि देने का आह्वान करती हमारी संस्कृति सौहार्द और सद्-विचारों की फसल को पुष्पित-पल्लवित करने पर जोर देती है।

संपूर्ण विश्व की बात करें तो हम इस बात में अनूठे हैं कि हमने सभी धर्मों का सम्मान करना सीखा है। हमारी परंपरा रही है कि हमने सबका

स्वागत किया है और उनकी अच्छाइयों को आत्मसात् भी किया है। दुनिया में कहीं भी अन्याय एवं अत्याचार होता है तो उसकी सर्वाधिक पीड़ा हमें ही होती है, क्योंकि हमने संसार को अपना परिवार माना है और हमने हमेशा अन्याय का विरोध किया है। विश्व में कहीं भी किसी के ऊपर अगर जुल्म हुआ है तो हमने मुखर होकर उसका विरोध किया है। आदर्शों के प्रति हमने स्वयं को पूर्णतः समर्पित किया है। सनातन संस्कृति हमें सबकी चिंता करना सिखाती है, वह कहती है कि—

अयं निजं परोवेति,
गणना लघु चेतसाम।।
उदार चरितानाम् तु,
वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात् यह तेरा, यह मेरा है, की बात करनेवालों की गणना हमने तुच्छ लोगों में की है, उदार चरित्रवालों के लिए पूरी वसुधा तथा पूरा संसार ही उनका परिवार है। इस परिवार की रक्षा तथा इसका सम्यक् विकास कैसे हो, यह परिवार आनंद-मंगल से रहे, विश्व के इस पूरे परिवार में सुख-शांति, प्रगति और समृद्धि कैसे बनी रहे, यह हमारी संस्कृति हमें सिखाती है और अभिप्रेरित करती है। यह भावना मैंने इंडोनेशिया के लोगों के अंदर देखी है। शायद इसीलिए दुनिया भर के लोग वहाँ जाना पसंद करते हैं। हमारे लिए विश्व बाजार नहीं, अपितु एक परिवार है। पश्चिमी देशों में आज भौतिकवाद की अंधी दौड़ में बदहवास मानव सभी मूल्यों को दरकिनार कर संपूर्ण विश्व को एक बाजार के रूप में देखता है। दुनिया के हर देश का नागरिक उपभोक्ता के रूप में अपनी पहचान रखता है। दुनिया के दूसरे देश जहाँ विश्व को एक बाजार की संज्ञा देकर उसके द्वारा की जाने वाली खपत पर अपनी प्राथमिकताएँ तय करते हैं, वहीं भारत और इंडोनेशिया सरीखे देश मानव मूल्यों को तरजीह देते हैं। हमारे लिए विश्व परिवार है और हम सबको प्यार और सम्मान देते हैं। सामाजिक-आर्थिक विषमता को समाप्त कर हमने परस्पर प्रेम, समरसता, सौहार्द, धर्मनिरपेक्षता, मानव एकात्मवाद को सशक्त

बनाया है। परिवार की भावना से विश्व को देखने तथा उस परिवार की चिंता करने की हमारी आदत ने हमें विश्व में सबसे अलग बना दिया है, तभी तो हमने कहा है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा-कश्चिदः दुःख भाग भवेत।।

अर्थात् सभी सुखी रहें, सभी स्वस्थ रहें, सभी का कल्याण हो तथा दुनिया में कोई भी दुःखी न रहे। जिस दिन संपूर्ण विश्व के मानव मात्र के मन में सभी के सुख और कल्याण की भावना जाग्रत् हो उठेगी और वह सोचने लगेगा कि जब तक दुनिया का कोई भी व्यक्ति दुःखी है, तब तक मैं कैसे खुश और सुखी हो सकता हूँ, उस दिन एक नए संसार की रचना होगी और यह संसार बेहद खूबसूरत होगा और इस नए संसार की रचना की जिम्मेदारी हम सबकी है।

भारत और इंडोनेशिया की कालजयी संस्कृति पूरी दुनिया को संजीवनी प्रदान करने में समर्थ है। दुनिया में उस दिन कोई भूखा नहीं रहेगा, जिस दिन वह माँ भारती की अमर संस्कृति एवं वेदवाणी के अनुरूप जीवन निर्वाह करेगा।

ॐ सह नाववतु।
सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु ।
मा विद्‍घविषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॐ।।

अर्थात् हम साथ-साथ रहें, हम सभी साथ भोजन ग्रहण करें, हम साथ मिलकर पुरुषार्थ करें, हम तेजस्वी बनें, हममें किसी प्रकार का कोई अहं न आए और न कोई भेदभाव रहे। आज इस भावना का विकास अगर हम दोनों

देश कर पाने में सक्षम होते हैं तो विश्व शांति की पताका संपूर्ण विश्व में फैलेगी।

भारत के बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी एवं यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने यही मूलमंत्र लेकर जनकल्याण, विश्व कल्याण की भावना को शक्ति प्रदान की है। उन्होंने 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा देकर प्रत्येक भारतीय के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में नई ऊर्जा को संचारित किया है।

आज पूरी दुनिया में आतंकवाद पूर्ण वेग से अपने पाँव पसार रहा है, सामाजिक और आर्थिक असमानता आसमान को छू रही है। गरीबी, भुखमरी एवं सामाजिक कुरीतियाँ न केवल समाज में विकृति ला रही हैं, बल्कि मानवता को अपमानित और कलंकित कर चारों ओर अशांति और दु:ख-दर्द की ज्वाला को दहका रही हैं। ऐसी विषम और विकट परिस्थितियों में हमारी साझी संस्कृति ही दुनिया की सही दिशा और दशा का निर्धारण कर सकती है।

□

इंडोनेशिया :
धर्म इस्लाम, संस्कृति रामायण

कई मायनों में मुझे भारत और इंडोनेशिया एक-सा लगा। भारत के सदृश अनेकता में एकता के मूलमंत्र को साकार करता यह देश धार्मिक सहिष्णुता एवं समरसता की मिसाल प्रस्तुत करता है।

रामलीला मंचन के बाद कलाकार

हमारी तरह ही इस देश में भी अयोध्या और लोगों के दिलों में श्रीराम बसते हैं। हिंदू त्योहारों तथा ईसाई त्योहारों के साथ ईद भी मनाई जाती है। देखा जाए तो भारतीय संस्कृति शुरू से ही गंगा-जमुना तहजीब की हिमायती रही है। इंडोनेशिया की 90 प्रतिशत जनसंख्या इस्लाम धर्मावलंबी है, लेकिन यह देश अपने जीवन में रामायण को अंगीकार करता है। यहाँ के लोग न केवल बेहतर मनुष्य बनने के उद्‌देश्य से रामायण पढ़ते हैं, बल्कि इसके चरित्रों की पात्रता भी वहाँ की स्कूली शिक्षा का अभिन्न अंग है। सामान्यत: यह किसी को भी आश्चर्यचकित करनेवाली बात हो सकती है कि दुनिया की सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादीवाला देश इंडोनेशिया रामकथा, यानी रामायण का दीवाना है। इस देश में हमारे देश की तरह ही असंख्य मंदिर हैं और यहाँ के मुस्लिम भी भगवान् श्रीराम व कृष्ण को अपने जीवन का नायक और रामायण-महाभारत को अपने दिल के सबसे करीब मानते हैं। भारत की तरह ही इंडोनेशिया में रामायण सबसे लोकप्रिय ग्रंथ है, लेकिन भारत और इंडोनेशिया की रामायण में अंतर है। भारत में राम की नगरी जहाँ अयोध्या है, वहीं इंडोनेशिया में यह 'योगया' के नाम से जानी जाती है। योगया योगयाकार्ता को ही कहते हैं, इस क्षेत्र को इंडोनेशिया की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ रामकथा को 'ककनिन' या 'रामायण' तथा 'काकावीन' नाम से जाना जाता है।

मुस्लिम बाहुल्यता होने के बावजूद इंडोनेशिया के लोग रामायण को केवल पढ़ते ही नहीं, बल्कि अपने जीवन की बेहतरी के लिए उसके पात्रों तथा उसमें छिपी हुई उनकी विशेषताओं तथा कलाओं को जीते भी हैं। इंडोनेशिया की स्कूली शिक्षा प्रणाली में रामायण के पात्रों का शिक्षा में अभिन्न हिस्सा है।

विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रामायण तथा महाभारत के पाठ का अद्‌भुत व बेहतरीन मंचन इंडोनेशिया की सांस्कृतिक एवं पारंपरिक बाहुल्यता की विशेषता है।

रामकथा इंडोनेशिया में सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है तथा यह सत्यता से परिपूर्ण है कि संपूर्ण विश्व में सबसे अधिक मुस्लिम जनसंख्यावाला

देश रामायण से जुड़ी अपनी सांस्कृतिक पहचान होने से कतई भी परहेज नहीं करता है। रामायण को इंडोनेशिया में 'रामायण ककविन' (काव्य) कहा जाता है। रामायण के चरित्रों का महत्त्व यहाँ पर स्कूली शिक्षा प्रदान करने हेतु बहुत अधिक है, इसके प्रेरणास्पद प्रसंगों के द्वारा ही स्कूलों में विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है।

इतिहास के मुताबिक रामायण का इंडोनेशियाई संस्करण सातवीं सदी के दौरान मध्य जावा में लिखा गया था तथा उस समय वहाँ पर मेदांग राजवंश का शासनकाल चल रहा था, परंतु माना जाता है कि रामायण के इंडोनेशिया में आने से काफी पूर्व से ही इंडोनेशिया का वर्णन था। ईसा के पूर्व की सदी में लिखी गई वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड में यह वर्णित है कि कपिराज सुग्रीव ने सीता माता की खोज में, पूरब की ओर रवाना हुए दूतों को यवद्वीप और सुवर्ण द्वीप जाने का भी आदेश दिया था। इतिहासकारों के अनुसार इस इलाके में आज जावा और सुमात्रा के लोग बसे हुए हैं।

इंडोनेशिया के जावा प्रांत में महाभारत का मंचन बहुत ही कलात्मक तथा रचनात्मक तरीके से किया जाता है और यह कला यहाँ पर बहुत ही लोकप्रिय है। यह देखना बड़ा ही दिलचस्प होगा कि शिखंडी को भारत में जिस किसी भी रूप में माना गया हो, इंडोनेशिया के जावा द्वीप में उसे एक औरत माना गया। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो यहाँ के लोगों को सुविधाजनक लगा, उसे उसी रूप में स्वीकार कर लिया गया, परंतु इसके पीछे उद्देश्य एक ही है—कलात्मक रूप से महाभारत के पात्रों की विशेषताओं से प्रेरणा लेना तथा अपने बौद्धिक विकास तथा ज्ञान की उत्तमता के लिए उन्हें अपने जीवन में उतारना।

इंडोनेशिया के बाली द्वीप में यदि कहा जाए कि यहाँ रामायण अधिक प्रचलित है तो यह कहना उचित ही होगा कि जावा महाभारत के लिए समर्पित है। यहाँ पर वर्ष भर रमजान के महीने को छोड़कर महाभारत का मंचन होता ही रहता है।

भारत के महाभारत से जावा की कथा कुछ भिन्नता लिये हुए है। यहाँ

रामलीला का उत्कृष्ट मंचन

शिखंडी अर्जुन की दूसरी पत्नी तथा द्रौपदी केवल युधिष्ठिर की ही धर्मपत्नी है, शकुनि को यहाँ पर भी एक बुराई के रूप में देखा जाता है तथा भीम का पुत्र घटोत्कच यहाँ पर बहुत ही लोकप्रिय है।

इंडोनेशिया में भले ही रामायण तथा महाभारत जैसे प्राचीन कथाओं के मंचन में भाषा की भिन्नता हो सकती है, परंतु भाव नहीं बदले हैं। इसका उद्देश्य एक ही है, अपने जीवन में इन कथाओं के बुरे पात्रों से सबक लेकर बुराई को दूर भगाना तथा प्रेरणादायक प्रसंगों और पूज्यनीय पात्रों की अच्छाई को जीवन में ग्रहण करना।

इंडोनेशिया दक्षिण-पूर्व एशिया का ऐसा देश है, जहाँ पर दो हजार से ज्यादा सांस्कृतिक समूहों के लोग निवास करते हैं।

अधिक संख्या में मुस्लिम होने के बावजूद सांस्कृतिक विविधता का वास्तव में प्रेरणास्पद व अतुलनीय परिचय यहाँ के निवासियों ने प्रस्तुत किया है।

भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक रामायण के रचयिता आदिकवि ऋषि वाल्मीकि हैं, तो वहीं इंडोनेशिया में इसके रचयिता महाकवि योगेश्वर को माना जाता है, इसमें इन्होंने सीता को सिंता और लक्ष्मण को इंडोनेशियाई

नौसेना के सेनापति के रूप में प्रस्तुत किया है। इंडोनेशियाई संस्कृति में रामायण काकावीन का मंचन करने की परंपरा युगों-युगों से चली आ रही है और आज भी बहुत प्रचलित है।

वैसे तो इंडोनेशिया की मुख्य भाषा इंडोनेशियाई है, जिसे स्थानीय लोग बहासा इंडोनेशिया के रूप में जानते हैं, अन्य भाषाओं में जावा, बाली, सुंडा, मदुरा आदि शामिल हैं। यहाँ पर प्राचीन भाषा का नाम कावी था, जिसमें देश के प्रमुख साहित्यिक ग्रंथ हैं, रामायण की रचना इसी भाषा में की गई है।

श्रीरामकथा पर आधारित जावा की प्राचीनतम कृति रामायण काकावीन है, यह सातवीं शताब्दी की रचना है। यहाँ की एक प्राचीन रचना उत्तरकांड है, जिसकी रचना गद्य में हुई है। रामायण काकावीन की रचना कावी भाषा में हुई है। मुझे बताया गया कि स्थानीय भाषा में काकावीन का अर्थ महाकाव्य होता है। कावी भाषा में कई महाकाव्यों का सृजन हुआ है, उनमें रामायण काकावीन का स्थान सर्वोपरि है। इतना हीं नहीं, इंडोनेशिया के 20,000 के नोट पर देवनतारा के साथ भगवान् गणेश की भी तसवीर छपती है। गौरतलब है कि इंडोनेशिया की स्वतंत्रता में देवनतारा का अहम योगदान माना जाता है। इस नोट के पीछे के हिस्से पर बच्चों से भरी कक्षा की तसवीर है। इंडोनेशिया में भगवान् गणेश को कला, शास्त्र और बुद्धिजीवी का इष्ट माना जाता है। रामायण काकावीन 26 अध्यायों में विभक्त एक विशाल ग्रंथ है, जिसमें समाराज दशरथ को विश्वरंजन की संज्ञा से विभूषित किया गया है और उन्हें शैव मतावलंबी बताया गया है तथा इस रचना का आरंभ राम जन्म से होता है।

सर्जनवीयता विश्वविद्यालय में मुझे पता चला कि रामायण काकावीन में शूर्पणखा-प्रकरण से सीता हरण तक की घटनाओं का वर्णन वाल्मीकीय परंपरा के अनुसार हुआ है। यहाँ यह जानना दिलचस्प है कि इंडोनेशिया नौसेना के संदर्भ में लक्ष्मण का नाम आदर से लिया जाता है। हनुमान इंडोनेशिया के सर्वाधिक लोकप्रिय पात्र हैं। हनुमानजी की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भी प्रतिवर्ष 27 दिसंबर को मुस्लिम आबादीवाले इंडोनेशिया की आजादी के जश्न के रूप में बड़ी संख्या में

राजधानी जकार्ता की सड़कों पर युवा हनुमानजी का वेश धारण कर सरकारी परेड में शामिल होते हैं, हनुमानजी को इंडोनेशिया में अनोमान कहा जाता है।

इंडोनेशिया प्रवास के दौरान मुझे काफी कुछ नई बातें पता चलीं, वहाँ कई इतिहासकारों के मुताबिक यही आज के जावा और सुमात्रा हैं। ज्ञात हो कि इंडोनेशिया की रामायण काकावीन में राम और रावण के युद्ध कौशल और रणनीति का भी बढ़िया वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि श्रीराम की सेना 7 संभागों में बँटी थी। इन संभागों के प्रमुख स्वयं प्रभु श्रीराम, लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, नल, नील और कपीश्वर थे, वहीं दूसरी तरफ रावण की सेना के 10 संभाग थे। रामायण काकावीन के अनुसार लंका की सुरक्षा के लिए हवाई यंत्रों की देखरेख रावण स्वयं करता था, जो कि आधुनिक युग की वायु सेना की ओर इंगित करता है।

ऐसा माना जाता है कि उसकी हवाई सेना वानरों की सेना की तुलना में ज्यादा मजबूत थी, इसलिए लंका पर हवाई हमला करना या थल मार्ग से हमला करना आसान नहीं था। यही वजह रही कि श्रीराम ने लंका पर हमला करने के लिए छापामार युद्ध की तकनीक अपनाई, रावण व्यूह रचना से पूरी तरह अनभिज्ञ था और इस तरह रावण की सेना राम की छापामार युद्ध-नीति से घबरा गई और अंत में उसकी बुरी तरह हार हुई।

इंडोनेशिया को रामायण के मंचन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त है। मुझे ध्यान है कि पिछले वर्ष इंडोनेशिया के शिक्षा और संस्कृति मंत्री अनीस बास्वेदन भारत आए थे तथा यहाँ पर आकर उन्होंने कहा, 'हमारी रामायण दुनिया भर में मशहूर है, हम चाहते हैं कि इसका मंचन करनेवाले हमारे कलाकार भारत के अलग-अलग शहरों में साल में कम-से-कम दो बार अपनी कला का प्रदर्शन करें, हम तो भारत में नियमित रूप से रामायण पर्व का आयोजन भी करना चाहेंगे।'

मैं दुनिया के कई देशों में गया और मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि चाहे यूरोप हो, अमेरिका हो या फिर अफ्रीकी देश, सभी स्थानों के प्रवासी किसी-न-किसी रूप में इंडोनेशिया के इस नृत्य का स्मरण करते हैं। बातों-

बातों में यह उभर कर आ ही जाता है कि—इंडोनेशिया गए और बाली नहीं गए, तो कहीं नहीं गए और अगर इंडोनेशिया की रामलीला नहीं देखी तो कुछ नहीं देखा। मैंने इंडोनेशिया की रामलीला को पूरा रिकॉर्ड किया और जिन-जिन लोगों ने भी इसे देखा, उसे खूब सराहा। इसी सिलसिले में भारत के केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री डॉ. महेश शर्मा इंडोनेशिया के प्रतिनिधि मंडल से मिले। दोनों नेताओं ने इस प्रस्ताव पर गंभीरता से चर्चा की। इसके पश्चात् अपने एक बयान में उनका कहना था कि हम यह भी चाहते हैं कि भारतीय कलाकार इंडोनेशिया आएँ और वहाँ पर रामायण का मंचन करें, कभी यह भी हो कि दोनों देशों के कलाकार एक ही मंच पर मिलकर रामायण प्रस्तुत करें। यह दो संस्कृतियों के मेल का सुंदर व अद्‍भुत रूप होगा।

लेकिन गौर करें तो यह सिर्फ पर्यटन की बात नहीं है, अगर मुस्लिम आबादी के लिहाज से दुनिया का सबसे बड़ा देश अपनी रामायण का मंचन भारत में करना चाहता है तो बढ़ती धार्मिक असहिष्णुता के इस दौर में यह उन लोगों के लिए एक संदेश होगा, जो कि जाति और धर्म के नाम पर मानवजाति में फूट डालने का कार्य करते हैं। इसके मायने सांस्कृतिक आदान-प्रदान से आगे जाते हैं।

90 प्रतिशत मुस्लिम आबादीवाले इंडोनेशिया पर रामायण की गहरी छाप है। इसी संबंध में हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् फादर कामिल बुल्के ने 1982 में अपने एक लेख में कहा था कि 35 वर्ष पहले मेरे एक मित्र ने जावा के किसी गाँव में एक मुस्लिम शिक्षक को रामायण पढ़ते देखकर पूछा कि आप रामायण क्यों पढ़ते हैं? तो उन्हें उत्तर मिला कि मैं और अच्छा मनुष्य बनने के लिए रामायण को पढ़ता हूँ।

दरअसल रामकथा इंडोनेशिया की सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग है, बहुत से लोग, जिन्हें यह देखकर हैरानी होती है, लेकिन सच यही है कि दुनिया में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादीवाला यह देश रामायण के साथ जुड़ी अपनी इस सांस्कृतिक पहचान के साथ बहुत ही सहज है। जैसे वह समझता हो कि धर्म बस इनसान की कई पहचानों में से एक पहचान है। इसी

संबंध में एक दिलचस्प किस्सा भी सुनने को मिलता है कि इंडोनेशिया के पहले राष्ट्रपति सुकर्णो के समय पाकिस्तान का एक प्रतिनिधिमंडल इंडोनेशिया की यात्रा पर था।

इसी दौरान उसे वहाँ पर रामलीला देखने का मौका मिला। प्रतिनिधिमंडल में गए लोग इससे हैरान थे कि एक इस्लामी गणतंत्र में रामलीला का मंचन क्यों होता है? यह सवाल उन्होंने सुकर्णो से भी किया, लेकिन उन्हें उत्तर में जो जवाब मिला, वह अंतस में सोचने को मजबूर करता है। उन्होंने कहा कि 'इस्लाम हमारा धर्म है और रामायण हमारी संस्कृति।'

यदि इंडोनेशिया जाने से पूर्व कोई मुझसे कहता कि रामायण एवं महाभारत नामक हिंदू महाकाव्य इंडोनेशिया में आज भी बहुत ही लोकप्रिय हैं और प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रभाव इंडोनेशिया की संस्कृति एवं वास्तुशिल्प पर बहुत आसानी से देखा जा सकता है, तो मैं शायद विश्वास न करता।

हिंदू पूजा स्थल

बौद्ध बोरोबुदुर तथा प्राम्बनन शिव मंदिर परिसर, जिनमें से दोनों का निर्माण 9वीं शताब्दी में हुआ था, वे भारत एवं इंडोनेशिया के बीच तत्कालीन

महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंधों के प्रतीक हैं। बहासा में सैनिक के लिए 'क्षत्रिय' शब्द का प्रयोग होता है। बाद की शताब्दियों में, सौदागरों एवं मिशनरियों द्वारा इस्लाम धर्म इंडोनेशिया ले जाया गया, ताकि उस क्षेत्र में इस धर्म को सूफी रहस्यवाद का एक अनोखा मिश्रण प्रदान किया जा सके।

भारत ने जकार्ता एवं बाली में अपने सांस्कृतिक केंद्रों तथा इंडोनेशिया के विश्वविद्यालयों में संस्कृत एवं भारतीय अध्ययन चेयर्स के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान करके आपसी संबंधों को जिंदा रखने का प्रयास किया है। पिछले दिनों भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) ने प्राम्बनन मंदिर परिसर का जीर्णोद्धार किया है। नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना में अपने योगदान के माध्यम से परंपरागत संबंधों को नवीकृत करने के लिए जकार्ता ने अपनी ओर से पूरा प्रयास किया है। एक अन्य बात, जिसने मुझे प्रभावित किया, वह है—हनुमानजी इस देश में अत्यंत लोकप्रिय हैं।

इंडोनेशिया में हनुमानजी की महिमा

अत्यंत बलशाली, परम पराक्रमी, जितेंद्रिय, ज्ञानियों में अग्रगण्य तथा भगवान् श्रीराम के अनन्य भक्त श्री हनुमानजी का जीवन इंडोनेशिया की संस्कृति के लिए हमेशा से प्रेरणादायक रहा है। समस्त इंडोनेशिया में हनुमानजी को न केवल वीर, धीर, अपितु सत्य, स्नेह, सदाचार, सेवा, ब्रह्मचर्य एवं स्वामिभक्ति का जीवंत उदाहरण मानकर उनकी आराधना की जाती है और उनके जीवन का मंचन कर सारे समाज को प्रेरित करने का कार्य किया जाता है। मुझे शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिला, जो पवनपुत्र हनुमान से परिचित न रहा हो।

गत्यर्थ हन धातु में मतूप प्रत्यय लगाने से 'हनु' शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है ज्ञान, गति और प्राप्तिवाला और यह बात हनुमानजी के जीवन में शतशः चरितार्थ होती दिखती है।

मुझे इंडोनेशिया में बताया गया कि गति-मति और शक्ति के अतुलनीय नायक के रूप में हनुमानजी का स्मरण किया जाता है। उनके जीवन की गाथा

को गाँव, नगरों, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया जाता है, वैसे भी हनुमानजी के बारे में महर्षि अगस्त्य ने लिखा है, 'सत्यमेतत रघुश्रेष्ठ यद ब्रवीषि हनूमति न बले विद्यते तुल्यों न गनो न मतो पर हे रघुश्रेष्ठ।' हनुमानजी के विषय में आप जो कुछ कहते हैं, वह सब सत्य है, बल, बुद्ध एवं गति में इनके तुल्य कोई दूसरा नहीं है।

इंडोनेशिया में हनुमानजी के जीवन चरित्र का मंचन बल, बुद्धि एवं गति के आराध्य देव के रूप में दिखा तो मन प्रफुल्लित हो उठा, ऐसा लगा कि भगवान् राम की शक्तिशाली राजा रावण के ऊपर विजय मुख्य पात्र पवन पुत्र हनुमानजी के भारतीय रूप और इंडोनेशिया के रूप में विभिन्नता है। जहाँ भारत में हम भगवान् के केसरिया रूप में दर्शन करते हैं, वहीं इंडोनेशिया में श्वेत रूप में हनुमानजी के दर्शन होते हैं।

मुझे यह जानकर गर्व और अत्यंत प्रसन्नता हुई कि हनुमानजी का पराक्रम उनके भक्तों में समान रूप से संचित है। चाहे इंडोनेशिया हो या फिर भारत, सर्वत्र वे अपने भक्तों के कल्याण के लिए समर्पित संकटमोचन के रूप में प्रकट होते हैं। इंडोनेशिया में सभी रामलीलाओं में सुग्रीव से मैत्री, समुद्र को लाँघना, माता सीता को खोजना, संजीवनी बूटी की खोज, लंका दहन और राक्षसों का मर्दन इत्यादि घटनाएँ उनके पराक्रम के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिन्हें बड़ी गंभीरता, कलात्मकता और प्रभावशाली शैली में पेश किया जाता है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो बाहुबली हनुमानजी का संपूर्ण जीवन त्याग, दास्य भक्ति एवं सख्य वात्सल्य को प्रतिबिंबित करता है और हनुमानजी की ये सभी विशेषताएँ उनके इंडोनेशियाई रूप में भी देखने को मिलती हैं। रामायण के अतिरिक्त दूसरे भारतीय धार्मिक महाग्रंथ महाभारत की कथाएँ इंडोनेशिया में बहुत प्रचलित हैं।

इंडोनेशिया में महाभारत

शिखंडी भारत के महाभारत में कुछ भी रहा हो, लेकिन इंडोनेशिया के जावा द्वीप पहुँचते-पहुँचते शिखंडी ने एक औरत का रूप धारण कर लिया,

जावा की महाभारत कथा उसकी माँग में अर्जुन का सिंदूर देखती है।

वह अर्जुन की दूसरी पत्नी है, अगर जावा की सदियों से प्रचलित महाभारत कथा पर भरोसा करें तो द्रौपदी धर्मराज युधिष्ठिर की पत्नी है, न कि पाँचों पांडवों की। बाकी संपूर्ण महाभारत वैसी ही है, उतनी ही लोकप्रिय है, जितनी कि भारत में।

इंडोनेशिया के जावा में महाभारत का मंचन बहुत ही लोकप्रिय है। जावा में महाभारत का मंचन करनेवालों का दल भारत आता रहता है और इस पौराणिक कथा का मंचन करता है। यह उनके लिए बहुत ही अद्‌भुत अनुभूति थी कि इसका मंचन दिल्ली, यानी इंद्रप्रस्थ में किया गया, जो कि कभी पांडवों की राजधानी थी या फिर भारत के अन्य शहरों में किया गया था। दल जावा में पुतलियों के जरिए महाभारत का मंचन करते हैं।

कला मंडप के पट खुले और परदा गिरा, तो महाभारत के पात्र सामने थे, मगर पुतलियों में भाषा की भिन्नता और भाव वही। इस दल का महाभारत मंचन मैंने योगयकार्ता में भी देखा था। मुझे बताया गया कि महाभारत की कथाएँ संपूर्ण भारत से न केवल आपका परिचय कराती हैं, बल्कि भारत को समझने में भी मदद करती हैं। पहली सदी में भारतीय व्यापारी वहाँ जाते रहे और अपने साथ इन कथाओं को लेकर गए। रामायण और महाभारत का वहाँ बहुत प्रचलन है।

एक ओर जहाँ इंडोनेशिया के बाली द्वीप में रामायण का बोलबाला है तो वहीं दूसरी ओर जावा महाभारत के लिए पूर्णत: समर्पित है। बस रमजान को छोड़कर पूरे वर्ष महाभारत कथा का ही मंचन होता है, अगर जावा में रामायण का मंचन साल में 20 बार होता है तो महाभारत का लगभग 100 बार। कई बार मन में प्रश्न उठा कि क्या यह सब सामाजिक समरसता में कोई योगदान करता है तो अंतर्मन से आवाज आई—हाँ, बिल्कुल, ये कलाकार अपनी कथा के जरिए सद्‌भाव का संदेश देते हैं। अभिनय के माध्यम से जहाँ एक ओर वे उस चरित्र को जीवंत करते हैं, वहीं पौराणिक परंपराओं को आम जनमानस तक पहुँचाने का कार्य भी करते हैं। एक मंचन में लगभग 30 कलाकार होते

हैं। भारत से आए लोग भी इन कथाओं के मंचन से अभिभूत हो जाते हैं।

इंडोनेशिया की कथा में विनोद के पात्र भी हैं तथा समय के साथ जावा के लोगों ने अपने हिसाब से कुछ तब्दीलियाँ भी की होंगी। इसमें गुरु द्रोण और शकुनि की पिटाई के दृश्य हैं। जावा के लोगों ने इस कथा में हँसी के पात्र भी शामिल किए हैं, जो पूरी कथा में दर्शकों का मनोरंजन करते रहते हैं।

भारत के महाभारत में शिखंडी का किरदार क्या है, यह हम भलीभाँति जानते हैं, वह नपुंसक था, उसे किन्नर के रूप में ही देखा जाता है।

मेरे कुछ मित्रों द्वारा मुझे बताया गया कि पहली सदी में भारतीय व्यापारी वहाँ जाते रहे और अपने साथ इन महाग्रंथों को भी ले गए, इसी कारण रामायण और महाभारत का वहाँ बहुत ही ज्यादा प्रचलन है। बाद में 'वायंग' नाम के नाट्य दल इसका मंचन करने लगे।

पौराणिक कथाओं पर आधारित कलाकृति

उन्होंने आगे बताया कि महाभारत और रामायण वहाँ पर घर-घर में हैं। पात्र थोड़े से भिन्न जरूर हैं, मगर कथानक वही है। थोड़ा अंतर आप जरूर देख सकते हैं, मगर महाभारत की मौलिकता में कोई अंतर नहीं किया गया है। कैथरीन ने बताया कि एक-एक प्रदर्शन को देखने पाँच-पाँच हजार लोग आते

हैं, वे कहती हैं कि जब भी घर-परिवार में कोई मुबारक मौका या शुभ घड़ी आती है तो महाभारत कथा का मंचन जरूर किया जाता है।

भारत हो या सुदूर इंडोनेशिया, यह पौराणिक गाथा यह ही आह्वान करती है कि सच को प्रताड़ित तो किया जा सकता है, मगर पराजित नहीं।

संस्कृति से उपजी धर्मनिरपेक्षता

विश्व के मुस्लिम बाहुल्य देशों में इंडोनेशिया धर्मनिरपेक्षता का अद्‌भुत उदाहरण पेश करता है, जब वहाँ हिंदू अपने उत्सव मनाते हैं तो इस्लाम के बड़े-बड़े धर्मगुरु भी इन समारोहों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। इंडोनेशिया की आबादी 23 करोड़ के लगभग है। इस देश में इस्लाम के अनुयायी 88 प्रतिशत हैं, जबकि हिंदू धर्म को माननेवाले लोगों की संख्या केवल 4 से 5 प्रतिशत है।

धर्म, संप्रदाय, मत और जात-पाँत के आधार पर भेदभाव की प्रवृत्ति से मुक्त इंडोनेशिया के लोग केवल रामायण व महाभारत के प्रति श्रद्धा ही नहीं रखते, अपितु योगेश्वर श्रीकृष्ण, धनुर्धर अर्जुन तथा वैदिक साहित्य में शामिल विभूतियों के प्रति भी असीम श्रद्धा रखते हैं। इंडोनेशिया का एक द्वीप बाली तो हिंदू बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण 'हिंदू बाली' के नाम से भी जाना जाता है। ये भारत से उस देश में आकर बसे लोगों की संतानें नहीं हैं, अपितु यहाँ के मूल निवासी हैं, जिन्होंने सैकड़ों वर्ष पहले बौद्ध या हिंदू धर्म को अपनाया था। इंडोनेशिया के दूसरे प्रमुख द्वीप जावा, सुमात्रा और बोर्नया इत्यादि हैं। ये मुस्लिम बाहुल्य हैं, किंतु इस भिन्नता के बावजूद वहाँ मुस्लिम, हिंदू, ईसाई और बौद्ध भी आपको मिल जाएँगे। इंडोनेशिया ज्वालामुखियों का देश है। लगभग 400 जाग्रत्, प्रसुप्त एवं शांत ज्वालामुखियों में से कुछ आज भी सक्रिय हैं। कई ज्वालामुखियों में से कुछ में ज्वाला अभी भी निकल रही है।

बाली और सुमात्रा के अतिरिक्त बोर्नियो, कालीमंतन, सुलावेसी तथा इरियन जय पश्चिमी न्यूगिनी भी अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। भारत के साथ इंडोनेशिया के सैकड़ों वर्षों से चले आ रहे सांस्कृतिक संबंधों का प्रमाण यहाँ

की राजभाषा प्रस्तुत करती है। ऐसा बताया जाता है कि यह भाषा मलय और भारतीय भाषाओं के मिश्रण से उत्पन्न हुई। यहाँ की मुख्य मुद्रा रुपया ही है, जो भारत की मुद्रा रुपया से अनुरूपता को दर्शाती है। सांस्कृतिक सामंजस्य का प्रतीक इंडोनेशिया अनेक दृष्टियों से अद्‍भुत एवं निराला है। जावा द्वीप पर स्थित देश का यह प्रमुख बंदरगाह अतीत और वर्तमान की अनेक स्मृतियों को अपने आँचल में समेटे हुए विश्व भर के सैलानियों का मन मोहता है।

इंडोनेशिया के उत्तर में असेह प्रांत है, जिसे लोग 'मक्का के सामनेवाला बरामदा' के नाम से भी पुकारते हैं। यह प्रांत काफी अरसे से इस्लामी परंपराओं से प्रभावित रहा है, यहाँ इंडोनेशिया के पुराने मुस्लिम शासकों की कब्रें भी मौजूद हैं और बेतुरिहमान नामक प्रसिद्ध मस्जिद प्राचीन वास्तुकला की भव्यता के दर्शन कराती है।

इंडोनेशिया का सुमात्रा द्वीप उत्तरी भाग में स्थित वह दर्शनीय स्थल है, जिसमें प्राचीन व परंपरागत शैली में बने भवनों का मशहूर ग्राम हिलसमताना स्थित है। 200 वर्ष पुराना और कबायली संस्कृति की पहचान करानेवाला ग्राम वेमतांग भी यहाँ से निकट ही है तथा विश्व की सबसे ऊँची झील तोबा भी इसी स्थान पर स्थित है। सुमात्रा का दक्षिणी भाग सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है। मुखी नामक इंडोनेशिया की दूसरी बड़ी नदी इस प्रांत की राजधानी पेलेमबाग से होकर प्रवाहित होती है, जो इस नगर को दो भागों में विभाजित करती है तथा यहाँ पर परंपरागत कला और संस्कृति का अनूठा रूप भी देखने को मिलता है।

इस देश का जावा द्वीप अपनी प्राकृतिक सुषमा एवं शांतिपूर्ण वातावरण के लिए प्रसिद्ध है तथा जावा के पश्चिम क्षेत्र में लुप्त हो चुके पक्षियों की शरणस्थली पुलाऊ का भी अपना अहम स्थान है। यहाँ की लोकप्रिय कलाओं में अंगल लंग संगीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसके स्वर बाँस के वाद्य यंत्रों से उभरकर श्रोताओं का मन मोह लेते हैं।

जावा द्वीप विशाल मुस्लिम आबादी का अंचल है। इसका मध्य भाग आज भी कई भव्य मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध मंदिर बोरोबुदुर भी यहीं पर स्थित है, जिसे वास्तुकला का अनुपम उदाहरण

कहा जा सकता है। ग्रंथों में यह उल्लेख मिलता है कि जब रोम में रोमन साम्राज्य के अधिपति के रूप में शार्लमेन को राजमुकुट धारण कराया जा रहा था, तो उन्हीं दिनों दक्षिण-पूर्व एशिया के जावा द्वीप में इस भव्य मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा था। इतिहासकारों का मानना है कि इस मंदिर को आठवीं शताब्दी में बनवाया गया था। पहाड़ों पर स्थित इस मंदिर का निर्माण शालेंद्र वंश के राजाओं ने करवाया था, इसे बनाने में पूरे आठ दशक लगे थे।

इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में एक स्थान योगयकार्ता में स्थित हिंदू मंदिरों में समय-समय पर रामायण और महाभारत की कथाओं का आयोजन किया जाता है और यहाँ बैले नृत्य भी पेश किए जाते हैं। कृष्ण-राधा की झाँकियाँ भी प्रस्तुत की जाती हैं।

बाली के हिंदू देश की एकता और अखंडता बनाए रखने के लिए हमेशा आगे रहते हैं। यहाँ इस्लाम के अनुयायी और हिंदू धर्म के प्रति आस्थावान जन पारस्परिक सामंजस्य, सहिष्णुता और सौहार्द को अपनी साझी विरासत के रूप में सहेजे हुए हैं। बाली निवासियों के पारिवारिक और सामुदायिक जीवन में अनेक परंपरागत रीति-रिवाजों की प्रेरणा का स्रोत हिंदू धर्म ही है।

इंडोनेशिया में मेरी कोशिश रही कि वहाँ के विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संगठनों से मिलूँ और उनसे अधिक-से-अधिक सांस्कृतिक विषयों पर चर्चा करूँ। मुझे मेरे साथ में प्रोटोकॉल का दायित्व निभा रही यूलिया द्वारा बताया गया कि बाली में हिंदू मंदिरों की संख्या लगभग 5 से 6 हजार के बीच है। महिलाओं में धर्म के प्रति आस्था का भाव वहाँ भी भारत के समान ही है, सूर्योदय से पूर्व ही मंदिरों में महिलाओं की लंबी-लंबी कतारें लगनी शुरू हो जाती हैं। प्रात:-सायं मंदिरों में आरतियाँ की जाती हैं तथा हिंदू धर्म के लोग मंदिरों में सत्संग भी करते दिखाई देते हैं।

इंडोनेशिया के योगयकार्ता शहर के इस्लामिक विश्वविद्यालय में नए पुस्तकालय की नींव डालने के लिए खुदाई शुरू की गई तो पता चला कि वहाँ की जमीन ही स्थिर नहीं है। मजदूरों ने सावधानीपूर्वक और अधिक खुदाई की तो एक प्राचीन मंदिर की दीवारें दिखाई दीं। इसके बाद तेज वर्षा

के कारण मंदिर की पृष्ठभूमि और गर्भगृह दिखाई दिया, जहाँ पर भगवान् गणेश की मूर्ति स्थापित थी।

उसके पश्चात् इस स्थान को इंडोनेशिया के पुरातत्त्व विभाग ने अपने संरक्षण में ले लिया, कुछ सप्ताह की खुदाई के बाद पता चला कि यह मंदिर करीब 1000 वर्ष पुराना है। वर्तमान में पुरातत्त्व विभाग ने इसे अमूल्य धरोहर घोषित कर दिया है। पुरातत्त्व विभाग का यह भी मानना है कि यह मंदिर इंडोनेशिया में इस्लाम के प्रवेश से पहले की संस्कृति के बारे में कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान कर सकता है।

वहाँ के पुरातत्त्व से जुड़े लोगों ने बताया कि अभी तक इंडोनेशिया में खुदाई के दौरान कोई साबुत मंदिर नहीं निकला था, लेकिन यह पहला मंदिर है, जो कि अपनी वास्तविक स्थिति में है। पुरातत्त्व विभाग के डॉ. बुद्धि सानकोयो के अनुसार यह एक महत्त्वपूर्ण खोज है, क्योंकि यह मंदिर अभी भी अपनी मूल स्थिति में है और साथ ही सभी मूर्तियाँ भी अपने मूल स्थान पर सुरक्षित हैं।

अब पुन: खुदाई के पश्चात् इस स्थान पर गणेश की मूर्ति के अलावा शिवलिंग, नंदी बैल और कई अन्य मूर्तियाँ भी मिली हैं। डॉ. बुद्धि का मानना है कि 10वीं सदी में किसी ज्वालामुखी के फटने से यह मंदिर उसके लावे में दब गया होगा और उसी लावे की वजह से इतने वर्षों के बाद भी यह सुरक्षित रह पाया है।

मंदिर की खुदाई और संरक्षण का कार्य चलता रहता है। इंडोनेशिया की संस्कृति विभाग की निदेशक तथा स्वयं योगयकार्ता से भी बताया गया कि उनके पास हर जगह से पर्याप्त सबूत हैं कि इंडोनेशिया द्वीपसमूह 7वीं शताब्दी से एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक क्षेत्र रहा है। यहाँ के शासक पश्चिमी देशों के साथ व्यापार-व्यवहार करते थे, 7वीं से 10वीं शताब्दी के बीच वे हिंदू और बौद्ध धर्म के संपर्क में आए। श्री विजय राजशाही ने चीन और भारत के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए थे और धीरे-धीरे भारतीय सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक प्रभाव इंडोनेशिया पर छाने लगा और कालांतर में

हिंदू और बौद्ध राज्यों का उत्कर्ष हुआ।

संपूर्ण विश्व के सभी धर्मों को एक समान महत्त्व देनेवाले इंडोनेशिया का इतिहास हिंदू और बौद्ध धर्म से सबसे ज्यादा प्रभावित दिखाई देता है। सातवीं सदी में श्रीविजय साम्राज्य के शासनकाल में हिंदू और बौद्ध धर्मों का इस देश में उदय तो हुआ, लेकिन आठवीं व दसवीं सदी के बीच शैलेंद्र तथा मातारात शासकों के समय में इन धर्मों का सबसे ज्यादा प्रचार-प्रसार हुआ।

सैकड़ों साल पुरानी मुर्तियाँ

हिंदू धर्म से प्रभावित होकर इंडोनेशिया में बोदोबुदुर और प्रम्बानन मंदिरों का निर्माण हुआ। हालाँकि इन दोनों मंदिरों के अलावा इस देश के प्रत्येक भाग में कई प्राचीन हिंदू और बौद्ध मंदिर बने हुए हैं, सिर्फ इंडोनेशिया की राजधानी बाली में ही 17 हिंदू देवी-देवताओं के मंदिर स्थापित हैं, जिसमें कि इंडोनेशिया का सबसे विशाल चौदहवीं सदी में बना 'बेसैरव का माता' हिंदू मंदिर शामिल है। इसके अलावा महत्त्वपूर्ण मंदिरों में पुरा उलुंदनुब्रतन (1663 में बना शिव मंदिर), गोवा गजह (11वीं सदी में बना हिंदू शिव मंदिर), तन्हा लोट (15वीं सदी में बना यात्री मंदिर) और 926 ए.डी. में बना तीर्थ एम्पुल मंदिर आते हैं।

बाली की भाषा में 'पुरा' का मतलब मंदिर होता है। अक्तूबर 2012 में हुए इंडोनेशिया के पुरातत्त्व विभाग के सर्वेक्षण में दावा किया गया था कि बाली द्वीप पर चौदहवीं सदी के सबसे विशाल और पुराने हिंदू मंदिर को खोज निकाला गया है। स्थानीय पुरातत्त्वविदों ने बताया कि पूर्वी देन्पस के नदी बेसिन में हो रही खुदाई के दौरान जमीन से तीन फीट नीचे उन्हें एक

विशालकाय पत्थर मिला, आगे हुई खुदाई में यह पाया गया कि यह वास्तव में मंदिर की ही आधारशिला थी।

ऐसे ही पत्थर भारी संख्या में मिले, जो यह प्रमाणित करते हैं कि चौदहवीं सदी में यहाँ बड़ी संख्या में मंदिरों का निर्माण हुआ था। इंडोनेशिया के मंदिरों में सबसे ज्यादा रामायण का प्रभाव देखने को मिलता है। प्रम्बानन के मंदिर में रावण द्वारा सीता हरण तथा सीता को बचाने की कोशिश में हुए रावण-जटायु संघर्ष की कहानी देखी जा सकती है। सन् 1986 में गिन्या क्षेत्र में हुई खुदाई में वासा मंदिर सामने आया था, जो कि 11 मीटर लंबा और लगभग 11 मीटर चौड़ा है। सन् 2010 तक इंडोनेशिया के पुरातत्त्वविद् गिन्या में 16 और मंदिरों को ढूँढ़ने में कामयाब हुए, जो कि जमीन के नीचे दबे हुए थे।

एक ओर बाली, जो देश भर के हिंदुओं के लिए प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, वहीं दूसरी ओर विश्व का सबसे बड़ा मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र भी है। बाली के अलावा जावा में भी हिंदू धर्म के प्रभाव को बड़ी आसानी से समझा जा सकता है। जावा द्वीप पर पंद्रह बड़े हिंदू मंदिर हैं, जिनमें प्रम्बानन और बोरोबुदुर मुख्य हैं। दूसरे प्रमुख मंदिरों में 750 ई.सी. में निर्मित 'देंग मंदिर', पंद्रहवीं सदी में बना 'सको मंदिर', सिंघसरी साम्राज्य के दौरान 1248 में बना 'किदाल मंदिर', जन्म से पहले जीवन को दरशाता पंद्रहवीं सदी में बना 'सुख मंदिर' और पंद्रहवीं सदी के दौरान बना 'पनरतन मंदिर' शामिल हैं। इन मंदिरों की विशेषता इतनी अद्वितीय है कि इन्हें यूनेस्को द्वारा सांस्कृतिक विरासत की श्रेणी में शामिल किया गया है।

नंदी की यह मूर्ति दूसरी मूर्तियों से बहुत भिन्न है, जो कि दूसरी मूर्तियों की तरह चौड़ी नहीं है। इनके अलावा, उत्तरी सुमात्रा में सात हिंदू मंदिर खोजे गए हैं और राजधानी जकार्ता में भी तीन विशालकाय हिंदू मंदिर स्थापित हैं। इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि इंडोनेशिया भले ही एक मुस्लिम देश है, लेकिन वहाँ की संस्कृति और सभ्यता में आज भी हिंदू धर्म का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि इंडोनेशिया पूरे विश्व में सांस्कृतिक विविधता और हिंदू-मुस्लिम एकता का अद्वितीय उदाहरण है।

इंडोनेशिया में हिंदू परंपरा के अनेक प्रसिद्ध मंदिर हैं, जिनका यहाँ के लोगों के लिए बड़ा महत्त्व है। भव्य एवं सुंदरता लिये हुए विभिन्न देवी-देवताओं के ये मंदिर विश्व के सबसे सुंदरतम मंदिरों में गिने जाते हैं।

भगवान् विष्णु को समर्पित तनह लोट मंदिर बाली में एक विशाल समुद्री चट्टान पर निर्मित है तथा प्राकृतिक सुंदरता के लिए विश्वप्रसिद्ध है। ऐतिहासिक कथानुसार सोलहवीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर अपनी खूबसूरती तथा वैभवता के कारण इंडोनेशिया के मुख्य आकर्षणों में से एक है, जिसमें कि विधिवत् पूजा-अर्चना की जाती है तथा इसे बाली द्वीप के हिंदुओं की आस्था का बड़ा केंद्र माना जाता है।

माँ देवी सरस्वती को समर्पित पूरा तमन सरस्वती मंदिर बाली के उबुद स्थान पर स्थित है, जिस प्रकार भारत में हिंदू धर्म के अनुसार माँ सरस्वती को विद्या, ज्ञान तथा संगीत की देवी माना जाता है, उसी प्रकार इंडोनेशिया में भी माँ सरस्वती की अर्चना ज्ञान और विद्या की देवी के रूप में की जाती है। इस मंदिर परिसर में एक सुंदर कुंड भी निर्मित है, जो कि मुख्य आकर्षण का केंद्र है, प्रतिदिन यहाँ पर पूजा-अर्चना के साथ-साथ संगीत जैसे कार्यक्रमों का आयोजन भी होता रहता है।

बाली का पूरा बेसकिह मंदिर बाली द्वीप के माउंट अंगुग में स्थित प्राकृतिक छटा के मध्य स्थापित इंडोनेशिया का सबसे सुंदर मंदिर बताया जाता है। यह बाली का बहुत बड़ा तथा पवित्र मंदिर भी कहलाता है। बाली के मंदिरों की विशेष श्रेणी में शामिल किया गया यह मंदिर 1995 से विश्व धरोहर भी घोषित है। कई देवी-देवताओं की मूर्तियों से घिरे इस मंदिर में नियमित पूजा-अर्चना का प्रावधान है।

भगवान् शिव को समर्पित सिंधसरी शिव मंदिर तेरहवीं शताब्दी में निर्मित पूर्वी जावा के सिंगोसरी प्रांत में स्थित है। संपूर्ण विश्व में अपनी सुंदरता तथा भव्यता के लिए प्रसिद्ध यह मंदिर वास्तुशिल्प का भी अच्छा उदाहरण है, यहाँ पर भोले शंकर महाशिव की एक विशाल मूर्ति स्थित है, जहाँ प्रतिदिन बड़ी संख्या में शिवभक्त आशीर्वाद लेने पधारते हैं। शिवजी के सभी त्योहार यहाँ पर

जोशोखरोश तथा धूमधाम से मनाने का चलन है।

ऐसा नहीं है कि इंडोनेशिया के लोगों को अन्य धार्मिक ग्रंथों, जैसे कि वेद, पुराण, संहिताओं और उपनिषदों के बारे में पता नहीं है, परंतु रामायण, महाभारत और गीता पर जितनी आस्था वहाँ के लोगों में है, उससे मुझे ऐसा लगता है कि निश्चित ही भारत से गए लोग अपने साथ रामायण, महाभारत और गीता वहाँ ले गए होंगे। मॉरीशस में भी यही कुछ हुआ। इंडोनेशिया का सबसे बड़ा तथा विशाल हिंदू प्रम्बानन मंदिर मध्य जावा में स्थित है, मुख्य रूप से भगवान् विष्णु, भगवान् ब्रह्मा तथा भगवान् शिव को समर्पित यह मंदिर भी 'यूनेस्को' की विश्व धरोहर की श्रेणी में शामिल है। विश्व में यह प्रम्बानन मंदिर अहम भूमिका निभाता है, इस मंदिर में इन त्रिदेवों के साथ-साथ इनके वर्णित वाहनों के भी अलग से मंदिर बनाए गए हैं, यहाँ पर भी विधिवत् पूजा-अर्चना का प्रावधान है।

हिंदुस्तान के दो महाग्रंथ महाभारत तथा रामायण का संपूर्ण इंडोनेशिया में गहरा प्रभाव है। यहाँ के लोगों की मानसिकता के साथ-साथ, रग-रग में इन महाकाव्यों के पात्र बसे हुए हैं। रामायण तथा महाभारत का बड़ी ही खूबसूरती तथा सुंदर सज्जा-शृंगार के साथ न सिर्फ यहाँ पर नियमित तौर पर मंचन किया जाता है, बल्कि लोग इनके पात्रों को आम जीवन में जिया भी करते हैं। यह कहना कतई भी अनुचित न होगा कि जिस बेहतरता से इन महाग्रंथों का इंडोनेशिया में मंचन होता है, उतना तो शायद भारत में भी न होता हो।

मुझे इंडोनेशिया के लोगों ने बताया कि वे महाभारतकालीन स्थानों को देखना चाहते हैं तथा उनका भारत के विभिन्न स्थानों में आने का मन है, जो कि रामायण और महाभारत से जुड़ी हैं। बाली के लोग महाभारत काल के युद्धस्थल, जो कि भारत के हरियाणा राज्य के कुरुक्षेत्र नामक स्थान में कहा गया है, उसे देख पाने के लिए हमेशा उत्साहित रहते हैं। भारत आने पर बाली के लोगों में पावन गंगा में पवित्र स्नान करने की प्रबल इच्छा तथा शिव भोलेनाथ के मंदिरों के दर्शनों की अभिलाषा पहली प्राथमिकता रहती है। उन्हें यहाँ आने से अपनत्व के भाव की प्राप्ति होती है और यहाँ के भक्तिमय

वातावरण में अपने देश का प्रतिबिंब नजर आता है।

जैसे ही मैं सिंगापुर हवाई अड्डे पर उतरा, तो फिर योगयकार्ता के हवाई अड्डे पर मैंने इंडोनेशिया एयर लाइंस के जहाजों पर गरुड़ देखा तो मन में प्रसन्नता हुई। इंडोनेशिया पहुँचने पर हमें चारों ओर भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है, सर्वप्रथम वायुयान से उतरते ही आपको यान पर गरुड़ पक्षी चिह्न के रूप में दिखाई देगा, जिसको देखकर आपके मन-मस्तिष्क में रामायण काल में रावण द्वारा सीता हरण के दौरान मध्य मार्ग में गरुड़ पक्षी द्वारा उनके बचाव की कहानी तैरने लगेगी। इंडोनेशियन एयरलाइंस का प्रतीक चिह्न गरुड़ ही है, साथ ही गरुड़ इंडोनेशिया का राष्ट्रीय प्रतीक भी है। मुस्लिम राष्ट्र होने के बावजूद इंडोनेशिया की संस्कृति भारतीय रंग-रूप में पूरी तरह ढली हुई है।

भारतीय महाकाव्य रामायण का इंडोनेशिया के जन-जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव है, यहाँ की संस्कृति रामायण के प्रति पारंपरिक आस्था से जुड़ी हुई है। रामायण यहाँ पर इतनी प्रसिद्ध है कि वर्ष भर यहाँ पर रामायण का मंचन होता रहता है। इंडोनेशिया का भ्रमण करने पर आपको कई इलाकों में रामायण काल के अवशेष और रामकथा की नक्काशीदार शिलाएँ भी मिल जाएँगी। आदिकवि ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित भारतीय रामायण, जो कि संस्कृत भाषा में लिखी गई थी, भारत में इसी रामायण का पाठ होता है तथा इसी को मान्यता भी प्राप्त है, जबकि इंडोनेशिया में प्रचलित रामायण वहाँ के कवि योगेश्वर द्वारा लिखित है, जो कि वहाँ पर मान्यता प्राप्त है।

जकार्ता खूबसूरत शहर है। विश्व भर से जकार्ता, जो कि इंडोनेशिया की राजधानी है, यहाँ पर पहुँचनेवाले देशी-विदेशी यात्री उत्तर-पश्चिमी तट पर शहर के बीचोबीच स्थित अनेक अश्वों द्वारा खींचे जानेवाले और श्रीकृष्ण तथा अर्जुन की प्रतिमावाले रथ को देखकर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकते। इंडोनेशिया में वैसे तो अनेक मंदिर हैं, परंतु पाँच बड़े विश्व प्रसिद्ध हिंदू मंदिर बड़ी खूबसूरती के साथ निर्मित हैं, जिनमें आपको हिंदू स्थापत्य कला के दर्शन होते हैं। श्रीराम तथा कई अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और

मंदिर यहाँ पर आसानी से देखने को मिल जाते हैं।

कई बार मैं महसूस करता हूँ कि इंडोनेशिया की मुद्रा या नोट पर भगवान् श्री गणेशजी का चित्र छपा हुआ दिखाई देता है, मगर भारत में गणेशजी का चित्र लगाया जाए, तो बिना बात की बहस हो जाती। श्री गणेशजी को कला, विज्ञान तथा ज्ञान के देवता के रूप में पूजा जाता है।

इन सभी तथ्यों को देखें तो यह साफ हो जाता है कि भारतीय संस्कृति कहीं-न-कहीं इंडोनेशिया को भारत से जोड़ने में अहम भूमिका निभा रही है।

रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के दो महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं और यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि ये दोनों ग्रंथ मॉरीशस के जीवन के अभिन्न अंग हैं तथा लोग इनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं। इन दोनों अमर ग्रंथों से भारत और इंडोनेशिया को और करीब आने में मदद मिलेगी। देश-दुनिया में इनके मंचन से लोगों की दिलचस्पी आवश्यक रूप से भारत-इंडोनेशिया की ओर होगी, जो दोनों राष्ट्रों के लिए श्रेयस्कर है।

□

इंडोनेशिया में व्याख्यान

सर्जनवीयता में इंडोनेशिया
अंग्रेजी विश्वविद्यालय एवं कला विभाग में अभिभाषण

मित्रो, सर्वप्रथम मैं आप सबका अभिवादन करना चाहता हूँ, मैं देवभूमि हिमालय से आया हूँ। मैं गंगा के प्रदेश से आया हूँ और मैं गिरिराज हिमालय के क्षेत्र से आकर आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। योग एवं अध्यात्म की वैश्विक राजधानी से, मैं भारत के लोगों का प्रेम, सद्भाव एवं आत्मीयता का संदेश लेकर आपके सम्मुख आया हूँ।

मित्रो, आज हम वैश्विक समस्याओं का अवलोकन करें तो पाएँगे कि सर्वत्र लोग भुखमरी, गरीबी, अशिक्षा, प्रदूषण, आतंकवाद, असमानता, शोषण, संसाधनों का दुरुपयोग तथा बेरोजगारी के कारण त्रस्त व दुःखी हैं।

भारत हो, इंडोनेशिया हो या यहाँ तक कि विकसित राष्ट्र हों, कहीं-न-

सर्जनवीयता : संस्कृति शिक्षा विश्वविद्यालय का अनूठा संगम

कहीं सभी राष्ट्र इन समस्याओं से जूझ रहे हैं तथा संघर्ष कर रहे हैं। लोग हिंसा के शिकार हैं, चारों ओर बेरोजगारी, भुखमरी तथा निराशा का वातावरण बना हुआ है।

मैं समझता हूँ कि इनमें से अधिकांश समस्याओं का सृजन हमने स्वयं किया है। हमारी संस्कृति, हमारी विरासत, हमारे वेद, पुराण, उपनिषद्, हमारी ऋचाएँ एवं हमारे धर्मग्रंथ सब इस बात को इंगित करते हैं कि ईश्वर और प्रकृति ने हम सबको अपनी अनमोल रचना पृथ्वी दी है, जो नित नए रंगों में खेलती नजर आती है।

आप सभी प्राध्यापक हैं, शोध छात्र हैं, विद्यार्थी हैं और समाज के बुद्धिजीवी वर्ग हैं। आप इस बात को भलीभाँति समझ सकते हैं कि ईश्वर ने हमें सभी योनियों में श्रेष्ठ मानव का जीवन दिया है तथा हम स्वविवेक से निर्णय लेने में सक्षम हैं। हमारी संस्कृति ने हमें सिखाया है कि हम संपूर्ण मानव जाति को अपना परिवार मानें और प्रेमपूर्वक आचरण करें। हमारा धर्म एवं हमारी संस्कृति हमें जीवन का ढंग ही नहीं सिखाती है, बल्कि विश्व कल्याण की राह पर अग्रसर होकर मोक्ष प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त कराते हैं।

साथियो,

विश्व की सभी संस्कृतियों में भारत की संस्कृति न केवल प्राचीनतम है, बल्कि सर्वश्रेष्ठ और जीवंत भी है। अमर भारतीय सभ्यता और अनूठी संस्कृति अहर्निश निष्काम भाव से मानव मात्र के कल्याण के लिए समर्पित ऋषि परंपरा का ईमानदारी से निवर्हन करना है।

कहा भी गया है कि 'शरीरमांध खलु धर्मसाधनम्', अर्थात् शरीर धर्म पालन करने का प्रथम साधन है। स्वस्थ शरीर से ही मानव अपना जीवन विधिवत् चला सकता है और धर्म कार्य में तत्पर हो सकता है, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्राचीन चिकित्सा स्वास्थ्य शाश्वत परंपरा आयुर्वेद है और इसका प्रादुर्भाव भी हिमालय से हुआ है। हिमालय के बगैर हमारी संस्कृति एवं सभ्यता की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए

प्रिय विद्यार्थियो,

संस्कृत में मनुष्य जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कर जीवन-मरण के चक्र से स्वयं को मुक्त करते हुए प्रभु को प्राप्त करना है। इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि व उपलब्धि की वास्तविक आधारशिला स्वस्थ शरीर व स्वस्थ मन-मस्तिष्क ही है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का मूल स्रोत तथा मूल आधार वेद है और वेदों का उद्भव ही हिमालय से हुआ है।

भारत और इंडोनेशिया युग-युगांतर से एक-दूसरे से बँधे हुए हैं। इन्हीं संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हुए इंडोनेशिया के प्रथम प्रधानमंत्री ने 1950 में भारत और इंडोनेशिया के लोगों को हजार वर्ष पुराने संबंधों को सुदृढ़ करने का आह्वान किया और कहा कि इस संबंध में उपनिवेशवादी शक्तियों द्वारा विघ्न डाला गया था।

यह हमारे उन प्रगाढ़ संबंधों की बदौलत है कि आज इंडोनेशिया में

बॉलीवुड बहुत ही लोकप्रिय है। योग, भारतीय नृत्य एवं हमारी परंपराओं का हमेशा बेहतर और सजीव चित्रण आज भी देखा जा सकता है। मित्रो! हमारी भाषा, हमारी कलाएँ, हमारी धर्म-संस्कृति एवं साझी विरासत हमें एक-दूसरे से जोड़ती है। सास-बहू की नोक-झोंक अगर हिंदुस्तान बॉक्स ऑफिस में हिट है तो इंडोनेशिया में भी यह लोकप्रिय है। भारतीय सिने जगत् के कलाकारों की लोकप्रियता इंडोनेशिया में काफी अधिक है। चाहे 60, 70 के दशक के अभिनेता-अभिनेत्री हों या आज की युवा पीढ़ी के कलाकार, इंडोनेशिया की एक बहुत बड़ी आबादी भारतीय फिल्मी जगत् के अपने पसंदीदा अभिनेता/अभिनेत्री की फिल्मों के आने की प्रतीक्षा उसी प्रकार करती है, जैसे हम भारतीय। यह इस बात को महसूस करने के लिए पर्याप्त है कि मिली-जुली संस्कृति, परंपराओं और विचारों के कारण ही यह संभव हो पाता है।

संस्कृति के अनुसार हम कर्म-प्रधान समाज हैं, हम पुरुषार्थ को महत्त्व देते हैं। मनुष्य यदि सत्कर्म और परिश्रम करे तो कई समस्याओं का समाधान स्वयं ही हो जाएगा। सत्कर्म की महानता हमारी संस्कृति का मुख्य अंग है।

यथा धेनु सहस्रोषु
वत्सो गच्छति मातरम्
तथा यच्च कृं कर्म
कर्तार मनुगच्छति।।

अर्थात् सृष्टि का विधान है कि मनुष्य जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल भोगेगा। सहस्र गायों में जिस प्रकार बछड़ा अपनी माँ को पहचानता है, उसी तरह कर्म अपने कर्ता को ढूँढ़ लेता है। कुल मिलाकर उसका कर्मफल उसके कर्मों के साथ बँधा होता है।

देवियो और सज्जनो! यह हमारी विशिष्टता है कि हम समूचे समाज और समुदाय को साथ लेने की बात करते हैं। हमारी संस्कृति हमारे भीतर, 'मैं' शब्द पनपने नहीं देती। 'हम' का भाव और सबका कल्याण हमारा मूल लक्ष्य है। इसी संदर्भ में मैंने अपनी कविता के माध्यम से भी यह कहने का प्रयास किया है। मेरी कविता 'दुनिया को बदल दिया' की निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

केवल और केवल
हम अपने को ही
मनुष्य बनाने का प्रयत्न तो करें,
हम ईश्वर
की संतानें हैं
किसी भी कुतर्क के
मन में आने से पहले
भगवान् से तो डरें।
और यदि
भगवान् को साक्षी मानकर
अपने आप में बदलाव किया,
तो समझो कि
अब तुमने
पूरी दुनिया को बदल दिया।

मित्रो, प्रिय विद्यार्थियो, भारत की संस्कृति ने संपूर्ण विश्व में विश्वबंधुत्व, सामाजिक समता एवं सहिष्णुता का संदेश दिया है। हमने पूरे विश्व को परिवार की परिभाषा देकर पाश्चात्य देशों के 'बाजार की अवधारणा' को पीछे छोड़ा है। हमने विदेशी आक्रांताओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार किया।

हम सामाजिक, आर्थिक, आत्मिक, भौतिक और आध्यात्मिक रूप से 'सबका साथ सबका विकास' चाहते हैं। सबके कल्याण में ही हमारा कल्याण निहित है।

प्रिय विद्यार्थियो,

इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व परिदृश्य में भारत की सभ्यता, संस्कृति, चिंतन और अध्यात्म भारत को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने में सक्षम हैं, क्योंकि हमारा तो एक ही चिंतन है कि हम किसी भी देश, जाति एवं धर्म

से पहले इस पृथ्वी की संतान हैं। पृथ्वी हमारी माँ है और प्रकृति का संरक्षण हमारी प्रकृति।

चाहे गीता हो, रामायण हो या अन्य कोई धर्मशास्त्र, सभी में हर तरह की आसक्ति से रहित होकर केवल ईश्वर के लिए कर्म करने की प्रेरणा दी गई है। गीता में कहा भी गया है कि 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:' अर्थात् फल की चिंता न करके कर्म करते जाओ।

सुख-समृद्धि की परिकल्पना अध्यात्म से ही संभव

आज विश्व को प्रगति के साथ-साथ सुख व शांति की खोज की अति आवश्यकता है। भौतिकता के निरंतर प्रसार से मानव जीवन अव्यवस्थित होता जा रहा है। इसके लिए केवल भारत की धरती से निकला योग-रहस्य हमारे तन व मन को व्यवस्थित करने में सक्षम है।

विश्व के प्रत्येक मानव, जीव-जंतु तथा प्रकृति की सुख व समृद्धि की परिकल्पना इस देश के अध्यात्म में ही समाहित है।

हमारे रीत-गीत और संगीत में विश्व कल्याण और शांति रचती-बसती है। भारत और इंडोनेशिया रामायण तथा गीता को मानते हैं, जो कि विश्व

मिलकर सुख-शांति की खोज : मुख्य व्याख्यान

कल्याण के स्रोत एवं प्रतीक हैं।

भारत-इंडोनेशिया, दोनों देशों को प्रदूषण की गंभीरता का आभास सदैव से ही रहा है तथा प्रकृति पूजा जीवन का अभिन्न अंग है। प्रकृति-पूजा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्त्वपूर्ण संदेश व संरक्षण है।

प्रकृति की गोद में ही भारत ने जीवनदायिनी जड़ी-बूटियों को खोजकर आयुर्वेद का विस्तार किया। विश्व कल्याण के लिए आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार संपूर्ण विश्व में निरंतर किया जा रहा है। प्यारे विद्यार्थियो, मैं आपको विशेष रूप से बताना चाहता हूँ कि भारत और इंडोनेशिया, दोनों की सभ्यता एवं संस्कृति विश्व को एक परिवार के रूप में स्वीकारती है। हमारा चिंतन संपूर्ण विश्व कल्याण की परिकल्पना करता है। हमारी साझी विरासत मानव कल्याण हेतु वर्तमान विश्व परिदृश्य में जनमानस को वास्तविक दिशा-निर्देश प्रदान करती है।

देवियो, सज्जनो, प्रिय विद्यार्थियो,

अंत में यही कहना चाहूँगा कि हमें एक लंबा सफर तय करना है। संघर्ष अभी भी जारी है।

अभी भी जंग जारी,
वेदना सोई नहीं है।
मनुजता होगी धरा पर,
संवेदना खोई नहीं है।।
कह रहा हूँ ये वतन
तुझसे बड़ा कोई नहीं है।

हम सभी को अपने राष्ट्र-धर्म का निर्वाह करते हुए तथा मानवता को बचाने के लिए स्वयं को पूर्णतः समर्पित करने की आवश्यकता है। अंत में, मैं ईश्वर से आपके सुखद भविष्य की कामना करता हूँ।

□

इंडोनेशिया में व्याख्यान

—16 सितंबर, 2017

पुण्य भूमि भारत के हिमालय से

गुरुदेव रवींद्रनाथ की ऐतिहासिक इंडोनेशिया यात्रा की 90वीं वर्षगाँठ पर आयोजित इस सेमिनार/कार्यशाला में आज के प्रथम व्याख्यान में मुझे बोलने का अवसर देने पर आपका हार्दिक आभार, धन्यवाद। सर्वप्रथम, मैं पुण्य भूमि भारत के हिमालय क्षेत्र से आप सबका अभिवादन करता हूँ। भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान

को संरक्षित और पोषित करनेवाली इंडोनेशिया की धरती तथा यहाँ के संस्कृति अनुरागी लोगों को प्रणाम करता हूँ। भारत सरकार, इंडोनेशिया सरकार तथा सर्जनवीयता विश्वविद्यालय के प्रति मैं अपना विशेष धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण सेमिनार में मुझे आमंत्रित किया।

अध्यक्ष महोदय! देवियो और सज्जनो! विश्व की सभी संस्कृतियों में भारत की संस्कृति न केवल प्राचीनतम है, बल्कि सर्वश्रेष्ठ और अत्यंत जीवंत है। मैं भारतीय सभ्यता और अनूठी संस्कृति के जन्मस्थल हिमालय से यहाँ आया हूँ। जैसा कि सर्वविदित है कि अहर्निश निष्काम भाव से मानव मात्र के कल्याण के लिए ऋषि परंपरा का उद्गम स्थल भी यही हिमालय है, 100 करोड़ से अधिक लोगों का भरण-पोषण करता यह वाटर टावर हिमालय, धर्म और आध्यात्मिकता का केंद्र है। चारों पुरुषार्थों की सिद्धि व उपलब्धि की वास्तविक आधारशिला स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन एवं स्वस्थ मस्तिष्क है। कहा भी गया है कि 'शरीरमाद्यम् खलु धर्मसाधनम्', स्वस्थ शरीर से ही मानव अपना जीवन विधिवत् चला सकता है और धर्म कार्य में तत्पर हो सकता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्राचीन चिकित्सा स्वास्थ्य शाश्वत परंपरा आयुर्वेद है और इसका प्रादुर्भाव हिमालय से हुआ है। हिमालय के बगैर हमारी संस्कृति एवं सभ्यता की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

भारतीय संस्कृति का सर्वोपरि उद्देश्य

जैसा कि आप सभी महानुभाव जानते हैं कि भारतीय संस्कृति में मनुष्य जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कर आत्मोन्नति करते हुए जीवन-मरण के चक्र से स्वयं को मुक्त कर प्रभु को प्राप्त करना है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का मूल स्रोत तथा मूल आधार वेद हैं और वेदों का उद्भव भी हिमालय से हुआ है। मित्रो, मैं उसी देवभूमि से आया हूँ, मैं पतितपावनी गंगा, यमुना के प्रदेश से हूँ। विश्व की योग, अध्यात्म की राजधानी ऋषिकेश-हरिद्वार से मैं भारत के लोगों का सद्भाव, उनकी शुभकामनाएँ और उनका प्रेम आप तक पहुँचाने

प्रश्नोत्तर काल की आधारशिला

आया हूँ। मित्रो, जैसा कि आप जानते हैं, भारत और इंडोनेशिया युग-युगांतर से एक-दूसरे से बँधे रहे हैं। इन्हीं संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हुए इंडोनेशिया के प्रथम प्रधानमंत्री ने 1950 में भारत और इंडोनेशिया के लोगों को हजार वर्ष पुराने संबंधों को सुदृढ़ करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इस संबंध में उपनिवेशवादी शक्तियों द्वारा विघ्न डाला गया। यह हमारी उन प्रगाढ़ संबंधों की बदौलत है कि आज इंडोनेशया में बॉलीवुड बहुत लोकप्रिय है। योग, भारतीय नृत्य एवं भारतीय परंपराओं का हमेशा बेहतर और सजीव चित्रण आज भी देखा जा सकता है। यहाँ पर बड़ी संख्या में हमारे युवा साथी मौजूद हैं।

मुझे खुशी है कि बॉलीवुड ने आपको भारत के साथ जोड़ रखा है। मित्रो, हमारी भाषा, हमारी कलाएँ, हमारा धर्म, हमारी संस्कृति एवं साझी विरासत हमें जोड़ती है।

गुरुदेव की ऐतिहासिक यात्रा का ध्येय

अध्यक्ष महोदय, आज हम भारत एवं बाँग्लादेश के राष्ट्रगान के रचयिता

गुरुदेव रवींद्रनाथ की इंडोनेशिया यात्रा की 90वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। मन में स्वत: ही प्रश्न उठता है कि इस ऐतिहासिक यात्रा का क्या लक्ष्य था और इसकी क्या उपलब्धि रही? वर्ष 1927 में अगस्त-सितंबर के दौरान गुरुदेव रवींद्र ने बाली, इंडोनेशिया की यात्रा की। आपके मन में अवश्य प्रश्न होगा कि गुरुदेव की इंडोनेशिया यात्रा का ध्येय क्या था?

गुरुदेव ने दो कारणों से यह यात्रा की, सर्वप्रथम वे यहाँ पर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के जीवंत दर्शन करना चाहते थे, वास्तविकता में वे इंडोनेशिया में भारत को खोजना चाहते थे। उन्होंने अपनी 1927 की यात्रा को तीर्थयात्रा की संज्ञा देते हुए कहा था और मैं उद्धरित करता हूँ, "भारत की मौजूदा राजनीतिक सीमा के बाहर मैं तीर्थयात्रा पर जा रहा हूँ।" जावा डायरी में इंडोनेशिया यात्रा के बारे में उन्होंने कहा, "भारत ने सूखा उपदेश नहीं दिया, बल्कि मानव के भीतर छिपी निधि को चित्रकला, संगीत, मूर्तिकला, साहित्य और स्थापत्य कला के माध्यम से उद्घाटित किया।"

दूसरा, वे चाहते थे कि भारत-इंडोनेशिया के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिल सके। दरअसल शांतिनिकेतन के माध्यम से गुरुदेव दोनों देशों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान के प्रबल पक्षधर हैं, क्योंकि गुरुदेव को यह बात भलीभाँति से ज्ञात थी कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक संबंधों की डोर से बँधे ये दोनों राष्ट्र मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर की यात्रा को समझने के लिए खुद इंडोनेशिया की यात्रा करना आवश्यक है। गुरुदेव ने महसूस किया कि इंडोनेशिया के नृत्य यहाँ की प्राकृतिक भाषा हैं और इसे उन्होंने लिखा है।

परंपराओं के प्रति समर्पण तथा कला के प्रति गहरे झुकाव ने गुरुदेव के मानस पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। रवींद्रनाथ टैगोर ने 21 पत्रों एवं पाँच कविताओं के माध्यम से अपनी सफल इंडोनेशिया यात्रा का वर्णन किया। आप में से शायद कम ही लोगों को पता होगा कि इन कविताओं में 'बाली' और 'सागरिका' नामक कविता अत्यंत प्रसिद्ध हुई।

भारत-इंडोनेशिया का जन्म-जन्मांतर का संबंध

यहाँ पर शिक्षा से जुड़े लोग हैं, आप सभी बुद्धिजीवी हैं, समाज का नेतृत्व करते हैं। हम जानते हैं कि युगों से हम एक-दूसरे के करीब रहे हैं। जिन रवींद्रनाथ टैगोर की यात्रा की 90वीं वर्षगाँठ हम मना रहे हैं और उन गुरुदेव की कालजयी रचना 'गीतांजलि' की चर्चा आज यहाँ पर हुई है, उसके विषय में मैं आप लोगों को बताना चाहूँगा कि गुरुदेव रवींद्रनाथजी को देवभूमि उत्तराखंड में 'गीतांजलि' लिखने की प्रेरणा मिली।

मैं यहाँ पर सभी भाई-बहनों को बताना चाहता हूँ कि इंडोनेशिया से आज हम जितने सांस्कृतिक रूप से जुड़े हैं, उतने ही सामरिक रूप से जुड़े हैं, क्योंकि विश्व कल्याण, विश्व शांति, समभाव के लिए हमारा दर्शन, चिंतन, विश्व बंधुत्व का भाव एक-सा है। विश्व शांति के लिए हमारी प्रतिबद्धता एक-सी है। हमारा दर्शन, सर्वे संतु निरामया: के आदर्शों पर चलना सिखाता है। हमारा परम ध्येय विश्व कल्याण है और हमने हमेशा दूसरी संस्कृति, दूसरे धर्मों का स्वागत किया है, उन्हें आत्मसात् किया है और हर कहीं पर अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई है। आज सामाजिक कुरीतियों, वैश्विक चुनौतियों से निपटने का रास्ता हमें अपनी अमर संस्कृति में ढूँढ़ना होगा, अपने-अपने आदर्श पुरुषों, धर्मग्रंथों में टटोलना होगा, तभी भारत का कल्याण, इंडोनेशिया का कल्याण और संपूर्ण विश्व का कल्याण संभव है। हम दोनों देश यह संदेश विश्व को सफलतापूर्वक दे सकते हैं।

भाषण उपरांत कुछ विद्यार्थी

देवियो और सज्जनो! मैं आपको बताना चाहूँगा कि मैं उस देवभूमि से आया हूँ, जहाँ रवींद्रनाथ टैगोर को 'गीताजंलि' लिखने की प्रेरणा मिली। 'गीतांजलि' की अमर कविताओं के सृजन का विचार देवात्मा हिमालय की पावन गोद से ही आया। समुद्र तट से 1789 मीटर की ऊँचाई पर स्थित रामगढ़ शांत, एकांत एवं नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण हिल स्टेशन है, जो कि अपने बाग-बगीचों व अपने साधारण मृदुभाषी लोगों के लिए प्रख्यात है। मेरा आप सभी को इस स्थान पर आने के लिए आमंत्रण है। रवींद्रनाथ टैगोरजी इस स्थान को बेहद पसंद करते थे। दिल्ली से लगभग तीन सौ कि.मी. की दूरी पर स्थित यह सुरम्य स्थान नाशपाती, आड़ू, खुमानी, पलम के बगीचों से आच्छादित अनेक साहित्यकार एवं रचनाकारों की पसंदीदा जगह है। इसी परिप्रेक्ष्य में मैं आपके सम्मुख विनम्र निवेदन करना चाहूँगा कि नरेंद्र देव, स्वामी विवेकानंद तब बने, जब उन्होंने आध्यात्मिक और नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण ऊर्जा के पुंज हिमालय से शक्ति अर्जित की। इसी कड़ी में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित मेरी पुस्तक 'हिमालय में स्वामी विवेकानंद' कई भाषा में अनुवादित हो चुकी है। आपको इस बात की प्रसन्नता होगी कि भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से हम भारत के उत्तर हिमालय में गुरुदेव से जुड़ी पुण्य स्थली का उन्नयन कर रहे हैं, ताकि भावी पीढ़ी को इससे प्रेरणा मिल सके। हमारा लक्ष्य है कि देवभूमि उत्तराखंड में भी एक शांतिनिकेतन की स्थापना हो सके। प्रदेश के स्तर पर और राष्ट्रीय स्तर पर हम सब इसके लिए कृत संकल्प हैं।

साझे सांस्कृतिक मूल्यों से विश्व कल्याण एवं शांति

मित्रो, आज की इस महत्त्वपूर्ण कार्यशाला में सबसे महत्त्वपूर्ण बात उभरकर आई है कि हम दोनों देशों की साझी संस्कृति के आधार स्तंभ हैं—त्याग, समरसता, सहिष्णुता, समभाव, समन्वय एवं निरंतर उन्नयन की भावना, जिसमें मानव मात्र के सामाजिक, आर्थिक तथा आत्मिक कल्याण की भावना निहित है। देखा जाए तो विश्व शांति, कल्याण का संपूर्ण मूलमंत्र

इसी में समाहित है। हमारी संस्कृति पूरे संसार को अपना परिवार मानते हुए उसके कल्याण के लिए कृतसंकल्प दिखती है। पूरे विश्व में आपको यह जीवन दर्शन देखने को नहीं मिलेगा। मैं मानता हूँ कि विश्व भौतिक सुख की पराकाष्ठा पर बैठा है, किंतु अंदर से वह खोखला है। चारों तरफ आपाधापी मची हुई है। लोग भागे चले जा रहे हैं। एक ऐसी अर्थहीन दौड़, जिसकी परिणिति हमें गर्त की ओर ले जाती है।

अध्यक्ष महोदय,

हमें इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि ईर्ष्या, अधिक पाने की होड़, विस्तारवादी नीतियाँ, धर्म, जाति, संप्रदाय, राष्ट्रीयता के नाम पर दिन-प्रतिदिन बढ़ता संघर्ष और झूठी श्रेष्ठता सिद्ध करने की मनोवृत्ति ने एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया है, जहाँ हर कोई डरा-सहमा असुरक्षित है। ऐसी विकट परिस्थितियों में शांति की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है, जब हम संपूर्ण भाव से अपने हजारों वर्ष पूर्व के मूल्यों पर ध्यान दें। चाहे वह भगवान् राम हों, चाहे कृष्ण हों, भगवान् बुद्ध हों, महावीर हों, हमारे पैगंबर हों, स्वामी दयानंद सरस्वती हों, विवेकानंद हों, महात्मा गांधी हों, नेल्सन मंडेला हों, मार्टिन लूथर या फिर गुरुदेव और देवनतारा जैसे महापुरुष हों, सभी महात्माओं ने अपनी साझी संस्कृति के अमर मूल्यों को आत्मसात् किया। इन्हीं अमर मूल्यों पर जीवन समर्पित करते हुए इन्होंने न केवल विश्व को नई राह दिखाई, बल्कि मानवता के लिए नए मापदंड भी स्थापित किए। देवियो और सज्जनो, दुनिया की कोई समस्या, कोई चुनौती एवं कोई अवरोध ऐसा नहीं है, जिससे निपटने का रास्ता हमारे साझे सांस्कृतिक मूल्यों में न मिलता हो। मैं इतिहास के पन्ने टटोल रहा था तो मैंने देखा कि पिछले पाँच-छह दशकों में भारत और इंडोनेशिया ने विश्व परिदृश्य में विश्व शांति और कल्याण के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया, जिनमें गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व एवं निरस्त्रीकरण आदि महत्त्वपूर्ण हैं। उपनिवेशवाद के खिलाफ सशक्त आवाज उठाने वाले देशों में भारत-इंडोनेशिया का प्रमुख स्थान है।

मित्रो, विशेषकर सभागार में मेरे युवा साथियो, आज सवेरे आपके विश्वविद्यालय को नजदीक से देखने का सुअवसर मिला, साथ ही हजर देवनतारा का आवास, उनका कार्यालय, उनके चित्र और उनका निजी सामान देखने के बाद यह बात सामने आई कि यह महापुरुष राष्ट्र सेवा, समाज सेवा के लिए सदैव समर्पित रहा। स्वाधीनता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान देते हुए सदैव लोगों के कल्याण की भावना उनके मन में रही।

गहन ऐतिहासिक संबंधों तथा साम्राज्यवाद के साथ मिलकर लड़ने संबंधी अतीत के साझे इतिहास के कारण भारत-इंडोनेशिया के सामरिक साझीदार बनने में निश्चित रूप से मदद मिली है।

यह हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि जहाँ एक ओर व्यापक सामरिक साझेदारी पर सहमति बनी है, वहीं इंडोनेशिया और भारत के शीर्ष उद्योगपतियों को, सहयोग बढ़ाने की दृष्टि से विजन परिपत्र तैयार करने में शामिल किया गया है।

भाइयो-बहनो, यह स्वागत योग्य है कि आज वैश्विक आतंकवाद पर जहाँ राष्ट्रों ने कड़ा स्टैंड लेकर आतंक के वित्तपोषण, साइबर क्राइम, हथियार एवं मानव तस्करी के विरुद्ध कड़े कदम उठाए हैं, वहीं प्राकृतिक आपदा के न्यूनीकरण हेतु संयुक्त प्रयासों पर जोर भी दिया गया है। भारत की तेजी से बढ़ती हुई आर्थिक गतिविधियों में इंडोनेशिया ने गहरी रुचि दिखाई है। डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्टैंडअप इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं में सहयोग हेतु दोनों राष्ट्राध्यक्षों के बीच व्यापक बातचीत हुई है।

कला, साहित्य, संगीत, शिक्षा एवं मानव संसाधन के उन्नयन के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ा है।

देवियो और सज्जनो, आज का यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम इसी शृंखला की एक कड़ी है, जिसमें भारत सरकार और इंडोनेशिया सरकार का संयुक्त सहयोग हम सबको मिलता है। मेरा मानना है कि हमारा परस्पर सहयोग न केवल हमारी आवश्यकता है, बल्कि संपूर्ण विश्व की स्थिरता के लिए जरूरी है।

मित्रो, आज हमारा समाज चुनौतियों से जूझ रहा है। हमें लड़ना है, बेरोजगारी से, गरीबी से, हमें अपने करोड़ों नवयुवकों को सार्थक रोजगार से जोड़ना है। हमें करोड़ों नौनिहालों के सपने को सच करना है, जो वैश्वीकरण के इस युग में उज्ज्वल और बेहतर भविष्य के सपने देखते हुए बड़े हो रहे हैं।

जहाँ हमें अपनी अमूल्य जैव-विविधता की रक्षा करनी है, पर्यावरण को बचाना है, वहीं सतत विकास की अवधारणा को धरातल पर भी उतारना है। हमें अपनी 'अनेकता में एकता' वाली संस्कृति की रक्षा करनी है, उसे पुष्पित व पल्लवित करना है, साथ ही सामाजिक समरसता, सहिष्णुता को बढ़ावा देते हुए उन शक्तियों से लड़ना है, जो जाति, धर्म एवं संप्रदाय के नाम पर हमारे देश को, समाज को विघटन के रास्ते पर ले जा रही हैं और इस सबसे ऊपर हमें अपने पूरे वैश्विक परिवार की चिंता करनी है। उनके कल्याण के लिए प्रयत्न करना है, जो कि हम युग-युगांतर से करते आए हैं।

देवियो और सज्जनो, गुरुदेव रवींद्र की इंडोनिशया की 90वीं वर्षगाँठ मनाते हुए जहाँ हमें भारत-इंडोनेशिया के परस्पर संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने के लिए मंथन करना है, वहीं विश्वबंधुत्व की भावना के अनुरूप संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए अपने आप को समर्पित करना है। इस आशा के साथ कि हम अपने इस अभियान में सफल होंगे, मैं विराम लेता हूँ।

धन्यवाद!

□□□